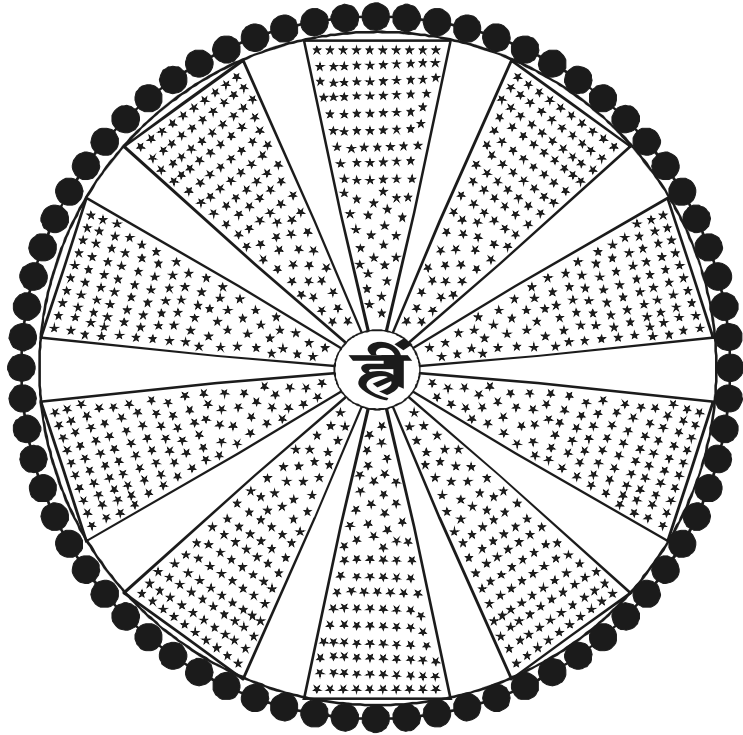


॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

विशद सहस्रनाम महामण्डल विधान



रचयिता : प.पू. आचार्य विशदसागरजी महाराज

कृति - विशद सहस्रनाम महामण्डल विधान

कृतिकार - प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण - प्रथम-2010 प्रतियाँ - 1000

संकलन - मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज

सहयोग - सुखनन्दन

संपादन - ब्र. ज्योति दीदी (9829076085), आस्था, सपना
दीदी

संयोजन - किरण, आरती दीदी • मो.: 9829127533

- प्राप्ति स्थल -
1. जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा,
2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट,
मनिहारों का रास्ता, जयपुर मो.: 9414812008
फोन : 0141-2311551 (घर)
 2. श्री 108 विशद सागर माध्यमिक विद्यालय
बरौदिया कलाँ, जिला-सागर (म.प्र.)
फोन : 07581-274244
 3. विवेक जैन, 2529, मालपुरा हाऊस,
मोतिसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर
फोन : 2503253, मो.: 9414054624
 4. श्री राजेशकुमार जैन ठेकेदार, ए-107, बुध विहार, अलवर
मो.: 9414016566

पुनः प्रकाश हेतु - 51/- रु.

अंतस की भावना

“जे त्रिभुवन में जीव अनन्त, सुख चाहै दुःख तै भयवन्त।”

तीनों लोकों में अनन्तानन्त जीव हैं। जो सुख चाहते हैं और दुःख से घबराते हैं। चारों गतियों में दुःख का कारण चूँकि जीव की अपनी अज्ञानता व मोह है। अतः हम अज्ञानता या मोह से बचें तो संसार के दुःखों से पार हो सकते हैं। इसके लिए एकमात्र उपाय है- जिनेन्द्र पूजन, भक्ति। अर्हत आदि के गुणों में अनुराग करना ‘भक्ति’ है। जिनेन्द्र पूजन गृहस्थ के षट् आवश्यक कार्यों में सर्वप्रथम है। पूजन दो प्रकार की होती है- 1. द्रव्य पूजा, 2. भाव पूजा। जल, गंध, अक्षत, पुष्प, धूप आदि से जो पूजा की जाती है वह द्रव्य पूजा और एकाग्रचित होकर अन्य समस्त विकल्प छोड़कर अरहंत के प्रतिबिम्ब का ध्यान करना सो भाव पूजा है। रयणसार में आचार्यश्री कुन्दकुन्द स्वामी ने लिखा है-

पूयफलेण तिलोए सुर पुज्जो हवइ सुद्धमणो।
दाण फलेण तिलोए, सार सुहं भुंजदे णियदं॥

भावार्थ- जो शुद्ध भाव से श्रद्धापूर्वक पूजा करता है, वह पूजा के फल से त्रिलोक का आधीश हो इन्द्रों से पूजित होता है और सुपात्रों में चार प्रकार के दान के फल से त्रिलोक में सारभूत मोक्ष सुखों को भोगता है।

उस सुख के आलम्बन हेतु प.पू. गुरुवर आचार्यश्री ने ‘श्री सहस्रनाम विधान’ की रचना कर हम सभी भव्य जीवों को धर्म का मार्ग प्रशस्त किया है। आचार्यश्री की रचना जन-जन को लाभकारी होवे और हम लोगों को इसी प्रकार जिनेन्द्र पूजन का लाभ होता रहे जिससे हम सभी लोग पुण्य का संचय कर सकें तथा हमारा जीवन ऊर्ध्वगामी बन सके।

आचार्यश्री के चरणों में अंतिम भावना-

जिनका दर्शन भवि जीवों में, सत् श्रद्धान् जगाता है।
उपदेशामृत जिनका जग में, सद्धर्म की राह दिखाता है॥
उन विशद सिन्धु के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
हम चले आपके कदमों पर, यह विशद भावना भाते हैं॥

साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति आचार्य भगवन् गुरुवर श्री विशदसागरजी के चरणों में
कोटिशः नमोस्तु-3

- ब्र. आरती दीदी

सहस्रनाम व्रत विधि

किसी भी माह में शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा के दिन से सहस्रनाम पूजन विधान संकल्पपूर्वक ग्रहण करें।

व्रतद्वय एक उपवास या एक आहार या 2, 5, 8, 11, 14 को व्रत या उपवास या अपनी सुविधानुसार 1008 व्रत करना।

जाप्यद्वय प्रत्येक उपवास के साथ एक-एक नाम की जाप्य करना। जैसे- पहले उपवास के दिन ॐ ह्री श्रीमते नमः इत्यादि।

उद्यापनद्वय उसी माह की शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा के दिन भक्ति, शक्ति पूर्वक सहस्रनाम विधान करें। दान आदि दें तथा पूर्ण होने पर उद्यापन के समय सहस्रनाम विधान करें।

ghñīZm {dYmZ Hb\$ rWE mOCH\$

श्री सुपाश्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, बस स्टेण्ड हिण्डोली, जिला-बूँदी (राज.)
अष्टाद्विका पर्व पर आयोजित समवशरण महामण्डल विधान के अवसर पर
दिगम्बर जैन समाज की ओर से प्रकाशित

1. श्री किस्तुरचंद हुकमचन्दजी खटोड़
2. श्री पारसचन्दजी जितेन्द्रकुमारजी सुरलाया
3. श्रीमती दाखा बाई धर्मपत्नी स्व. श्री मांगीलालजी जठयानीवाल
4. श्री मोहनलालजी प्रभुदयालजी सुरलाया
5. श्री महावीरकुमारजी जम्बूकुमारजी कासलीवाल
6. श्री सुन्दरलालजी महावीरप्रसादजी जठयानीवाल
7. श्री प्रकाशचन्दजी दुर्लभकुमारजी खटोड़
8. श्री बिरधीचन्दजी पवनकुमारजी खटोड़
9. श्री किस्तुरचन्दजी पदमकुमारजी जठयानीवाल
10. श्री कैलाशचन्दजी मुकेशकुमारजी जठयानीवाल
11. श्री लालचन्दजी पवनकुमारजी धनोप्या
12. श्री मनोजजी जैन (सरसिया वाले)
13. श्री अभयकुमारजी कासलीवाल
14. गुप्तदान
15. गुप्तदान

lr Xod-emñi-Jwé g_wAM` nyOZ

स्थापना

देव शास्त्र गुरु के चरणों हम, सादर शीष झुकाते हैं।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय, सिद्ध प्रभु को ध्याते हैं।
श्री बीस जिनेन्द्र विदेहों के, अरु सिद्ध क्षेत्र जग के सारे।
हम विशद भाव से गुण गाते, ये मंगलमय तारण हारे।
हमने प्रमुदित शुभ भावों से, तुमको हे नाथ ! पुकारा है।
मम् डूब रही भव नौका को, जग में वश एक सहारा है।
हे करुणा कर ! करुणा करके, भव सागर से अब पार करो।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, बस इतना सा उपकार करो॥

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान
विंशति तीर्थकर सिद्ध क्षेत्र समूह अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वान।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान
विंशति तीर्थकर सिद्ध क्षेत्र समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापन।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान
विंशति तीर्थकर सिद्ध क्षेत्र समूह अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अष्टक

हम प्रासुक जल लेकर आये, निज अन्तर्मन निर्मल करने।
अपने अन्तर के भावों को, शुभ सरल भावना से भरने॥
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें॥1॥

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान
विंशति तीर्थकर सिद्ध क्षेत्र समूह जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! शरण में आये हैं, भव के सन्ताप सताए हैं।
यह परम सुगन्धित चंदन ले, प्रभु चरण शरण में आये हैं॥
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें॥2॥

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान
विंशति तीर्थकर सिद्ध क्षेत्र समूह भव ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अक्षय निधि को भूल रहे, प्रभु अक्षय निधी प्रदान करो।
यह अक्षत लाए चरणों में, प्रभु अक्षय निधि का दान करो॥
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें॥3॥

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान
विंशति तीर्थकर सिद्ध क्षेत्र समूह अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यद्यपि पंकज की शोभा भी, मानस मधुकर को हर्षाए।
अब काम कलंक नशाने को, मनहर कुसुमांजलि ले आए॥
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें॥4॥

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान
विंशति तीर्थकर सिद्ध क्षेत्र समूह कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ये षट् रस व्यंजन नाथ हमें, सन्तुष्ट पूर्ण न कर पाये।
चेतन की क्षुधा मिटाने को, नैवेद्य चरण में हम लाए॥
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें॥5॥

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान
विंशति तीर्थकर सिद्ध क्षेत्र समूह क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक के विविध समूहों से, अज्ञान तिमिर न मिट पाए।
अब मोह तिमिर के नाश हेतु, हम दीप जलाकर ले आए॥
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें॥6॥

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान
विंशति तीर्थकर सिद्ध क्षेत्र समूह मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ये परम सुगन्धित धूप प्रभु, चेतन के गुण न महकाए।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, हम धूप जलाने को आए॥
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें॥7॥

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान
विंशति तीर्थकर सिद्ध क्षेत्र समूह अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

जीवन तरु में फल खाए कई, लेकिन वे सब निष्फल पाए ।
अब विशद मोक्ष फल पाने को, श्री चरणों में श्री फल लाए ॥
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें ।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें ॥8॥

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान
विंशति तीर्थकर सिद्ध क्षेत्र समूह मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

हम अष्ट कर्म आवरणों के, आतंक से बहुत सताए हैं ।
वसु कर्मों का हो नाश प्रभु, वसु द्रव्य संजोकर लाए हैं ॥
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें ।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें ॥9॥

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान
विंशति तीर्थकर सिद्ध क्षेत्र समूह अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

श्री देव शास्त्र गुरु मंगलमय हैं, अरु मंगल श्री सिद्ध महन्त ।
बीस विदेह के जिनवर मंगल, मंगलमय हैं तीर्थ अनन्त ॥

छन्द तोटक

जय अरि नाशक अरिहन्त जिन, श्री जिनवर छियालिस मूल गुण ।
जय महा मदन मद मान हनं, भवि भ्रमर सरोजन कुंज वनं ॥
जय कर्म चतुष्टय चूर करं, दृग ज्ञान वीर्य सुख नन्त वरं ।
जय मोह महारिपु नाशकरं, जय केवल ज्ञान प्रकाश करं ॥1॥
जय कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिन, जय अकृत्रिम शुभ चैत्य वनं ।
जय ऊर्ध्व अधो के जिन चैत्यं, इनको हम ध्याते हैं नित्यं ॥
जय स्वर्ग लोक के सर्व देव, जय भावन व्यन्तर ज्योतिषेव ।
जय भाव सहित पूजे सु एव, हम पूज रहे जिन को स्वयमेव ॥2॥
श्री जिनवाणी ओंकार रूप, शुभ मंगलमय पावन अनूप ।
जो अनेकान्तमय गुणधारी, अरु स्याद्वाद शैली प्यारी ॥

है सम्यक् ज्ञान प्रमाण युक्त, एकान्तवाद से पूर्ण मुक्त ।
जो नयावली युत सजल विमल, श्री जैनागम है पूर्ण अमल ॥ 3॥
जय रत्नत्रय युत गुरुवरं, जय ज्ञान दिवाकर सूरि परं ।
जय गुप्ति समीति शील धरं, जय शिष्य अनुग्रह पूर्ण करं ॥
गुरु पञ्चाचार के धारी हो, तुम जग-जन के उपकारी हो ।
गुरु आतम बह्य बिहारी हो, तुम मोह रहित अविकारी हो ॥4॥
जय सर्व कर्म विध्वंस करं, जय सिद्ध शिला पे वास करं ।
जिनके प्रगटे है आठ गुणं, जय द्रव्य भाव नो कर्महनं ॥
जय नित्य निरंजन विमल अमल, जय लीन सुखामृत अटल अचल ।
जय शुद्ध बुद्ध अविकार परं, जय चित् चैतन्य सु देह हरं ॥5॥
जय विद्यमान जिनराज परं, सीमंधर आदी ज्ञान करं ।
जिन कोटि पूर्व सब आयु वरं, जिन धनुष पांच सौ देह परं ॥
जो पंच विदेहों में राजे, जय बीस जिनेश्वर सुख साजे ।
जिनको शत्रु इन्द्र सदा ध्यावें, उनका यश मंगलमय गावें ॥6॥
जय अष्टापद आदीश जिनं, जय उर्जयन्त श्री नेमि जिनं ।
जय वासुपूज्य चम्पापुर जी, श्री वीर प्रभु पावापुरजी ॥
श्री बीस जिनेश सम्पेदगिरी, अरु सिद्ध क्षेत्र भूमि सगरी ।
इनकी रज को सिर नावत हैं, इनका यश मंगल गावत हैं ॥7॥

(आर्या छन्द)

पूर्वाचार्य कथित देवों को, सम्यक् वन्दन करें त्रिकाल ।
पञ्च गुरु जिन धर्म चैत्य श्रुत, चैत्यालय को है नत भाल ॥

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान
विंशति तीर्थकर सिद्ध क्षेत्र समूह अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा- तीन लोक तिहुँ काल के, नमू सर्व अरहन्त ।

अष्ट द्रव्य से पूजकर, पाऊँ भव का अन्त ॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिलोक एवं त्रिकाल वर्ती तीर्थकर जिनेन्द्रेभ्योः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पुष्पांजलिं क्षिपेत् (कायोत्सर्ग कुरु...)

प्रस्तावना

दोहा- आतम द्वारा आत्म में, आत्मरूप प्रगटाय ।
 अचिन्त्य वृत्ती स्वयंभू, जिन पद शीश नवाय ॥11 ॥
 नमन श्री जिनराज पद, विद्वानों में श्रेष्ठ ।
 नमः त्रिलोकी नाथ को, वक्ताओं में ज्येष्ठ ॥2 ॥
 काम शत्रु हर्ता तुम्हें, मार्ने ज्ञानी लोग ।
 इंद्र वृंद की मुकुटमणि, कांति से दे ढोक ॥3 ॥
 शुक्ल ध्यान के वार से, घाति कर्म कर नाश ।
 भव अनन्त को जीतकर, जितानन्त हुए खास ॥4 ॥
 महाभिमानी जीतकर, तीन लोक के नाथ ।
 अजेय काल को विजय कर, मृत्युञ्जय हैं साथ ॥5 ॥
 निज भव्यों के बंध नश, भव्य बंधु हैं आप ।
 त्रिपुरारि हैं नाशकर, जन्म-जरातंक ताप ॥6 ॥
 विशद ज्ञान का नेत्र पा, त्रि-नेत्र जिनदेव ।
 ध्रौव्य और उत्पाद व्यय, प्रगटे जहाँ सदैव ॥7 ॥
 चार घातिया नाशकर, अर्द्धनारीश्वर देव ।
 नाश किया मोहांध का, अंधकांतक ऐव ॥8 ॥
 मोक्ष निवासी शिव कहे, दुरित हरि से हर ।
 सुख निमग्न संभव रहे, सुख दाता शंकर ॥9 ॥
 जगत श्रेष्ठ हैं वृषभजी, नाभिपुत्र नाभेय ।
 इक्ष्वाकुकुल नंदन तथा, श्रेष्ठ गुरु पुरुदेव ॥10 ॥
 पुरुष श्रेष्ठ पुरुषोत्तम, पथ दर्शायक नेत्र ।
 त्रि-ज्ञान धारक प्रभु, रत्नत्रय के त्रिज्ञ ॥11 ॥

चार शरण मंगल प्रभु, बन परमेष्ठि स्वरूप ।
 चतुस्रधी द्रव्यादि से, कर दो पावन रूप ॥12 ॥
 स्वर्ग से ही आपुर्नभव, अतः सद्योजातात्म ।
 वामदेव सौन्दर्य से, तुमको विशद प्रणाम ॥13 ॥
 प्रसन्न रूप दीक्षा समय, उपशम भाव कषाय ।
 ईश नाम ज्ञानी विशद, तव पद शीश नवाय ॥14 ॥
 निज स्वरूप को प्राप्त कर, हो आगामी सिद्ध ।
 नमन भविष्यत सिद्ध को, जिनवर जगत प्रसिद्ध ॥15 ॥
 ज्ञानावरणी कर्म नश, अनंत चक्षु हैं आप ।
 नमन विश्व दृश्वाक्षयी, दर्शनावरणी पाप ॥16 ॥
 नाशक दर्शनमोह के, निर्मल श्रद्धा पाय ।
 नाशक चारित्रमोह के, वीतराग सिरनाय ॥17 ॥
 ज्ञाता लोकालोक के, दर्शन सौख्य अनंत ।
 अनंत वीर्यधारी चरण, नमन अनंतानंत ॥18 ॥
 अनंतदान लब्धि सहित, भोगोपभोग अनंत ।
 हे जिन क्षायिक भावयुत, चरणों नमन अनंत ॥19 ॥
 लख चौरासी योनि बिन, आप आयोनिरूप ।
 परम पवित्र ध्यानी ऋषि, नमः आत्म जिनरूप ॥20 ॥
 परमच्छेदक पद नमन, विशद ज्ञान के नाथ ।
 परम तत्त्व परमात्मा, जिनवर के पद माथ ॥21 ॥
 अति तेजस्वी पद नमन, मोक्षमार्ग स्वरूप ।
 नमन परम परमेष्ठि को, अति सुन्दर है रूप ॥22 ॥
 मुक्तिवास ऋद्धि परम, परम ज्योति स्वरूप ।
 अज्ञान नाशी तेजपुंज, नमः निजात्म स्वरूप ॥23 ॥

कर्म कलंक से मुक्त जिन, कर्म बंध से हीन ।
क्षीण दोष धारी नमः, किये मोह का क्षीण ॥24॥

मुक्ति शुभ गति पायकर, प्रशस्त सिद्धगति पाय ।
सुख अतीन्द्रिय ज्ञानधर, निज स्वरूप हो जाय ॥25॥
कायबंध से छूटकर, अशरीरी हुए नाथ ।
रहित योग योगी प्रमुख, जिनपद में मम माथ ॥26॥

बिन कषाय अकषाय हो, बिना वेद होऽवेद ।
नमन चरण द्वय में करें, योगी भाव समेत ॥27॥

परम ज्ञानधारी प्रभु, परम हैं संयम रूप ।
दृष्टा हो परमार्थ के, नमन चरण अनुरूप ॥28॥

शुभ लेश्या के अंशयुत, हैं अलेश्य जिनराज ।
भव्याभव्य से मुक्त हैं, नमः चरण तव आज ॥29॥

संज्ञी-असंज्ञी रहित जिन, निर्मल आत्म विशुद्ध ।
तुम्हें वीत संज्ञक नमन, क्षायक दर्शन शुद्ध ॥30॥

तृप्त आप आहार बिन, अतिशय कांतियुक्त ।
वीत दोष जिनपद नमन, भवसिंधु से मुक्त ॥31॥

जन्म-जरा-मृत्यु रहित, अजर-अमर जिनदेव ।
अविनश्वर अरु अचल तुम, करूँ चरण की सेव ॥32॥

गुण अनंत जिनदेव के, कथन असंभव होय ।
कर उपासना देव की, नाम स्मरण सोय ॥33॥

करें पाठ सहस्र नाम का, पाप शमन के हेत ।
पूर्वप्रकार स्तुति करें, प्रभु की भक्ति समेत ॥34॥

‘इति सहस्रनाम स्तोत्र प्रस्तावना समाप्तं’ (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

ghñīZm_nyOZ

स्थापना

हे तीर्थ प्रवर्तक तीर्थकर !, हे सहस्र आठ गुण के धारी ।
हे विश्व पूज्य ! हे समदृष्टा !, सर्वज्ञ देव मंगलकारी ॥
हे ज्ञानसूर्य ! हे तेज पुञ्ज !, आनन्द कन्द हे त्रिपुरारी ! ।
हे धर्मसुधाकर चिदानन्द !, करुणा निधान हे दुःखहारी ! ॥
आह्वानन करके आज तुम्हें, उर में अपने बैठाते हैं ।
शुभ सहस्रनाम के द्वारा हम, प्रभु गीत आपके गाते हैं ॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवैषट् आह्वाननं ।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूह ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूह ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

शुभ जल के कलशा प्रासुक कर, हम पूजन करने आये हैं ।
त्रय रोग नशाने हे भगवन !, त्रयधार कराने लाये हैं ॥
ये सहस्रनाम पावन जग में, जग जीवों का हितकारी है ।
हम सहस्रनाम को प्राप्त करें, यह इच्छा विशद हमारी है ॥1॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूहेभ्यो जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

भव वन में घूम रहे हैं हम, पर साता कहीं न पाई है ।
यह सुभित गंध सुगन्धित ले, शुभ पद में आन चढ़ाई है ॥
ये सहस्रनाम पावन जग में, जग जीवों का हितकारी है ।
हम सहस्रनाम को प्राप्त करें, यह इच्छा विशद हमारी है ॥2॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूहेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

निज निधि को भूल रहे हैं हम, अक्षय पद हमने न पाया।
यह अक्षय लाये आज चरण, उस पद को मम मन ललचाया॥
ये सहस्रनाम पावन जग में, जग जीवों का हितकारी है।
हम सहस्रनाम को प्राप्त करें, यह इच्छा विशद हमारी है॥3॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूहेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय
अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

घातक है जग में प्रबल काम, सबके मन में विकृति लाए।
हो कामवासना पूर्ण नाश, यह पुष्प मनोहर हम लाए॥
ये सहस्रनाम पावन जग में, जग जीवों का हितकारी है।
हम सहस्रनाम को प्राप्त करें, यह इच्छा विशद हमारी है॥4॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूहेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय
पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

हम कर्म असाता के कारण, सदियों से जग में भटकाए।
अब क्षुधा वेदना नाश हेतु, नैवेद्य चरण में हम लाए॥
ये सहस्रनाम पावन जग में, जग जीवों का हितकारी है।
हम सहस्रनाम को प्राप्त करें, यह इच्छा विशद हमारी है॥5॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूहेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय
नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हम ज्ञान बिना इस भव वन में, दर-दर की ठोकर खाए हैं।
अब मोह अंध के नाश हेतु, यह दीप जलाकर लाए हैं॥
ये सहस्रनाम पावन जग में, जग जीवों का हितकारी है।
हम सहस्रनाम को प्राप्त करें, यह इच्छा विशद हमारी है॥6॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूहेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय
दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

वसुकर्म आत्मा को मलीन, सदियों से करते आए हैं।
निज वैभव पाने हेतु अमल, दश गन्ध जलाने लाए हैं॥
ये सहस्रनाम पावन जग में, जग जीवों का हितकारी है।
हम सहस्रनाम को प्राप्त करें, यह इच्छा विशद हमारी है॥7॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूहेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं
निर्वपामीति स्वाहा ।

इस जग के सारे फल खाए, पर शिवफल प्राप्त न कर पाए।
अब मोक्ष महाफल पाने को, हम श्रीफल चरणों में लाए॥
ये सहस्रनाम पावन जग में, जग जीवों का हितकारी है।
हम सहस्रनाम को प्राप्त करें, यह इच्छा विशद हमारी है॥8॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूहेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं
निर्वपामीति स्वाहा ।

आठों कर्मों के कारण से, मम अष्ट सुगुण न प्रकट हुए।
अब पद अनर्घ्य हो प्राप्त हमें, हम पद में आये अर्घ्य लिए॥
ये सहस्रनाम पावन जग में, जग जीवों का हितकारी है।
हम सहस्रनाम को प्राप्त करें, यह इच्छा विशद हमारी है॥9॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूहेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्ताय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रासुक लेकर नीर से देते शांतिधार।
पुष्पाञ्जलि करते परम, पाने शिव उपहार॥

शान्त्ये शांतिधारा...

श्रेष्ठ सुगन्धित पुष्प यह, लेकर दोनों हाथ।
पुष्पाञ्जलि करते परम, पाने शिवपद नाथ॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जयमाला

दोहा- जिनवर तीनों लोक में, होते पूज्य त्रिकाल।
सहस्रनाम की गा रहे, भाव सहित जयमाल॥

चौपाई

जय-जय तीन लोक के स्वामी, त्रिभुवनपति हे अन्तर्यामी।
पूर्व भवों में पुण्य कमाया, पुण्योदय से नरभव पाया॥
तन निरोग पाकर के भाई, सुकुल प्राप्त कीन्हा सुखदायी।
तुमने उर में ज्ञान जगाया, अतिशय सम्यक् दर्शन पाया॥
भाव सहित संयम अपनाए, भव्य भावना सोलह भाए।
तीर्थकर प्रकृति शुभ पाई, स्वर्गों के सुख भोगे भाई॥
गर्भादि कल्याणक पाए, रत्न इन्द्र भारी बरषाए।
छह महीने पहले से भाई, देवों ने नगरी सजवाई॥
जन्म कल्याणक प्रभु जी पाये, सहस्राष्ट शुभ गुण प्रगटाए।
गुणानुरूप नाम भी पाए, सहस्र आठ संख्या में गाए॥
नाम सभी सार्थक हैं भाई, सहस्र नाम की महिमा गाई।
तीर्थकर पदवी के धारी, नामों के होते अधिकारी॥
मंत्र सभी यह नाम कहाए, मंत्रों को श्रद्धा से गाए।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाए, जो भी इनका ध्यान लगाए॥
महिमा का न पार है भाई, श्री जिनेन्द्र की है प्रभुताई।
जगत प्रकाशी जिन कहलाए, ज्ञानादर्श सुगुण प्रभु पाए॥
श्री जिनेन्द्र रत्नत्रय पाए, अनंत चतुष्टय प्रभु प्रगटाए।
धर्म चक्र शुभ प्रभु जी धारे, समवशरणयुत किए विहारे॥
समवशरण शुभ देव बनाते, श्री जिनवर की महिमा गाते।
प्राणी अतिशय पुण्य कमाते, पूजा अर्चा कर हर्षाते॥

जय-जयकार लगाते भाई, यह है जिनवर की प्रभुताई।
पुरुषोत्तम यह नाम कहाए, उनकी यह शुभ माल बनाए॥
अर्पित करते तव पद स्वामी, करते हम तव चरण नमामी।
नाथ ! प्रार्थना यही हमारी, दो आशीष हमें त्रिपुरारी॥
रत्नत्रय की निधि हम पाएँ, शिवपथ के राही बन जाएँ।
शिव स्वरूप हम भी प्रगटाएँ, शिवपुर जाकर शिवसुख पाएँ॥

दोहा- सहस्रनाम का कंठ में, धारें कंठाहार।
विशद गुणों को प्राप्त कर, पावें शिव का द्वार॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूहेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- जिन गुण के अनुपम सुमन, जग में रहे महान्।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, पाने पद निर्वाण॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

प्रथम वलयः

दोहा- श्रीमान् को आदिकर, पढ़ते हम सौ नाम।
पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, करके विशद प्रणाम॥

(इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

सहस्रनाम के अर्घ्य

(गीता छन्द)

जो उभय लक्ष्मी प्राप्त हैं वह, कहे प्रभु 'श्रीमान' हैं।
जो ज्ञान दर्शन वीर्य सुख, पाये अनन्त महान हैं॥
वे सर्वदर्शी देव जग में, श्रेष्ठ हैं तारण-तरण।
उनके विशद चरणों में करते, हम सदा शत्-शत् नमन॥१॥

ॐ ह्रीं श्री श्रीमते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनने अलौकिक ज्ञान, प्रगटाया स्वयं के ध्यान से।
वह 'स्वयंभू' हमको स्वयंभू, बना दें निज ज्ञान से॥
वे सर्वदर्शी देव जग में, श्रेष्ठ हैं तारण-तरण।
उनके विशद चरणों में करते, हम सदा शत्-शत् नमन॥2॥

ॐ ह्रीं श्री स्वयंभुवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो धर्म घन बन दिव्य वाणी, की सतत् वर्षा करें।
वे 'वृषभ' जिनवर हम सभी के, धर्म अन्तर में भरें॥
वे सर्वदर्शी देव जग में, श्रेष्ठ हैं तारण-तरण।
उनके विशद चरणों में करते, हम सदा शत्-शत् नमन॥3॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शं-सौख्य भवहारी रहे जो, श्रेष्ठ वह 'सम्भव' कहे।
वह शांत मूर्ति सुख प्रदाता, लोक में अनुपम रहे॥
वे सर्वदर्शी देव जग में, श्रेष्ठ हैं तारण-तरण।
उनके विशद चरणों में करते, हम सदा शत्-शत् नमन॥4॥

ॐ ह्रीं श्री शंभवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शंभु' परम आनन्दकारी, आप हो हे जिन प्रभो !
हैं दिव्य सुख इन्द्रिय रहित जो, प्राप्त हमको हों विभो !॥
वे सर्वदर्शी देव जग में, श्रेष्ठ हैं तारण-तरण।
उनके विशद चरणों में करते, हम सदा शत्-शत् नमन॥5॥

ॐ ह्रीं श्री शंभुवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु शुद्ध आत्म में निरत हो, 'आत्मभू' कहलाए हैं।
हम आत्मभू बनने प्रभु तव, चरण युग में आए हैं॥
वे सर्वदर्शी देव जग में, श्रेष्ठ हैं तारण-तरण।
उनके विशद चरणों में करते, हम सदा शत्-शत् नमन॥6॥

ॐ ह्रीं श्री आत्मभुवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह लोक सारा है प्रकाशित, 'स्वयंप्रभ' की प्रभा से।
इस लोक में जो द्रव्य सारे, वह दमकते विभा से॥
वे सर्वदर्शी देव जग में, श्रेष्ठ हैं तारण-तरण।
उनके विशद चरणों में करते, हम सदा शत्-शत् नमन॥7॥

ॐ ह्रीं श्री स्वयंप्रभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! तुम हो प्रभु सबके, 'प्रभव' तुम कहलाए हो।
परिपूर्ण हो तुम भक्त जन के, श्रेष्ठ मन में भाए हो॥
वे सर्वदर्शी देव जग में, श्रेष्ठ हैं तारण-तरण।
उनके विशद चरणों में करते, हम सदा शत्-शत् नमन॥8॥

ॐ ह्रीं श्री प्रभुवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु श्रेष्ठ परमानन्द सुख के 'भोक्ता' कहलाए हैं।
वे ज्ञान दृग सुख वीर्य अनुपम, नन्त चतुष्टय पाए हैं॥
वे सर्वदर्शी देव जग में, श्रेष्ठ हैं तारण-तरण।
उनके विशद चरणों में करते, हम सदा शत्-शत् नमन॥9॥

ॐ ह्रीं श्री भोक्त्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विश्व के सब भूप चरणों, भक्त बनकर आए हैं।
'विश्वभू' अतएव जिनवर, लोक में कहलाए हैं॥
वे सर्वदर्शी देव जग में, श्रेष्ठ हैं तारण-तरण।
उनके विशद चरणों में करते, हम सदा शत्-शत् नमन॥10॥

ॐ ह्रीं श्री विश्वभुवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अपुनर्भव' हैं प्रभु जी, भव-भ्रमण से मुक्त हैं।
अरिहन्त हैं सर्वज्ञ प्रभु जी, सर्वसुख संयुक्त हैं॥
वे सर्वदर्शी देव जग में, श्रेष्ठ हैं तारण-तरण।
उनके विशद चरणों में करते, हम सदा शत्-शत् नमन॥11॥

ॐ ह्रीं श्री अपुनर्भवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘विश्वात्मान’ विश्व को जो, निज के सदृश जानते।
शुद्ध-चेतन चित्त सबका, आप सबको मानते॥
वे सर्वदर्शी देव जग में, श्रेष्ठ हैं तारण-तरण।
उनके विशद चरणों में करते, हम सदा शत्-शत् नमन॥12॥

ॐ ह्रीं श्री विश्वात्मानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनको ‘विश्वलोकेश’ कहते, विश्व में जो श्रेष्ठ हैं।
विशद गुण के ईश हैं जो, ज्ञानधारी ज्येष्ठ हैं॥
वे सर्वदर्शी देव जग में, श्रेष्ठ हैं तारण-तरण।
उनके विशद चरणों में करते, हम सदा शत्-शत् नमन॥13॥

ॐ ह्रीं श्री विश्वलोकेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन ‘विश्वतश्चक्षु’ कहाए, विश्व में सदज्ञान से।
जो चक्षु केवल दर्श पाए, आत्मा के ध्यान से॥
वे सर्वदर्शी देव जग में, श्रेष्ठ हैं तारण-तरण।
उनके विशद चरणों में करते, हम सदा शत्-शत् नमन॥14॥

ॐ ह्रीं श्री विश्वतश्चक्षुषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘अक्षर’ प्रभु न क्षरण होता, आपके गुण का कभी।
अक्ष इन्द्रियवश किए हैं, स्वयं ही अपनी सभी॥
वे सर्वदर्शी देव जग में, श्रेष्ठ हैं तारण-तरण।
उनके विशद चरणों में करते, हम सदा शत्-शत् नमन॥15॥

ॐ ह्रीं श्री अक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘विश्वविद्’ हैं ज्ञान रश्मि, विश्व में प्रगटित हुए।
प्रभु चराचर जगत ज्ञाता, को लखे प्रमुदित हुए॥
वे सर्वदर्शी देव जग में, श्रेष्ठ हैं तारण-तरण।
उनके विशद चरणों में करते, हम सदा शत्-शत् नमन॥16॥

ॐ ह्रीं श्री विश्वविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘विश्वविद्येश’ कहे प्रभु जी, ज्ञान के धारी अहा।
ज्ञान का अनुपम उजाला, लोक में फैला रहा॥
वे सर्वदर्शी देव जग में, श्रेष्ठ हैं तारण-तरण।
उनके विशद चरणों में करते, हम सदा शत्-शत् नमन॥17॥

ॐ ह्रीं श्री विश्वविद्येशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘विश्वयोनि’ विश्व में, उत्पाद के कारण रहे।
तत्त्व के उपदेश कर्त्ता, जगत तारक जो कहे॥
वे सर्वदर्शी देव जग में, श्रेष्ठ हैं तारण-तरण।
उनके विशद चरणों में करते, हम सदा शत्-शत् नमन॥18॥

ॐ ह्रीं श्री विश्वयोनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो ‘अनश्वर’ प्रभु तुम ही, विश्व नश्वर यह रहा।
द्रव्य गुण पर्याय से, तुमको अनश्वर ही कहा॥
वे सर्वदर्शी देव जग में, श्रेष्ठ हैं तारण-तरण।
उनके विशद चरणों में करते, हम सदा शत्-शत् नमन॥19॥

ॐ ह्रीं श्री अनश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘विश्वदृश्वा’ आप हो प्रभु, देखते क्षण में सभी।
देखने में द्रव्य कोई, नहीं जो आवे कभी॥
वे सर्वदर्शी देव जग में, श्रेष्ठ हैं तारण-तरण।
उनके विशद चरणों में करते, हम सदा शत्-शत् नमन॥20॥

ॐ ह्रीं श्री विश्वदृश्वने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- मंगलकारी हैं ‘विभु’, जग में तारणहार।
समवशरण में राजते, करते भव से पार॥21॥

ॐ ह्रीं श्री विभवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘धाता’ चऊ गति के सभी, जीव लगाते पार।
सर्व प्राणियों के रहे, जग में पालनहार ॥22॥

ॐ ह्रीं श्री धात्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन के स्वामी प्रभु, कहलाते ‘विश्वेश’।
हित-मित-प्रिय जग जीव को, देते हैं उपदेश ॥23॥

ॐ ह्रीं श्री विश्वेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप ‘विश्वलोचन’, कहे, जग के नेत्र समान।
हित उपदेशक हो प्रभु, कौन करे गुणगान ॥24॥

ॐ ह्रीं श्री विश्वलोचनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे ‘विश्वव्यापी’ प्रभो !, कण-कण रहा निवास।
अनुपम तीनों लोक में, फैला ज्ञान प्रकाश ॥25॥

ॐ ह्रीं श्री विश्वव्यापिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘विधु’ आप हो लोक में, कर्ता कर्म विधान।
भव्य जीव करते सदा, भाव सहित गुणगान ॥26॥

ॐ ह्रीं श्री विधवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘वेधा’ हो प्रभु धर्म के, सुख के हेतु नाथ।
कर्ता मुक्ति मार्ग के, चरण झुकाएँ माथ ॥27॥

ॐ ह्रीं श्री वेधसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘शाश्वत’ हो प्रभु लोक में, शाश्वत है शुभ नाम।
शाश्वत कर दो भक्त को, करते चरण प्रणाम ॥28॥

ॐ ह्रीं श्री शाश्वताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ‘विश्वतोमुख’ रहे, दीखे मुख चऊ ओर।
दर्शन करके भक्त जन, होते भाव विभोर ॥29॥

ॐ ह्रीं श्री विश्वतोमुखाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे ‘विश्वकर्मा’ प्रभो !, दिया कर्म उपदेश।
असि मसि कृषि वाणिज्य अरु, शिल्प कला संदेश ॥30॥

ॐ ह्रीं श्री विश्वकर्मणाए नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘जगज्येष्ठ’ तुम हो प्रभो !, सर्व श्रेष्ठ है ज्ञान।
बड़ा नहीं कोई लोक में, तुम सम और समान ॥31॥

ॐ ह्रीं श्री जगज्येष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘विश्वमूर्ति’ है नाम तव, झुकता सारा लोक।
तव दर्शन करके सभी, मैटें भव का रोग ॥32॥

ॐ ह्रीं श्री विश्वमूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संघ चतुर्विध के प्रभु !, रहे ‘जिनेश्वर’ आप।
पूजा अर्चा कर सभी, धोते अपने पाप ॥33॥

ॐ ह्रीं श्री जिनेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रहा ‘विश्वदृक्’ आपका, आगम में शुभ नाम।
द्रव्य सभी अवलोकते, तुमको करें प्रणाम ॥34॥

ॐ ह्रीं श्री विश्वदृशे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो ! ‘विश्वभूतेश’ तुम, प्राणी मात्र के ईश।
भव्य जीव सब भाव से, झुका रहे हैं शीश ॥35॥

ॐ ह्रीं श्री विश्वभूतेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘विश्वज्योति’ कहते तुम्हें, जग में ज्ञानी लोग।
विशद ज्ञान दर्शाए तव, सारा लोकालोक ॥36॥

ॐ ह्रीं श्री विश्वज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहीं ‘अनीश्वर’ आप सम, जग में सर्वप्रधान।
ईश्वर सबके हो परम, मंगलमयी महान ॥37॥

ॐ ह्रीं श्री अनीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘जिन’ कहलाए हो प्रभो, जीते कर्म कलंक ।

इन्द्रिय मन को जीतकर, हुए आप अकलंक ॥38॥

ॐ ह्रीं श्री जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कर्मारी को जीतकर, पाया ‘जिष्णु’ नाम ।

शासन है जयशील तब, चरणों करें प्रणाम ॥39॥

ॐ ह्रीं श्री जिष्णवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘अमेयात्म’ तुम हो प्रभो, गुण का नहीं है पार ।

नहीं जान पावे कोई, महिमा अपरम्पार ॥40॥

ॐ ह्रीं श्री अमेयात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(चौपाई छन्द)

‘विश्वरीश’ है नाम तुम्हारा, चरणों झुकता है जग सारा ।

इस जग के तुम ईश कहाते, चरणों में सब शीश झुकाते ॥41॥

ॐ ह्रीं श्री विश्वरीशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘जगतपति’ कहलाते स्वामी, तुम हो प्रभु जी अन्तर्यामी ।

भवि जीवों के तुम हो त्राता, तुम हो जग में भाग्य विधाता ॥42॥

ॐ ह्रीं श्री जगत्पतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु ‘अनन्तजित्’ तुम कहलाए, लोकालोक के स्वामी गाए ।

महिमा रही आपकी न्यारी, सर्वजगत में मंगलकारी ॥43॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तजिते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘अचिन्त्यात्मा’ आप कहाए, तब गुण चिन्तन में न आए ।

तुम सम कोई और नहीं है, सारे जग में और कहीं है ॥44॥

ॐ ह्रीं श्री अचिन्त्यात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘भव्यबन्धु’ जग में कहलाए, भव्यों को भव पार लगाए ।

जो रत्नत्रय योग्य रहे हैं, तब चरणों के भक्त कहे हैं ॥45॥

ॐ ह्रीं श्री भव्यबंधवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तुम सम कोई ‘अबन्धन’ नहीं, जग में तीन लोक के माहीं ।

सारे बन्धन आप नशाए, अतः अबन्धन तुम कहलाए ॥46॥

ॐ ह्रीं श्री अबंधनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पुरुष ‘युगादी’ तुमको कहते, तुमरे शासन में जो रहते ।

युग के आदी में तुम आये, अतः ‘युगादी पुरुष’ कहाए ॥47॥

ॐ ह्रीं श्री युगादिपुरुषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘ब्रह्मा’ तुमको कहते प्राणी, ऐसा कहती है जिनवाणी ।

तुमने केवल ज्ञान जगाया, ब्रह्मा पदवी को तब पाया ॥48॥

ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘पञ्चब्रह्ममय’ तुम कहलाए, पाँचों ज्ञान आपने पाए ।

परमेष्ठी जो पाँच कहे हैं, तुममें पाँचों रूप रहे हैं ॥49॥

ॐ ह्रीं श्री पञ्चब्रह्ममयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तुम ‘शिव’ सर्वानन्दमयी हो, अपने सारे दोष क्षयी हो ।

तुम निर्वाण मोक्ष पद पाए, शिवपुरवासी आप कहाए ॥50॥

ॐ ह्रीं श्री शिवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

नाम आपका ‘पर’ भी आता, जीवों पर करुणा को गाता ।

अपना सभी आपको माने, फिर भी तुमको जग निज जाने ॥51॥

ॐ ह्रीं श्री पराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘परतर’ नाम आपका गाया, तुम सम और कोई न पाया ।

सर्व जहाँ से पर तुम रहते, परतर अतः आपको कहते ॥52॥

ॐ ह्रीं श्री परतराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे जिन आप ‘सूक्ष्म’ कहलाते, इन्द्रिय विषयों में न आते ।

आप अतीन्द्रिय हो सद्ज्ञानी, ऐसा कहती है जिनवाणी ॥53॥

ॐ ह्रीं श्री सूक्ष्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘परमेष्ठी’ जिन आप कहाए, आप परम पदवी को पाए।
पाँचों पद के तुम अधिकारी, फिर भी बने आप अविकारी ॥54॥

ॐ ह्रीं श्री परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन को कहा ‘सनातन’ भाई, प्रभु ने शाश्वत पदवी पाई।
विद्यमान शासन में रहते, अतः सनातन जिन को कहते ॥55॥

ॐ ह्रीं श्री सनातनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वयं ज्ञान की ज्योति जलाई, तीर्थंकर की पदवी पाई।
‘स्वयंज्योति’ अतएव कहाए, जग को रोशन करने आए ॥56॥

ॐ ह्रीं श्री स्वयंज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ आप ‘अज’ भी कहलाए, उत्पत्ति न फिर से पाए।
महिमा जान सका न कोई, ज्ञानी जग में होवे सोई ॥57॥

ॐ ह्रीं श्री अजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो ‘अजन्मा’ आप कहाते, जन्म आप फिर से न पाते।
गर्भ जन्म के मैटन हारे, नाश करो प्रभु रोग हमारे ॥58॥

ॐ ह्रीं श्री अजन्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम ब्रह्म को प्रभु प्रगटाए, ‘ब्रह्मयोनि’ अतएव कहाए।
बने आप तब केवलज्ञानी, ऐसा कहती माँ जिनवाणी ॥59॥

ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मयोनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

योनि में उत्पाद नहीं है, लख चौरासी यहाँ कही हैं।
अतः ‘अयोनिज’ आप कहाए, विस्मयकारी महिमा पाए ॥60॥

ॐ ह्रीं श्री अयोनिजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पद्धरि छन्द)

जय ‘मोहारी’ विजयीश नमो, जय ऋषियों के आधीश नमो।
जय जगतपति जगदीश नमो, जय ‘मोहारी पति’ ईश नमो ॥61॥

ॐ ह्रीं श्री मोहारिविजयने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जय ‘मोहमल्लजेता’ महान्, जय जन्म-मृत्यु की किए हान।
जय सर्व लोक के आप मीत, जय कर्म शत्रु सब लिए जीत ॥62॥

ॐ ह्रीं श्री मोहमल्लजेताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जय ‘धर्मचक्रधारी’ मुनीश, चरणों तव झुकते शताधीश।
तुम जैन धर्म के हुए नाथ, तव चरणों में झुक रहा माथ ॥63॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मचक्रिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! ‘दयाध्वज’ आप नाम, तव चरणों में करते प्रणाम।
अदया का है न जहाँ लेश, हैं लोक पूज्य अनुपम जिनेश ॥64॥

ॐ ह्रीं श्री दयाध्वजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे ‘प्रशान्तारि’ तुमको प्रणाम, हे ज्ञानधारि तुमको प्रणाम।
हे मोहजयी ! तुमको प्रणाम, हे कर्मक्षयी ! तुमको प्रणाम ॥65॥

ॐ ह्रीं श्री प्रशान्तारये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे ‘अनन्तात्मा’ है प्रणाम, हे परमात्मा पद में प्रणाम।
हे शिवगामी तुमको प्रणाम, हे अविनाशी ! तुमको प्रणाम ॥66॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे ‘योगी’ तुमको मम प्रणाम, हे योगजयी जिनवर प्रणाम।
हे कामजयी ! तुमको प्रणाम, हे महामुनि ! तुमको प्रणाम ॥67॥

ॐ ह्रीं श्री योगिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे ‘योगीश्वरार्चित’ तुम्हें नमन, हे कर्मारिवर्जित ! तुम्हें नमन।
हे त्रिभुवनपति ! है तुम्हें नमन, हे अभिवनयोगी ! तुम्हें नमन ॥68॥

ॐ ह्रीं श्री योगीश्वरार्चिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जय ‘ब्रह्माविद्’ ब्रह्माणपति, जय ब्रह्म स्वरूपी बृहस्पति।
जय-जय ब्रह्माविद् ब्रह्मरूप, तुमने पाया निज का स्वरूप ॥69॥

ॐ ह्रीं श्री ब्रह्माविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए 'ब्रह्मतत्त्वज्ञ' प्रभो !, हे ब्रह्मलोक ! के नाथ विभो ।
हे महामुनि ! हे श्रेष्ठयति !, हे ब्रह्मस्वभावी ! ब्रह्मपति ॥70॥

ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मतत्त्वज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे 'ब्रह्मोद्याविद्' तुम्हें नमन, हे ब्रह्मविदाम्बर ! तुम्हें नमन ।
हे जिन विद्यापति ! तुम्हें नमन, हे शाश्वतसन्मति तुम्हें नमन ॥71॥

ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मोद्याविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिनराज 'यतीश्वर' कहलाए, जो ईश्वर बन जग में आए ।
प्रभु रत्नत्रय में यत्न किए, अतएव ज्ञान के जले दिए ॥72॥

ॐ ह्रीं श्री यतीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु 'शुद्ध' आपका नाम अहा, रागादि का न काम रहा ।
जो निर्मल हैं अति अविकारी, चैतन्य रूप गुण के धारी ॥73॥

ॐ ह्रीं श्री शुद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु 'बुद्ध' आप सम्पूर्ण कहे, वस्तु स्वरूप को जान रहे ।
प्रभु पूर्ण सुबुद्धि के धारी, तुम हो चेतन चिन्मयधारी ॥74॥

ॐ ह्रीं श्री बुद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जो 'प्रबुद्धात्मा' कहलाए, आतम में आतम को पाए ।
वह प्रभु ज्ञान से जगमगते, प्रभु सहस्र रश्मि जैसे लगते ॥75॥

ॐ ह्रीं श्री प्रबुद्धात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'सिद्धार्थ' आपका श्रेष्ठ नाम, तुमको जग करता है प्रणाम ।
कर लिए प्रयोजन सभी सिद्ध, अतएव हुए जग में प्रसिद्ध ॥76॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धार्थाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे नाथ 'सिद्धशासन' प्रणाम, तुम कहलाते प्रभु मोक्ष धाम ।
है शासन सबका हितकारी, इस सारे जग का उपकारी ॥77॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धशासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तुम 'सिद्ध' कहाते हो स्वामी, तुम तीन लोक में हो नामी ।
तुम मुक्ति पथ के हो गामी, तुम जग में हो अन्तर्यामी ॥78॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तुमको 'सिद्धान्तविद्' कहते हैं, जो तब चरणों में रहते हैं ।
प्रभु द्वादशांग के हो ज्ञाता, अतएव कहे जग के त्राता ॥79॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धान्तविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

है ध्येय आपका श्रेष्ठ अहा, अतएव आपको 'ध्येय' कहा ।
तुम ध्येय ज्ञेय सबके ज्ञाता, अतएव तुम्हें जग सिर नाता ॥80॥

ॐ ह्रीं श्री ध्येयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(चौपाई)

'सिद्धसाध्य' कर लिए हैं सारे, कोई शेष न रहे तुम्हारे ।
अतः आपके हम गुण गाते, चरणों में हम शीश झुकाते ॥81॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धसाध्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

नाथ 'जगद्धित' तुम कहलाए, जग का हित करने को आए ।
अतः आपके हम गुण गाते, चरणों में हम शीश झुकाते ॥82॥

ॐ ह्रीं श्री जगद्धिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु 'सहिष्णु' आप कहाए, उत्तम क्षमा धर्म को पाए ।
अतः आपके हम गुण गाते, चरणों में हम शीश झुकाते ॥83॥

ॐ ह्रीं श्री सहिष्णवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'अच्युत' हो तुम च्युत न होते, निज स्वभाव को कभी न खोते ।
अतः आपके हम गुण गाते, चरणों में हम शीश झुकाते ॥84॥

ॐ ह्रीं श्री अच्युताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तुम 'अनन्त' कहलाए स्वामी, गुण अनन्त पाए प्रभु नामी ।
अतः आपके हम गुण गाते, चरणों में हम शीश झुकाते ॥85॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

- ‘प्रभविष्णु’ की प्रभा निराली, तुम सम न कोई शक्तिशाली।
अतः आपके हम गुण गाते, चरणों में हम शीश झुकाते ॥86॥
- ॐ ह्रीं श्री प्रभविष्णवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु ‘भवोद्भव’ आप कहाए, अन्तिम भव प्रभुजी तुम पाए।
अतः आपके हम गुण गाते, चरणों में हम शीश झुकाते ॥87॥
- ॐ ह्रीं श्री भवोद्भवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
तुम्हें ‘प्रभुष्णु’ कहते भाई, तुमने सारी विद्या पाई।
अतः आपके हम गुण गाते, चरणों में हम शीश झुकाते ॥88॥
- ॐ ह्रीं श्री प्रभुष्णवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
‘अजर’ तुम्हें न जरा सताए, कोई रोग पास न आए।
अतः आपके हम गुण गाते, चरणों में हम शीश झुकाते ॥89॥
- ॐ ह्रीं श्री अजराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
नाथ ‘अजर्य’ शुभ नाम को पाए, तुमरे गुण इस जग ने गाए।
अतः आपके हम गुण गाते, चरणों में हम शीश झुकाते ॥90॥
- ॐ ह्रीं श्री अजर्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
‘भ्राजिष्णु’ सब तुमको कहते, तब भक्ति में ही रत रहते।
अतः आपके हम गुण गाते, चरणों में हम शीश झुकाते ॥91॥
- ॐ ह्रीं श्री भ्राजिष्णवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
‘धीश्वर’ हो प्रभु केवलज्ञानी, वीतरागता के विज्ञानी।
अतः आपके हम गुण गाते, चरणों में हम शीश झुकाते ॥92॥
- ॐ ह्रीं श्री धीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
‘अव्यय’ व्यय न होंय तुम्हारे, गुण तुमने जो पाए सारे।
अतः आपके हम गुण गाते, चरणों में हम शीश झुकाते ॥93॥
- ॐ ह्रीं श्री अव्ययाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
‘विभावसु’ तुम हो तमहारी, महिमा रही जगत् से न्यारी।
अतः आपके हम गुण गाते, चरणों में हम शीश झुकाते ॥94॥

- ॐ ह्रीं श्री विभावसवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
‘असंभूष्णू’ प्रभु तुम कहलाए, जन्म-जरा से मुक्ति पाए।
अतः आपके हम गुण गाते, चरणों में हम शीश झुकाते ॥95॥
- ॐ ह्रीं श्री असम्भूष्णवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
‘स्वयंभूष्णू’ नाम तुम्हारा, स्वयंसिद्ध हो जग को तारा।
अतः आपके हम गुण गाते, चरणों में हम शीश झुकाते ॥96॥
- ॐ ह्रीं श्री स्वयंभूष्णवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
तुमको नाथ ‘पुरातन’ कहते, तुम प्राचीन सदा ही रहते।
अतः आपके हम गुण गाते, चरणों में हम शीश झुकाते ॥97॥
- ॐ ह्रीं श्री पुरातनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
‘परमात्मा’ अतिशय के धारी, भक्त बनी यह दुनियाँ सारी।
अतः आपके हम गुण गाते, चरणों में हम शीश झुकाते ॥98॥
- ॐ ह्रीं श्री परमात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
‘परमज्योति’ ज्योतिर्मय ज्ञानी, सर्व सृष्टि तुमने पहिचानी।
अतः आपके हम गुण गाते, चरणों में हम शीश झुकाते ॥99॥
- ॐ ह्रीं श्री परमज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
तीन लोक की प्रभुता पाए, ‘त्रिजगत् परमेश्वर’ कहलाए।
अतः आपके हम गुण गाते, चरणों में हम शीश झुकाते ॥100॥
- ॐ ह्रीं श्री त्रिजगत्परमेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ्य

- प्रथम नाम श्रीमान् से लेकर, त्रिजगत् परमेश्वर शत् नाम।
सुर-नर इन्द्रों से जो पूजित, तिनको हम भी करें प्रणाम॥
नाम मंत्र का जाप निरन्तर, करके हम सिद्धी पाएँ।
तुम सम सिद्ध सुखों को पाकर, निज गुण में ही रम जाएँ॥1॥
- ॐ ह्रीं श्रीमदादिशतनामावलिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शांतिधारा (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

द्वितीय वलयः

दोहा- प्रथम दिव्यभाषापति से, लेकर शत् नाम ।
करते हम पुष्पाञ्जलि, पाने निज का धाम ॥

(इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(तर्ज - सुन भाई रे...)

प्रभु को 'दिव्यभाषापति' जानो भाई रे !, अष्टादश भाषा के ज्ञाता भाई रे !
सप्त शतक लघु भाषा जाने भाई रे, ज्ञान ज्योति जिन प्रभु ने शुभ प्रगटाई रे ! ॥101॥
ॐ ह्रीं श्री दिव्यभाषापतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'दिव्य' नाम प्रभु का शुभ जानो भाई रे !, महादिव्यता श्री जिनवर ने पाई रे !
करते हैं गुणगान सभी मिल भाई रे !, श्रेष्ठ लोक में है प्रभु की प्रभुताई रे ! ॥102॥
ॐ ह्रीं श्री दिव्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कहते 'पूतवाक्' जिनवर को भाई रे !, वाक् पवित्रता श्री जिनवर ने पाई रे !
करते हैं गुणगान सभी मिल भाई रे !, श्रेष्ठ लोक में है प्रभु की प्रभुताई रे ! ॥103॥
ॐ ह्रीं श्री पूतवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु 'पूतशासन' कहलाते भाई रे !, है पवित्र जिनवर का शासन भाई रे !
करते हैं गुणगान सभी मिल भाई रे !, श्रेष्ठ लोक में है प्रभु की प्रभुताई रे ! ॥104॥
ॐ ह्रीं श्री पूतशासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'पूतात्मा' कहते जिनवर को भाई रे !, पूत आत्मा जिनवर की शुभ भाई रे !
करते हैं गुणगान सभी मिल भाई रे !, श्रेष्ठ लोक में है प्रभु की प्रभुताई रे ! ॥105॥
ॐ ह्रीं श्री पूतात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'परंज्योति' है नाम प्रभु का भाई रे !, परंज्योति अन्तर में शुभ प्रगटाई रे !
करते हैं गुणगान सभी मिल भाई रे !, श्रेष्ठ लोक में है प्रभु की प्रभुताई रे ! ॥106॥
ॐ ह्रीं श्री परमज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'धर्माध्यक्ष' कहाते हैं जिन भाई रे !, दश धर्मों की सत्ता प्रभु ने पाई रे !
करते हैं गुणगान सभी मिल भाई रे !, श्रेष्ठ लोक में है प्रभु की प्रभुताई रे ! ॥107॥
ॐ ह्रीं श्री धर्माध्यक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

है प्रसिद्ध शुभ नाम 'दमीश्वर' भाई रे !, इन्द्रिय जय की शक्ति प्रभु ने पाई रे !
करते हैं गुणगान सभी मिल भाई रे !, श्रेष्ठ लोक में है प्रभु की प्रभुताई रे ! ॥108॥
ॐ ह्रीं श्री दमीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'श्रीपति' की पदवी प्रभु ने शुभ पाई रे !, श्रीपति कहलाते हैं श्री जिन भाई रे !
करते हैं गुणगान सभी मिल भाई रे !, श्रेष्ठ लोक में है प्रभु की प्रभुताई रे ! ॥109॥
ॐ ह्रीं श्री श्रीपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हैं 'भगवान' आप इस जग में भाई रे !, ज्ञान और ऐश्वर्य पूर्णता पाई रे !
करते हैं गुणगान सभी मिल भाई रे !, श्रेष्ठ लोक में है प्रभु की प्रभुताई रे ! ॥110॥
ॐ ह्रीं श्री भगवते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'अर्हत्' कहते हैं जिनवर को भाई रे !, इन्द्रादिकृत पूजा प्रभु ने पाई रे !
करते हैं गुणगान सभी मिल भाई रे !, श्रेष्ठ लोक में है प्रभु की प्रभुताई रे ! ॥111॥
ॐ ह्रीं श्री अर्हते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

रज से सहित 'अरज' हैं जिन प्रभु भाई रे !, कर्म घातिया नाश किए प्रभु भाई रे !
करते हैं गुणगान सभी मिल भाई रे !, श्रेष्ठ लोक में है प्रभु की प्रभुताई रे ! ॥112॥
ॐ ह्रीं श्री अरजसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'विरज' नाम प्रभुवर ने पाया भाई रे !, कर्म धूलि को आप नशाते भाई रे !
करते हैं गुणगान सभी मिल भाई रे !, श्रेष्ठ लोक में है प्रभु की प्रभुताई रे ! ॥113॥
ॐ ह्रीं श्री विरजसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'शुचि' आपने शुचिता अनुपम पाई रे !, विशद आत्म शक्ति जिन प्रभु प्रगटाई रे !
करते हैं गुणगान सभी मिल भाई रे !, श्रेष्ठ लोक में है प्रभु की प्रभुताई रे ! ॥114॥
ॐ ह्रीं श्री शुचये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

आप 'तीर्थकृत' पदवी पाए भाई रे !, द्वादशांग के श्रुत कर्त्ता जिन भाई रे !
करते हैं गुणगान सभी मिल भाई रे !, श्रेष्ठ लोक में है प्रभु की प्रभुताई रे !॥115॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पाया 'केवल' ज्ञान आपने भाई रे !, मोह आवरण विघ्न नाशता भाई रे !
करते हैं गुणगान सभी मिल भाई रे !, श्रेष्ठ लोक में है प्रभु की प्रभुताई रे !॥116॥

ॐ ह्रीं श्री केवलिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सभी कहें 'ईशान' आपको भाई रे !, सर्व लोक की प्रभुता तुमने पाई रे !
करते हैं गुणगान सभी मिल भाई रे !, श्रेष्ठ लोक में है प्रभु की प्रभुताई रे !॥117॥

ॐ ह्रीं श्री ईशानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'पूजार्ह' कहाते हैं जिनवर सुखदायी रे !, श्रेष्ठ अर्चनायोग्य लोक में भाई रे !
करते हैं गुणगान सभी मिल भाई रे !, श्रेष्ठ लोक में है प्रभु की प्रभुताई रे !॥118॥

ॐ ह्रीं श्री पूजार्हाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'स्नातक' हैं प्रभु इस जग में भाई रे !, कर्म कलंक पंकता पूर्ण नसाई रे !
करते हैं गुणगान सभी मिल भाई रे !, श्रेष्ठ लोक में है प्रभु की प्रभुताई रे !॥119॥

ॐ ह्रीं श्री स्नातकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु मलादि हीन 'अमल' हैं भाई रे !, निर्मलता प्रभु पूर्ण रूप से पाई रे !
करते हैं गुणगान सभी मिल भाई रे !, श्रेष्ठ लोक में है प्रभु की प्रभुताई रे !॥120॥

ॐ ह्रीं श्री अमलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(वेसरी छन्द)

'अनन्तदीप्त' जिन नाथ कहाए, ज्ञान दीप्ति जग में फैलाए ।
सहस सूर्य सम कान्ती धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी॥121॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तदीप्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'ज्ञानात्मा' जिनवर को कहते, विशद ज्ञान में सदा विचरते ।
सहस सूर्य सम कान्ती धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी॥122॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिनवर 'स्वयंबुद्ध' कहलाए, स्वयं आप ही बोध जगाए ।
सहस सूर्य सम कान्ती धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी॥123॥

ॐ ह्रीं श्री स्वयंबुद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'प्रजापति' कहलाए स्वामी, सर्व प्रजा है तव अनुगामी ।
सहस सूर्य सम कान्ती धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी॥124॥

ॐ ह्रीं श्री प्रजापतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'मुक्त' आपने मुक्ति पाई, कर्म श्रृंखला पूर्ण नसाई ।
सहस सूर्य सम कान्ती धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी॥125॥

ॐ ह्रीं श्री मुक्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'शक्त' सहन परिषह करते हैं, उपसर्गों से न डरते हैं ।
सहस सूर्य सम कान्ती धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी॥126॥

ॐ ह्रीं श्री शक्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'निराबाध' बाधा परिहारी, हो उपसर्ग रहित अविकारी ।
सहस सूर्य सम कान्ती धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी॥127॥

ॐ ह्रीं श्री निराबाधाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'निष्कल' कल से हीन कहाए, ज्ञान कला में प्रभुता पाए ।
सहस सूर्य सम कान्ती धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी॥128॥

ॐ ह्रीं श्री निष्कलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'भुवनेश्वर' त्रिभुवन के स्वामी, जग के त्राता अन्तर्यामी ।
सहस सूर्य सम कान्ती धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी॥129॥

ॐ ह्रीं श्री भुवनेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अन्जन रहित 'निरंजन' जानो, कर्माब्जन न जिन के मानो ।
सहस सूर्य सम कान्ती धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी॥130॥

ॐ ह्रीं श्री निरंजनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘जगज्योति’ जिनवर कहलाए, केवलज्ञान ज्योति को पाए।
सहस्र सूर्य सम कान्ती धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी॥131॥

ॐ ह्रीं श्री जगज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘निरुक्तोक्ती’ नाम पुकारा, पूर्वापर अविरोधी प्यारा।
सहस्र सूर्य सम कान्ती धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी॥132॥

ॐ ह्रीं श्री निरुक्तोक्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ ‘निरामय’ आमय हीना, रहे हमेशा आप नवीना।
सहस्र सूर्य सम कान्ती धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी॥133॥

ॐ ह्रीं श्री निरामयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘अचलस्थिति’ न चलते भाई, निज में अचल रहे स्थाई।
सहस्र सूर्य सम कान्ती धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी॥134॥

ॐ ह्रीं श्री अचलस्थितये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ‘अक्षोभ्य’ न क्षोभ तिहारे, मोह क्षोभ नाशे प्रभु सारे।
सहस्र सूर्य सम कान्ती धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी॥135॥

ॐ ह्रीं श्री अक्षोभ्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ‘कूटस्थ’ कहाए भाई, सिद्ध शिला पर स्थिति पाई।
सहस्र सूर्य सम कान्ती धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी॥136॥

ॐ ह्रीं श्री कूटस्थाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘स्थाणु’ सम स्थित गाये, लोक शिखर के नाथ कहाए।
सहस्र सूर्य सम कान्ती धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी॥137॥

ॐ ह्रीं श्री स्थाणवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ‘अक्षय’ हैं क्षय न होते, ज्ञानानन्त कभी न खोते।
सहस्र सूर्य सम कान्ती धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी॥138॥

ॐ ह्रीं श्री अक्षयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु को आप ‘अग्रणी’ जानो, सारे जग से आगे मानो।
सहस्र सूर्य सम कान्ती धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी॥139॥

ॐ ह्रीं श्री अग्रण्ये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ ‘ग्रामिणी’ आप कहाए, जग को मोक्ष मार्ग दिखलाए।
सहस्र सूर्य सम कान्ती धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी॥140॥

ॐ ह्रीं श्री ग्रामण्ये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पद्धरी छन्द)

बने ‘नेता’ प्रभु जी अविकार, दिखाया जग को मुक्ति द्वार।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥141॥

ॐ ह्रीं श्री नेत्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘प्रणेता’ हो आगम के नाथ, झुका तव चरणों मेरा माथ।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥142॥

ॐ ह्रीं श्री प्रणेत्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहाए ‘न्यायशास्त्रवित्’ आप, करें हम नाम मंत्र का जाप।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥143॥

ॐ ह्रीं श्री न्यायशास्त्रविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु का नाम ‘शास्ता’ जान, दिए जग को उपदेश महान।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥144॥

ॐ ह्रीं श्री शास्त्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहाए ‘धर्मपति’ भगवान, प्रभु हैं श्रेष्ठ धर्म की खान।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥145॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिए जो ‘धर्म’ का शुभ उपदेश, नाम पाए प्रभु धर्म विशेष।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥146॥

ॐ ह्रीं श्री धर्म्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'धर्मात्मा' हो तुम एक, विधर्मी प्राणी कई अनेक।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥147॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे हैं 'धर्मतीर्थकृत' देव, किए जो धर्म प्रवर्तन एव।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥148॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मतीर्थकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहाते हैं 'वृषध्वज' जिनराज, लगाए प्रभु धर्म का ताज।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥149॥

ॐ ह्रीं श्री वृषध्वजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु कहलाते हैं 'वृषाधीश', धर्म के धारी श्रेष्ठ ऋशीष।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥150॥

ॐ ह्रीं श्री वृषाधीश नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन्हें 'वृषकेतु' कहते लोग, धर्म ध्वज का पाते संयोग।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥151॥

ॐ ह्रीं श्री वृषकेतवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वृषायुध' कहलाते जिन आप, नाश करते हो सारे पाप।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥152॥

ॐ ह्रीं श्री वृषायुधाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ने 'वृष' पाया शुभ नाम, धर्म के धारी तुम्हें प्रणाम।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥153॥

ॐ ह्रीं श्री वृषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ तुम 'वृषपति' श्रेष्ठ महान, धर्मधारी तुम रहे प्रधान।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥154॥

ॐ ह्रीं श्री वृषपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'भर्ता' हो जग के नाथ, भव्य जीवों का देते साथ।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥155॥

ॐ ह्रीं श्री भर्त्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहाए हैं 'वृषभांक' जिनेश, बैल है जिनका चिन्ह विशेष।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥156॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभांकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहाये 'वृषभोद्भव' जिनदेव, प्रवर्तन करते आप सदैव।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥157॥

ॐ ह्रीं श्री वृषोद्भवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'हिरण्यनाभि' कहलाते नाथ, रत्न वृष्टि हो गर्भ के साथ।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥158॥

ॐ ह्रीं श्री हिरण्यनाभये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहाए हैं 'भूतात्म' जिनेश, आत्म का कीन्हे ध्यान विशेष।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥159॥

ॐ ह्रीं श्री भूतात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेश्वर हैं 'भूभृत्' अविकार, करें सारे जग का उद्धार।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥160॥

ॐ ह्रीं श्री भूभृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द सार)

जिन्हें 'भूतभावन' कहते हैं, जीवों के हितकारी।
हाथ जोड़ हम वन्दन करते, जो हैं करुणाधारी॥161॥

ॐ ह्रीं श्री भूतभावनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रभव' मुक्ति में कारण जानो, भवि जीवों के भाई।
सुख-शांति के दाता जग में, प्रभु की है प्रभुताई॥162॥

ॐ ह्रीं श्री प्रभवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव से हुए मुक्त हे जिनवर, अतः 'विभव' कहलाए।
भव विशिष्ट पाकर हम भगवन, मुक्ति पाने आए॥163॥

ॐ ह्रीं श्री विभवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'भास्वान' ज्ञान के सूरज, ज्ञान दीप्ति के धारी।
लोकालोक प्रकाशित करते, मंगलमय अविकारी॥164॥

ॐ ह्रीं श्री भास्वते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यय उत्पाद ध्रौव्य मय जिनवर, 'भव' संज्ञा को पाए।
जो विभाव परिणमन नाशकर, शाश्वत भव को पाए॥165॥

ॐ ह्रीं श्री भवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चित् स्वरूप निज 'भाव' स्वभावी, परम भाव प्रगटाए।
भाव पारिणामिक प्रभु पाकर, सारे भाव नशाए॥166॥

ॐ ह्रीं श्री भावाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'भवान्तक' कहे गये हैं, सर्व भवों के नाशी।
पश्रम भव को पाने वाले, केवल ज्ञान प्रकाशी॥167॥

ॐ ह्रीं श्री भवान्तकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'हिरण्यगर्भ' कहलाए जिनवर, स्वर्ण कान्ति के धारी।
गर्भ समय में वृष्टि करते, इन्द्र हर्षते भारी॥168॥

ॐ ह्रीं श्री हिरण्यगर्भाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गर्भ समय में श्री के धारी, श्री जिन 'गरभ' कहाते।
शत् इन्द्रों से अतः जिनेश्वर, अतिशय पूजे जाते॥169॥

ॐ ह्रीं श्री गर्भाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु महान भव पाने वाले, 'प्रभूतविभव' कहलाए।
तीन लोक की छोड़ सम्पदा, शाश्वत सुख उपजाए॥170॥

ॐ ह्रीं श्री प्रभूतविभवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव का अन्त किया है प्रभु ने, अतः 'अभव' कहलाए।
तव चरणों में भव्य जीव कई, अभव सम्पदा पाए॥171॥

ॐ ह्रीं श्री अभवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ ! 'स्वयंप्रभु' आप लोक में, हो महिमा के धारी।
सर्व लोक की सर्व सम्पदा, चरण झुके आ सारी॥172॥

ॐ ह्रीं श्री स्वयंप्रभवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आतम शक्ति प्रगटाकर, 'प्रभूतात्म' कहलाए।
शाश्वत सुख चैतन्य स्वरूपी, स्वयं आप ही पाए॥173॥

ॐ ह्रीं श्री प्रभूतात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भूतनाथ' हैं सर्व जगत् में, सब जीवों के स्वामी।
ऋषि मुनि गणधर अनगारी, बनते तव अनुगामी॥174॥

ॐ ह्रीं श्री भूतनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगतत्प्रभु' हो सर्व जगत् में, सब जीवों के स्वामी।
सौख्य प्रदाता हैं जन-जन के, अतिशय अन्तर्यामी॥175॥

ॐ ह्रीं श्री जगत्प्रभवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्वादि' तुमने इस युग में, धर्म प्रवर्तन कीन्हा।
मोक्ष मार्ग पर बड़े स्वयं भी, भव्यों को पथ दीन्हा॥176॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वादये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो 'सर्वदृक' ! हो अविनाशी, सबको देखन हारे।
द्रव्य मूर्तामूर्त रहे जो, सर्व झलकते सारे॥177॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वदृशे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सार्व' आप कहलाए जिनवर, सर्व जगत के स्वामी।
सबका हित करने वाले हो, हे मुक्ति पथ गामी॥178॥

ॐ ह्रीं श्री सार्वाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'सर्वज्ञ' जगत के ज्ञाता, तुमने सब कुछ जाना।
द्रव्य और गुण पर्यायों को, ज्यों का त्यों पहिचाना ॥179॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्ही 'सर्वदर्शन' कहलाए, सर्व मतों के ज्ञाता।
कुमत विनाशी सुमत प्रकाशी, इस जग के हो त्राता ॥180॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वदर्शनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सखी छन्द)

'सर्वात्म' जगत हितकारी, सब झलके सृष्टि सारी।
तव नाम मंत्र को ध्यायेँ, हम शाश्वत सुख उपजाएँ ॥181॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सर्वलोकेश' कहाए, सबका हित करने आए।
तव नाम मंत्र को ध्यायेँ, हम शाश्वत सुख उपजाएँ ॥182॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वलोकेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'सर्वविद्' गाये, क्षण में सब कुछ दर्शाए।
तव नाम मंत्र को ध्यायेँ, हम शाश्वत सुख उपजाएँ ॥183॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'सर्वलोकजितस्वामी', तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।
तव नाम मंत्र को ध्यायेँ, हम शाश्वत सुख उपजाएँ ॥184॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वलोकजिते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सुगति' आपने पाई, जो सिद्ध गति कहलाई।
तव नाम मंत्र को ध्यायेँ, हम शाश्वत सुख उपजाएँ ॥185॥

ॐ ह्रीं श्री सुगतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'सुश्रुत' प्रभु कहलाए, सुश्रुत की गंग बहाए।
तव नाम मंत्र को ध्यायेँ, हम शाश्वत सुख उपजाएँ ॥186॥

ॐ ह्रीं श्री सुश्रुताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुश्रुत' हो सुनने वाले, ज्ञानी जग के रखवाले।
तव नाम मंत्र को ध्यायेँ, हम शाश्वत सुख उपजाएँ ॥187॥

ॐ ह्रीं श्री सुश्रुते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु हैं 'सुवाक्' के धारी, हैं वचन श्रेष्ठ गुणकारी।
तव नाम मंत्र को ध्यायेँ, हम शाश्वत सुख उपजाएँ ॥188॥

ॐ ह्रीं श्री सुवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु जगत गुरु हे 'सूरि', तुम विद्या पाए पूरी।
तव नाम मंत्र को ध्यायेँ, हम शाश्वत सुख उपजाएँ ॥189॥

ॐ ह्रीं श्री सूरये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'बहुश्रुत' सब श्रुत के ज्ञाता, प्रभु तीन लोक विख्याता।
तव नाम मंत्र को ध्यायेँ, हम शाश्वत सुख उपजाएँ ॥190॥

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्रुत' त्रिभुवन के ज्ञानी, आगम है तव श्रुत वाणी।
तव नाम मंत्र को ध्यायेँ, हम शाश्वत सुख उपजाएँ ॥191॥

ॐ ह्रीं श्री विश्रुताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्वतःपाद' जिन गाये, प्रभु लोक पूज्यता पाए।
तव नाम मंत्र को ध्यायेँ, हम शाश्वत सुख उपजाएँ ॥192॥

ॐ ह्रीं श्री विश्वतःपादाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'विश्वशीर्ष' कहलाए, शिवपुर में धाम बनाए।
तव नाम मंत्र को ध्यायेँ, हम शाश्वत सुख उपजाएँ ॥193॥

ॐ ह्रीं श्री विश्वशीर्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'शुचिश्रवा' हो स्वामी, हो ज्ञानी अन्तर्यामी।
तव नाम मंत्र को ध्यायेँ, हम शाश्वत सुख उपजाएँ ॥194॥

ॐ ह्रीं श्री शुचिश्रवसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो 'सहस्रशीर्ष' शुभ गाये, प्रभु सुख अनन्त उपजाए।
तव नाम मंत्र को ध्यायेँ, हम शाश्वत सुख उपजाएँ॥195॥

ॐ ह्रीं श्री सहस्रशीर्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'क्षेत्रज्ञ' तुम्हें कहते हैं, प्रभु सर्व क्षेत्र रहते हैं।
तव नाम मंत्र को ध्यायेँ, हम शाश्वत सुख उपजाएँ॥196॥

ॐ ह्रीं श्री क्षेत्रज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सहस्राक्ष' कहलाए, जो सब पदार्थ दर्शाए।
तव नाम मंत्र को ध्यायेँ, हम शाश्वत सुख उपजाएँ॥197॥

ॐ ह्रीं श्री सहस्राक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'सहस्रपात' जिन स्वामी, हो वीर बली जग नामी।
तव नाम मंत्र को ध्यायेँ, हम शाश्वत सुख उपजाएँ॥198॥

ॐ ह्रीं श्री सहस्रपदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'भूतभव्यभवद्भर्ता', त्रैकालिक सुख के कर्ता।
तव नाम मंत्र को ध्यायेँ, हम शाश्वत सुख उपजाएँ॥199॥

ॐ ह्रीं श्री भूतभव्यभवद्भर्त्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'विश्वविद्यामहेश्वर', तुम हो इस जग के ईश्वर।
तव नाम मंत्र को ध्यायेँ, हम शाश्वत सुख उपजाएँ॥200॥

ॐ ह्रीं श्री विश्वविद्यामहेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ्य

दिव्य भाषापति आदि करके, विश्व विद्यामहेश्वर अन्त।
नाममंत्र शत् के धारी जिन, होते तीर्थंकर भगवन्त॥
अतिशय श्रद्धा भक्ति द्वारा, नाम मंत्र का जाप करें।
कर्म महातम का छाया जो, सारा वह संताप हरेँ॥2॥

ॐ ह्रीं श्री दिव्यभाषापत्यादिशतनामेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शान्तिधारा (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

तृतीय वलयः

दोहा- स्थविष्ठ को आदिकर, पुराण पुरुषोत्तम नाम।

पुष्पाञ्जलि के भाव से, करते विशद प्रणाम॥

(इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(चाल-छन्द)

प्रभु 'स्थविष्ठ' कहलाए, अतिशय पूजा को पाए।

शुभ नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पति अनगारी॥201॥

ॐ ह्रीं श्री स्थविष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ नाम 'स्थविर' जानो, सिद्धों में स्थिर मानो।

तव नाम मंत्र को ध्यायेँ, हम शाश्वत सुख उपजाएँ॥202॥

ॐ ह्रीं श्री स्थविराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'ज्येष्ठ' सभी के दाता, तुम बने सभी के त्राता।

हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पति अनगारी॥203॥

ॐ ह्रीं श्री ज्येष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'प्रष्ठ' कहाते स्वामी, यह जग है तव अनुगामी।

हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पति अनगारी॥204॥

ॐ ह्रीं श्री प्रष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'प्रेष्ठ' ज्ञान के धारी, इस जग में मंगलकारी।

हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पति अनगारी॥205॥

ॐ ह्रीं श्री प्रेष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम हो 'वरिष्ठधी' नामी, हे प्रखर बुद्धि के स्वामी।

हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पति अनगारी॥206॥

ॐ ह्रीं श्री वरिष्ठधिये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘स्थेष्ठ’ आपको कहते, क्योंकि स्थिर हो रहते।

हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पति अनगारी ॥207॥

ॐ ह्रीं श्री स्थेष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम हो ‘गरिष्ठ’ हे ज्ञानी, प्रभु वीतराग विज्ञानी।

हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पति अनगारी ॥208॥

ॐ ह्रीं श्री गरिष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘बंहिष्ठ’ नाम प्रभु पाये, तब रूप अनेकों गाए।

हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पति अनगारी ॥209॥

ॐ ह्रीं श्री बंहिष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम ‘श्रेष्ठ’ गुणों के धारी, तब दुनियाँ बनी पुजारी।

हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पति अनगारी ॥210॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तब नाम ‘अणिष्ठ’ बखाना, यह सर्व चराचर जाना।

हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पति अनगारी ॥211॥

ॐ ह्रीं श्री अणिष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनको ‘गरिष्ठगी’ कहते, निज गौरव में जो रहते।

हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पति अनगारी ॥212॥

ॐ ह्रीं श्री गरिष्ठगिरे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए ‘विश्वभृज’ स्वामी, भव नाश किए जग नामी।

हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पति अनगारी ॥213॥

ॐ ह्रीं श्री विश्वभृषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए ‘विश्वसृज’ स्वामी, कई सृजन किए जग नामी।

हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पति अनगारी ॥214॥

ॐ ह्रीं श्री विश्वसृजे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘विश्वेद्’ के पद में आते, सुर नर मुनि शीश झुकाते।

हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पति अनगारी ॥215॥

ॐ ह्रीं श्री विश्वेशे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। (विश्वभृट् भी नाम आता है।)

जिनदेव ‘विश्वभुक्’ गाये, जग के रक्षक कहलाए।

हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पति अनगारी ॥216॥

ॐ ह्रीं श्री विश्वभुजे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन ‘विश्वनायक’ कहलाए, नीति का ज्ञान कराए।

हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पति अनगारी ॥217॥

ॐ ह्रीं श्री विश्वनायकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम हो प्रभु जग ‘विश्वाशी’, हे मोक्षपुरी के वासी।

हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पति अनगारी ॥218॥

ॐ ह्रीं श्री विश्वासिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ‘विश्वरूपात्मा’, कहलाते हो परमात्मा।

हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पति अनगारी ॥219॥

ॐ ह्रीं श्री विश्वरूपात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो आप ‘विश्वजित’ स्वामी, भव विजयी अन्तर्यामी।

हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पति अनगारी ॥220॥

ॐ ह्रीं श्री विश्वजिते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छन्द)

‘विजितान्तक’ आप कहे स्वामी, तुमने सब कर्म नशाए हैं।

जग में जितने भी मल्ल कहे, सब शरणागत बन आए हैं।

तब नाममंत्र की माला ही, भव रोग नशाने वाली है।

तीनों लोकों में जिन भक्ति, होती कुछ अजब निराली है ॥221॥

ॐ ह्रीं श्री विजितांतकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'विभव' आपका भव अनुपम, जिसकी महिमा का पार नहीं।
भव पार भक्ति कर हो जाते, प्राणी न भटके और कहीं॥
तव नाममंत्र की माला ही, भव रोग नशाने वाली है।
तीनों लोकों में जिन भक्ति, होती कुछ अजब निराली है॥222॥

ॐ ह्रीं श्री विभवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'विभय' आपके आगे भय, आने से भी भय खाते हैं।
जो चरण शरण को पा लेते, वह भी निर्भय हो जाते हैं॥
तव नाममंत्र की माला ही, भव रोग नशाने वाली है।
तीनों लोकों में जिन भक्ति, होती कुछ अजब निराली है॥223॥

ॐ ह्रीं श्री विभयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे कर्मजयी जिन 'वीर' प्रभो !, तुमने सब कर्म हराए हैं।
की विजय प्राप्त है कर्मों पर, जो शरणागत बन आये हैं॥
तव नाममंत्र की माला ही, भव रोग नशाने वाली है।
तीनों लोकों में जिन भक्ति, होती कुछ अजब निराली है॥224॥

ॐ ह्रीं श्री वीराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'विशोक' शुभ नाम आपका, शोक सभी हरने वाले।
भवि जीवों के रक्षक अनुपम, अनुपम हो प्रभु रखवाले॥
तव नाममंत्र की माला ही, भव रोग नशाने वाली है।
तीनों लोकों में जिन भक्ति, होती कुछ अजब निराली है॥225॥

ॐ ह्रीं श्री विशोकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विजर' वृद्ध न होते स्वामी, आप जगाते केवलज्ञान।
पुण्य पुरुष बनकर हरते हो, भवि जीवों का तुम अज्ञान॥
तव नाममंत्र की माला ही, भव रोग नशाने वाली है।
तीनों लोकों में जिन भक्ति, होती कुछ अजब निराली है॥226॥

ॐ ह्रीं श्री विजराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अजरन' हो तुम जीर्ण न होते, रहते तीनों काल समान।
परमानन्द सुखों में रत हो, पाये वीतराग विज्ञान॥
तव नाममंत्र की माला ही, भव रोग नशाने वाली है।
तीनों लोकों में जिन भक्ति, होती कुछ अजब निराली है॥227॥

ॐ ह्रीं श्री अजरते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'विराग' तुम राग रहित हो, नहीं राग का नाम निशान।
वीतराग विज्ञानी होकर, बने ज्ञान के कोष महान॥
तव नाममंत्र की माला ही, भव रोग नशाने वाली है।
तीनों लोकों में जिन भक्ति, होती कुछ अजब निराली है॥228॥

ॐ ह्रीं श्री विरागाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विरत' आप हो जग भोगों से, योगी बनकर कीन्हा ध्यान।
वीतरागता धारण करके, बने आप अर्हत् भगवान॥
तव नाममंत्र की माला ही, भव रोग नशाने वाली है।
तीनों लोकों में जिन भक्ति, होती कुछ अजब निराली है॥229॥

ॐ ह्रीं श्री विरताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'असंग' परिग्रह के त्यागी, बने आप अविकारी संत।
निज स्वभाव में लीन हुए तब, ज्ञानी बने आप अरहंत॥
तव नाममंत्र की माला ही, भव रोग नशाने वाली है।
तीनों लोकों में जिन भक्ति, होती कुछ अजब निराली है॥230॥

ॐ ह्रीं श्री असंगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'विविक्त' विषयों के त्यागी, निज स्वभाव को पाया है।
कर्म श्रृंखला नाश प्रभु ने, केवल ज्ञान जगाया है॥
तव नाममंत्र की माला ही, भव रोग नशाने वाली है।
तीनों लोकों में जिन भक्ति, होती कुछ अजब निराली है॥231॥

ॐ ह्रीं श्री विविक्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हें 'वीतमत्सर' कहते हैं, जग में जो हैं ज्ञानी जीव ।
भक्ति भाव से अर्चा करके, पुण्य कमाते भव्य अतीव ॥
तव नाममंत्र की माला ही, भव रोग नशाने वाली है ।
तीनों लोकों में जिन भक्ति, होती कुछ अजब निराली है ॥232 ॥

ॐ ह्रीं श्री वीतमत्सराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे 'विनेयजनताबन्धु' तुम, करते हो जग का कल्याण ।
मोक्ष मार्ग की शिक्षा देकर, कर देते हो उनका त्राण ॥
तव नाममंत्र की माला ही, भव रोग नशाने वाली है ।
तीनों लोकों में जिन भक्ति, होती कुछ अजब निराली है ॥233 ॥

ॐ ह्रीं श्री विनेयजनताबन्धवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(शेर छन्द)

'विलीनाशेषकल्मष' प्रभु जी कहे गये, कर्म लगे थे सभी वह आपने क्षये ।
तव नाम मंत्र का प्रभु शुभ जाप हम करें, हम कर्म श्रृंखला प्रभुजी शीघ्र परि हों ॥234 ॥

ॐ ह्रीं श्री विलीनाशेषकल्मषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

करके 'वियोग' कर्म का स्वतंत्र हो गये, संदेश इस जगत को तुमने दिए नए ।
तव नाम मंत्र का प्रभु शुभ जाप हम करें, हम कर्म श्रृंखला प्रभुजी शीघ्र परि हों ॥235 ॥

ॐ ह्रीं श्री वियोगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

योगों से हीन हो गये हैं 'योगविद' सभी, शुभ योग नहीं धार सके नाथ हम कभी ।
तव नाम मंत्र का प्रभु शुभ जाप हम करें, हम कर्म श्रृंखला प्रभुजी शीघ्र परि हों ॥236 ॥

ॐ ह्रीं श्री योगविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तुम ज्ञान पूर्ण हो 'विद्वान' कहाए, अतएव ज्ञान पाने तव द्वार हम आए ।
तव नाम मंत्र का प्रभु शुभ जाप हम करें, हम कर्म श्रृंखला प्रभुजी शीघ्र परि हों ॥237 ॥

ॐ ह्रीं श्री विदुषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कहते 'विधाता' आपको प्राणी सभी यहाँ, हो धर्म सृष्टि के कर्ता लोक में महाँ ।
तव नाम मंत्र का प्रभु शुभ जाप हम करें, हम कर्म श्रृंखला प्रभुजी शीघ्र परि हों ॥238 ॥

ॐ ह्रीं श्री विधात्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जग को विधि बताई है श्रेष्ठतम अहा, अतएव 'सुविधि' नाम प्रभु आपका रहा ।
तव नाम मंत्र का प्रभु शुभ जाप हम करें, हम कर्म श्रृंखला प्रभुजी शीघ्र परि हों ॥239 ॥

ॐ ह्रीं श्री सुविधये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पाया है ज्ञान केवल तुमने 'सुधी' यहाँ, अतएव चरण आपके यह पूजता जहाँ ।
तव नाम मंत्र का प्रभु शुभ जाप हम करें, हम कर्म श्रृंखला प्रभुजी शीघ्र परि हों ॥240 ॥

ॐ ह्रीं श्री सुधिये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे 'क्षांतिभाक्' जग में सबसे महान् हो, प्रभु शांत रूप क्षांति के तुम निधान हो ।
तव नाम मंत्र का प्रभु शुभ जाप हम करें, हम कर्म श्रृंखला प्रभुजी शीघ्र परि हों ॥241 ॥

ॐ ह्रीं श्री क्षांतिभाजे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे नाथ 'पृथ्वीमूर्ति' तुमको कहा गया, तुम लोकवर्ती जीवों पर धारते दया ।
तव नाम मंत्र का प्रभु शुभ जाप हम करें, हम कर्म श्रृंखला प्रभुजी शीघ्र परि हों ॥242 ॥

ॐ ह्रीं श्री पृथ्वीमूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे 'शांतिभाक्' ! तुमने संदेश जो दिया, जीवों ने मार्ग पावन उससे ग्रहण किया ।
तव नाम मंत्र का प्रभु शुभ जाप हम करें, हम कर्म श्रृंखला प्रभुजी शीघ्र परि हों ॥243 ॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिभाजे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'सलिलात्मक' प्रभु जी शुभ नाम पाए हैं, जल के समान शीतल प्रभु जी कहाए हैं ।
तव नाम मंत्र का प्रभु शुभ जाप हम करें, हम कर्म श्रृंखला प्रभुजी शीघ्र परि हों ॥244 ॥

ॐ ह्रीं श्री सलिलात्मकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे 'वायुमूर्ति' ! तुम तो वायु समान हो, भक्तों के आप जग में जीवन्त प्राण हो ।
तव नाम मंत्र का प्रभु शुभ जाप हम करें, हम कर्म श्रृंखला प्रभुजी शीघ्र परि हों ॥245 ॥

ॐ ह्रीं श्री वायुमूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे नाथ ! 'असंगात्मा' न संग कुछ रहा, अतएव असंगात्मा शुभ नाम तव रहा ।
तव नाम मंत्र का प्रभु शुभ जाप हम करें, हम कर्म शृंखला प्रभुजी शीघ्र परि हों ॥246॥
ॐ ह्रीं श्री असंगात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे 'बद्धिमूर्ति' अग्नि सम आप कहाए, हे नाथ ! कर्म ईधन तुम पूर्ण जलाए ।
तव नाम मंत्र का प्रभु शुभ जाप हम करें, हम कर्म शृंखला प्रभुजी शीघ्र परि हों ॥247॥
ॐ ह्रीं श्री बद्धिमूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तुमको 'अधर्मधक्' प्रभु इस लोक में कहा, कीन्हा अधर्म तुमने सब भस्म प्रभु अहा ।
तव नाम मंत्र का प्रभु शुभ जाप हम करें, हम कर्म शृंखला प्रभुजी शीघ्र परि हों ॥248॥
ॐ ह्रीं श्री अधर्मदहे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तुमको 'सुयज्वा' कहते हैं लोक में सभी, कर्मों का बन्ध होगा तुमको नहीं कभी ।
तव नाम मंत्र का प्रभु शुभ जाप हम करें, हम कर्म शृंखला प्रभुजी शीघ्र परि हों ॥249॥
ॐ ह्रीं श्री सुयज्ज्वने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तुमको प्रभुजी कहते 'यजमानात्मा', रहते हो लीन निज में जिन देव महात्मा ।
तव नाम मंत्र का प्रभु शुभ जाप हम करें, हम कर्म शृंखला प्रभुजी शीघ्र परि हों ॥250॥
ॐ ह्रीं श्री यजमानात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(छन्द)

'सुत्वा' आप कहाते हो, निजानन्द रस पाते हो ।
नाम आपका ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं ॥251॥
ॐ ह्रीं श्री सुत्वने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'सुत्रामपूजित' आप कहे, शत इन्द्रों से पूज्य रहे ।
नाम आपका ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं ॥252॥
ॐ ह्रीं श्री सुत्रामपूजिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'ऋत्विक्' तुम कहलाते हो, जग को मार्ग दिखाते हो ।
नाम आपका ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं ॥253॥
ॐ ह्रीं श्री ऋत्विजे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'यज्ञपति' तवनाम अहा, सारे जग में पूज्य रहा ।
नाम आपका ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं ॥254॥
ॐ ह्रीं श्री यज्ञपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'याज्य' आपको कहते हैं, भक्त शरण में रहते हैं ।
नाम आपका ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं ॥255॥
ॐ ह्रीं श्री याज्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कहलाते 'यज्ञांग' प्रभो ! हो पूजा के हेतु विभो ।
नाम आपका ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं ॥256॥
ॐ ह्रीं श्री यज्ञांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'अमृत' तुम कहलाते हो, सौख्य अनन्त दिलाते हो ।
नाम आपका ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं ॥257॥
ॐ ह्रीं श्री अमृताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'हवी' नाम को पाये हो, सारे अशुभ जलाए हो ।
नाम आपका ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं ॥258॥
ॐ ह्रीं श्री हविषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'व्योममूर्ति' तव नाम अहा, कर्म लेप न लेश रहा ।
नाम आपका ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं ॥259॥
ॐ ह्रीं श्री व्योममूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'अमूर्तात्मा' हो स्वामी, ज्ञानी हो अन्तर्यामी ।
नाम आपका ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं ॥260॥
ॐ ह्रीं श्री अमूर्तात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु 'निर्लेप' कहे जग में, आगे बढ़े मोक्ष मग में ।
नाम आपका ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं ॥261॥
ॐ ह्रीं श्री निर्लेपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘निर्मल’ तुम कहलाते हो, तुम ही कर्म नशाते हो।

नाम आपका ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥262॥

ॐ ह्रीं श्री निर्मलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘अचल’ तुम्हे कहते प्राणी, पाए तुम मुक्ति रानी।

नाम आपका ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥263॥

ॐ ह्रीं श्री अचलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘सोममूर्ति’ तुम हो स्वामी, हो प्रशान्त जग में नामी।

नाम आपका ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥264॥

ॐ ह्रीं श्री सोममूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम ‘सुसौम्यात्मा’ गाये, सौम्य छवि अतिशय पाये।

नाम आपका ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥265॥

ॐ ह्रीं श्री सुसौम्यात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘सूर्यमूर्ति’ हे प्रभो तुम्हीं, महा तेज मय रहे तुम्हीं।

नाम आपका ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥266॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यमूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘महाप्रभ’ तुम कहलाते हो, तुम प्रभाव दिखलाते हो।

नाम आपका ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥267॥

ॐ ह्रीं श्री महाप्रभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ ‘मंत्रविद्’ हो स्वामी, ज्ञानी हो अन्तर्यामी।

नाम आपका ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥268॥

ॐ ह्रीं श्री मंत्रविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हीं ‘मंत्रकृत’ हो आले, सभी मंत्र रचने वाले।

नाम आपका ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥269॥

ॐ ह्रीं श्री मंत्रकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तुम ‘मंत्री’ कहलाए, सभी यंत्र तुमने पाये।

नाम आपका ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥270॥

ॐ ह्रीं श्री मंत्रिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

‘मंत्रमूर्ति’ भगवान, कहलाते हो तुम प्रभु।

करूँ विशद गुणगान, सप्ताक्षरी हो मूर्तिमय॥271॥

ॐ ह्रीं श्री मंत्रमूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ‘अनन्त’ तक नाम, अनुपम पाया आपने।

पद में करूँ प्रणाम, तीन योग से तब चरण॥272॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तज्ञे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे ‘स्वतंत्र’ जिनराज, कर्म बन्ध से हीन हो।

स्व में करते राज, तंत्र देह को मानकर॥273॥

ॐ ह्रीं श्री स्वतंत्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो ‘तंत्रकृत’ आप, मंत्र-तंत्र कर्त्ता कहे।

करूँ आपका जाप, मुक्ति पाने के लिए॥274॥

ॐ ह्रीं श्री तंत्रकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘स्वान्त’ तुम्हीं हो नाथ, अन्त किए हो कर्म का।

चरण झुकाएँ माथ, तब गुण पाने के लिए॥275॥

ॐ ह्रीं श्री स्वान्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘कृतान्तान्त’ शुभ नाम, पाया है जिनदेव ने।

पद में करें प्रणाम, किए कर्म का अन्त तुम॥276॥

ॐ ह्रीं श्री कृतान्तान्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे ‘कृतान्तकृत’ देव, आगम के कर्त्ता तुम्हीं।

वन्दूँ तुम्हें सदैव, शिव सुख पाने के लिए॥277॥

ॐ ह्रीं श्री कृतान्तकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘कृती’ पुण्यफल रूप, अनन्त चतुष्टय के धनी।

पाये निज स्वरूप, शिवपुर वासी बन गये॥278॥

ॐ ह्रीं श्री कृतिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'कृतार्थ' भगवान, सफल करो पुरुषार्थ सब ।
करें विशद गुणगान, पुरुषार्थ सिद्धि के लिए ॥279॥

ॐ ह्रीं श्री कृतार्थाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हो जिनेन्द्र 'सत्कृत्य', इन्द्र करें सत्कार तव ।
सुर नर चक्री भृत्य, बने आपके चरण में ॥280॥

ॐ ह्रीं श्री सत्कृत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हुए आप 'कृतकृत्य', आत्म कार्य सब कर चुके ।
सारा लोक अनित्य, जान स्वयं को ध्याए हो ॥281॥

ॐ ह्रीं श्री कृतकृत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तुम 'कृतक्रतू' जिनेश, पूजा करते इन्द्र भी ।
पाये सुफल विशेष, प्राणी जो अर्चा करें ॥282॥

ॐ ह्रीं श्री कृतक्रतवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु आप हो 'नित्य', सादी आप अनन्त हो ।
प्राणी रहे अनित्य, तव पद से जो दूर हैं ॥283॥

ॐ ह्रीं श्री नित्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'मृत्युञ्जय' शुभ नाम, मृत्यु को जीते प्रभो ! ।
शत-शत बार प्रणाम, तव पद पाने के लिए ॥284॥

ॐ ह्रीं श्री मृत्युञ्जयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

आप 'अमृत्यु' नाथ, मरण रहित हो जिन प्रभो ।
दीजे हमको साथ, हम भी तुम जैसे बनें ॥285॥

ॐ ह्रीं श्री अमृत्यवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'अमृतात्मा' आप, कहलाते त्रय लोक में ।
करें आपका जाप, तुम सम बनने के लिए ॥286॥

ॐ ह्रीं श्री अमृतात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'अमृतोद्भव' नाम, पाया जिनवर आपने ।
अमृत है शिवधाम, पाना हम भी चाहते ॥287॥

ॐ ह्रीं श्री अमृतोद्भवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'ब्रह्मनिष्ठ' हे देव !, ब्रह्म आप कहलाए हो ।
वन्दन करें सदैव, ब्रह्मादि नर नाथ सब ॥288॥

ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मनिष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'परंब्रह्म' उत्कृष्ट, केवल ज्ञानी बन गये ।
रहे सभी को इष्ट, ध्याते हैं अतएव सब ॥289॥

ॐ ह्रीं श्री परंब्रह्मणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'ब्रह्मात्मा' शिव रूप, आतम ज्ञानी एक तुम ।
अविचल ज्ञान स्वरूप, सर्व गुणों से पूर्ण हो ॥290॥

ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(भुजंगप्रयात छन्द)

तुम्हीं 'ब्रह्मसम्भव' कहाये हो स्वामी, करे भक्ति तव जो बने मोक्ष गामी ।
प्रभो नाम है तव महा सौख्यकारी, मिले ऋद्धि-सिद्धि बने ज्ञान धारी ॥291॥

ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मसंभवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'महाब्रह्मपति' तुम कहाते हो स्वामी, झुके इन्द्र गणधर चरण आके नामी ।
प्रभो नाम है तव महा सौख्यकारी, मिले ऋद्धि-सिद्धि बने ज्ञान धारी ॥292॥

ॐ ह्रीं श्री महाब्रह्मपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभो ! आपको लोग 'ब्रह्मोद्' कहते, सदा आप परं ब्रह्म में लीन रहते ।
प्रभो नाम है तव महा सौख्यकारी, मिले ऋद्धि-सिद्धि बने ज्ञान धारी ॥293॥

ॐ ह्रीं श्री ऋत्विजे ब्रह्मोद्दे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'महाब्रह्मपदेश्वर' हे मुक्ति के ईश्वर, सभी धन्य होते हैं तव वन्दना कर ।
प्रभो नाम है तव महा सौख्यकारी, मिले ऋद्धि-सिद्धि बने ज्ञान धारी ॥294॥

ॐ ह्रीं श्री महाब्रह्मपदेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘सुप्रसन्न’ प्रभु की छवि है निराली, प्राणी को सुख-शांति शुभ देनेवाली ।
प्रभो नाम है तव महा सौख्यकारी, मिले ऋद्धि-सिद्धि बने ज्ञान धारी ॥295 ॥

ॐ ह्रीं श्री सुप्रसन्नाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘प्रसन्नात्मा’ है प्रभो नाम प्यारा, सभी प्राणियों को दिए तुम सहारा ।
प्रभो नाम है तव महा सौख्यकारी, मिले ऋद्धि-सिद्धि बने ज्ञान धारी ॥296 ॥

ॐ ह्रीं श्री प्रसन्नात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘ज्ञानधर्मदमप्रभु’ कहाये हो स्वामी, करें ध्यान तव जो बने मोक्ष गामी ।
प्रभो नाम है तव महा सौख्यकारी, मिले ऋद्धि-सिद्धि बने ज्ञान धारी ॥297 ॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानधर्मदमप्रभवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘प्रशमात्मा’ आपने नाम पाया, प्रशम गुण प्रभु के हृदय में समाया ।
प्रभो नाम है तव महा सौख्यकारी, मिले ऋद्धि-सिद्धि बने ज्ञान धारी ॥298 ॥

ॐ ह्रीं श्री प्रशमात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘प्रशान्तात्मा’ हो जहाँ में निराले, तुम हो प्रशान्ति प्रभु देने वाले ।
प्रभो नाम है तव महा सौख्यकारी, मिले ऋद्धि-सिद्धि बने ज्ञान धारी ॥299 ॥

ॐ ह्रीं श्री प्रशान्तात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तुम ‘पुराणपुरुषोत्तम’ जग में कहाये, पुराणों में वर्णन तुम्हारा ही आये ॥
प्रभो नाम है तव महा सौख्यकारी, मिले ऋद्धि-सिद्धि बने ज्ञान धारी ॥300 ॥

ॐ ह्रीं श्री पुराणपुरुषोत्तमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

महार्घ्य

‘स्थविष्ठ’ को आदि करके, अन्त पुराण पुरुषोत्तम नाम ।

सौ नामों का जाप स्तवन, पूजा कर पाया विश्राम ॥

नाम मंत्र की महिमा प्रभु के, सारे जग में अपरम्पार ।

भाव सहित हम अर्घ्य चढ़ाते, वन्दन करते बारम्बार ॥3 ॥

ॐ ह्रीं श्री स्थविष्ठादिशतनामेभ्यः नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शांतिधारा (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

चतुर्थ वलयः

दोहा- महाशोक ध्वजादि शत, श्री जिनेन्द्र के नाम ।

पूजा विधि के पूर्व में, करते विशद प्रणाम ॥

(इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(सोरठा)

‘महाशोकध्वज’ नाम, पाया है प्रभु आपने ।

तरु अशोक तल धाम, समवशरण में शोभता ॥301 ॥

ॐ ह्रीं श्री महाशोकध्वजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

रहे शोक से हीन, प्रभु अशोक कहलाए हैं ।

निज में रहते लीन, शोक निवारी जिन कहे ॥302 ॥

ॐ ह्रीं श्री अशोकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘क’ कहलाते आप, महिमा अपरम्पार है ।

करें आपका जाप, मुक्ति पाने के लिए ॥303 ॥

ॐ ह्रीं श्री काय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘स्रष्टा’ तुम हे नाथ !, सृष्टी के कर्त्ता कहे ।

चरण झुकाएँ माथ, अर्घ्य चढ़ाते हैं यहाँ ॥304 ॥

ॐ ह्रीं श्री स्रष्ट्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

आसन पद्म महान, पाया है प्रभु आपने ।

किए जगत कल्याण, अतः ‘पद्मविष्टर’ कहे ॥305 ॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मविष्टराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिनवर हे ‘पद्मेश’, कहलाते हो लोक में ।

मुक्ति का संदेश, पाये हैं जग में सभी ॥306 ॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘पद्मसंभूति’ नाम, आगम में प्रभु का कहा।
बारम्बार प्रणाम, करते हैं हम भाव से ॥307॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मसंभूतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘पद्मनाभि’ जिनराज, नाभि पद्म समान तव।
पूर्ण करो सब काज, आप त्रिलोकी नाथ हो ॥308॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मनाभये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप ‘अनुत्तर’ देव, तुम सम कोई भी नहीं।
अक्षय रहे सदैव, गुण गण सारे आप में ॥309॥

ॐ ह्रीं श्री अनुत्तराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘पद्मयोनि’ शुभ नाम, जिनवर पाया आपने।
योनि पद्म समान, जिससे जन्मे आप हो ॥310॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मयोनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘जगयोनि’ हे नाथ !, तीन लोक में श्रेष्ठ हो।
चरण झुकाएँ माथ, उत्पत्ति जग में किए ॥311॥

ॐ ह्रीं श्री जगदयोनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘इत्य’ नाम को पाय, पूज्य हुए संसार में।
सादर शीश झुकाय, हम भी वन्दन कर रहे ॥312॥

ॐ ह्रीं श्री इत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं ‘स्तुत्य’ जिनेश, सुर नर इन्द्र मुनीन्द्र से।
दिए जगत उपदेश, वीतराग का जो परम ॥313॥

ॐ ह्रीं श्री स्तुत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘स्तुतिश्वर’ हे नाथ !, स्तुति करने आये हम।
चरण झुकाये माथ, हाथ जोड़ तव चरण में ॥314॥

ॐ ह्रीं श्री स्तुतीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘स्तवनाहं’ जिनेन्द्र !, आप स्तवन योग्य हो।
इन्द्र और राजेन्द्र, करते हैं तव वन्दना ॥315॥

ॐ ह्रीं श्री स्तवनाहंय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘हृषीकेश’ उपदेश, दिया लोक में आपने।
नाशे कर्म अशेष, इन्द्रिय मन को जीतकर ॥316॥

ॐ ह्रीं श्री हृषीकेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ! आप ‘जितजेय’, मोहवली को जीतकर।
जग में हुए अजेय, सर्व जहाँ में श्रेष्ठतम ॥317॥

ॐ ह्रीं श्री जितजेयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘कृतक्रिय’ करने योग्य, कार्य किए संसार के।
छोड़े सर्व अयोग्य, नहीं योग्य थे आपके ॥318॥

ॐ ह्रीं श्री कृतक्रियाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो ! ‘गणाधिप’ आप, द्वादश गण के श्रेष्ठतम।
करें नाम का जाप, मुक्ति पाने के लिए ॥319॥

ॐ ह्रीं श्री गणाधिपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व लोक में श्रेष्ठ, ‘गणज्येष्ठ’ है नाम तव।
पाया नाम यथेष्ट, गुण गण धारी आपने ॥320॥

ॐ ह्रीं श्री गणज्येष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

हो गणना के योग्य तुम, ‘गण्य’ आपका नाम।
लाख चौरासी गुण सहित, तव पद करूँ प्रणाम ॥321॥

ॐ ह्रीं श्री गण्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘पुण्य’ आपका नाम शुभ, हो तुम पूर्ण पवित्र।
आप सभी के हो प्रभु, कोई शत्रु न मित्र ॥322॥

ॐ ह्रीं श्री पुण्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘गणाग्रणी’ तुमने दिया, शिव पथ का उपदेश।
मुक्ति पथ पर बढ़ चले, धार दिगम्बर भेष ॥323॥

ॐ ह्रीं श्री गणाग्रण्ये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण अनन्त के कोष तुम, अतः ‘गुणाकर’ नाम।
सार्थक पाया आपने, तव पद करूँ प्रणाम ॥324॥

ॐ ह्रीं श्री गुणाकराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो ! ‘गुणाम्बोधी’ कहे, श्रेष्ठ गुणों की खान।
लाख चौरासी आपने, पाये सुगुण महान ॥325॥

ॐ ह्रीं श्री गुणाम्बोधये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे ‘गुणाज्ञ’ गुणवान तुम, श्रेष्ठ जगत के ईश।
सब दोषों से हीन हो, अतः झुकाएँ शीश ॥326॥

ॐ ह्रीं श्री गुणाज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘गुणनायक’ गुण के धनी, गुण मणि आप विशाल।
तव गुण पाने के लिए, गाते हम जयमाल ॥327॥

ॐ ह्रीं श्री गुणनायकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्त्वादि गुण आदरी, ‘गुणादरी’ हे नाथ !।
सत्त्वप्राप्त गुण हों मुझे, चरण झुकाते माथ ॥328॥

ॐ ह्रीं श्री गुणादरिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रज तम आदि विभाव गुण, सर्व नशाए आप।
अतः ‘गुणोच्छेदी’ हुए, मुझे करो निष्पाप ॥329॥

ॐ ह्रीं श्री गुणोच्छेदिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैभाविक गुण हीन तुम, ‘निर्गुण’ आप महान।
ज्ञानादि गुण धारते, जग में रहे प्रधान ॥330॥

ॐ ह्रीं श्री निर्गुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए प्रभु ‘पुण्यगी’, पावन वाणी धार।
पावन वाणी हो मेरी, नमन अनन्तो बार ॥331॥

ॐ ह्रीं श्री पुण्यगिरे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ गुणों को धारकर, पाए ‘गुण’ प्रभु नाम।
भव्य जीव अतएव सब, करते तुम्हें प्रणाम ॥332॥

ॐ ह्रीं श्री गुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे ‘शरण्य’ तव चरण की, शरण जिसे मिल जाए।
ऋद्धि-सिद्धि सुख प्राप्त कर, निश्चय मुक्ति पाए ॥333॥

ॐ ह्रीं श्री शरण्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘पुण्यवाक्’ प्रभु आपके, जग को करें निहाल।
सुख-शांति आनन्द दे, कर देते खुशहाल ॥334॥

ॐ ह्रीं श्री पुण्यवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो पावन इस लोक में, ‘पूत’ आपका नाम।
पावन हमको भी करो, बारम्बार प्रणाम ॥335॥

ॐ ह्रीं श्री पूताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे ‘वरेण्य’ मुक्ति पति, मुक्ति रमा के कंत।
सर्वश्रेष्ठ परमात्मा, किए कर्म का अंत ॥336॥

ॐ ह्रीं श्री वरेण्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ ! ‘पुण्यनायक’ तुम्हीं, सकल पुण्य के ईश।
श्रेष्ठ पुण्य का दान दो, चरण झुकाएँ शीश ॥337॥

ॐ ह्रीं श्री पुण्यनायकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप नहीं गणनीय हो, हे ‘अगण्य’ जिनराज।
हमको भी निज सम करो, आन सम्हारो काज ॥338॥

ॐ ह्रीं श्री अगण्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'पुण्यधी' आप हो, बुद्धि पुण्य स्वरूप।
मम बुद्धि को शुद्ध कर, प्रकट करो निज रूप॥339॥

ॐ ह्रीं श्री पुण्यधिये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गुण्य' आपका नाम है, श्रेष्ठ गुणों के नाथ।
पूर्ण गुणी हम बन सकें, नाथ निभाओ साथ॥340॥

ॐ ह्रीं श्री गुण्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाप शाप को नाशकर, हुए 'पुण्यकृत' आप।
नाम जाप कर आपका, हो जाएँ निष्पाप॥341॥

ॐ ह्रीं श्री पुण्यकृत नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'पुण्यशासन' तुम्हीं, तुम्हीं पुण्य के कोष।
तुम्हें छोड़ते जीव यह, है भारी अफसोस॥342॥

ॐ ह्रीं श्री पुण्यशासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धर्माराम' यह नाम शुभ, पाए श्री जिनेश।
धर्म से हो आराम सुख, कहते हैं तीर्थेश॥343॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मरामाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मूलोत्तर गुण के धनी, श्री जिनेन्द्र 'गुणग्राम'।
ऋद्धि-सिद्धि श्री प्राप्त जिन, पाये हैं यह नाम॥344॥

ॐ ह्रीं श्री गुणग्रामाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्य पाप से हीन तव, 'पुण्यापुण्यनिरोध'।
रत्नत्रय से ध्यान कर, स्वयं जगाए बोध॥345॥

ॐ ह्रीं श्री पुण्यापुण्यनिरोधाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

'पापापेत' नाम प्रभु पाए, पाप रहित निष्पाप कहाए।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ॥346॥

ॐ ह्रीं श्री पापापेताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'विपापात्मा' कहलाए, पाप कर्म सब दूर भगाए।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ॥347॥

ॐ ह्रीं श्री विपापात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हें 'विपाप्य' कहते प्राणी, है निर्दोष आपकी वाणी।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ॥348॥

ॐ ह्रीं श्री विपाप्य नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'वीतकल्मष' कहलाए, कल्मष धो कर शुद्धि पाए।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ॥349॥

ॐ ह्रीं श्री वीतकल्मषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'निर्द्वंद्व' द्वन्द्व के नाशी, परिग्रह हीन रहे अविनाशी।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ॥350॥

ॐ ह्रीं श्री निर्द्वंदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निर्मद' मद को तुमने नाशा, अतिशय केवलज्ञान प्रकाशा।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ॥351॥

ॐ ह्रीं श्री निर्मदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शांत' किए उपशांत कषाएँ, जिनकी महिमा हम भी गाएँ।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ॥352॥

ॐ ह्रीं श्री शांताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'निर्मोह' मोह के त्यागी, सिद्ध सनातन वसु गुणभागी।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ॥353॥

ॐ ह्रीं श्री निर्मोहाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निरुपद्रव' उपद्रव के नाशी, सिद्ध श्री जिन शिवपुर वासी।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ॥354॥

ॐ ह्रीं श्री निरुपद्रवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘निर्निमेष’ एकटक ही लखते, नहीं कभी भी पलक झपकते ।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ ॥355॥

ॐ ह्रीं श्री निर्निमेषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘निराहार’ आहार न करते, क्षुधा व्याधि औरों की हरते ।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ ॥356॥

ॐ ह्रीं श्री निराहाराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

क्रिया रहित ‘निष्क्रिय’ कहलाए, क्रियावान को मुक्ति दिलाए ।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ ॥357॥

ॐ ह्रीं श्री निष्क्रियाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘निरुपल्लव’ जी विघ्न नशाए, तब अर्चा को हम भी आए ।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ ॥358॥

ॐ ह्रीं श्री निरुपल्लवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘निष्कलंक’ अकलंक कहे हैं, कोई कलंक भी नहीं रहे हैं ।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ ॥359॥

ॐ ह्रीं श्री निष्कलंकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभो ! ‘निरस्तैना’ आप कहाए, तब पद वन्दन करने आए ।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ ॥360॥

ॐ ह्रीं श्री निरस्तैनसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘निर्धूतागस्’ नाम आपका, रहा नाम न कोई पाप का ।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ ॥361॥

ॐ ह्रीं श्री निर्धूतागसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

आस्रवहीन ‘निरास्रव’ स्वामी, आप हुए प्रभु अन्तर्यामी ।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ ॥362॥

ॐ ह्रीं श्री निरास्रवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे ‘विशाल’ ! तब अन्त नहीं है, तुम सम कोई भगवंत नहीं है ।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ ॥363॥

ॐ ह्रीं श्री विशालाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘विपुलज्योति’ हे जिनवर ! मेरे, शीश झुकाएँ पद में तेरे ।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ ॥364॥

ॐ ह्रीं श्री विपुलज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘अतुल’ आपकी तुलना सोई, कर न सके लोक में कोई ।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ ॥365॥

ॐ ह्रीं श्री अतुलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तुम ‘अचिन्त्यवैभव’ कहलाए, बृहस्पति न गुण गा पाए ।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ ॥366॥

ॐ ह्रीं श्री अचिन्त्यवैभवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कहलाए ‘सुसंवृत्त’ स्वामी, संवर किए पूर्णतः नामी ।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ ॥367॥

ॐ ह्रीं श्री सुसंवृत्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘सुगुप्तात्मा’ आप कहाए, कर्मरि छू भी न पाए ।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ ॥368॥

ॐ ह्रीं श्री सुगुप्तात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘सुभृत्’ नाम आपका प्यारा, जाना लोकालोक है सारा ।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ ॥369॥

ॐ ह्रीं श्री सुभृधे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘सुनयतत्त्ववित्’ नय के ज्ञाता, आप रहे त्रिभुवन के त्राता ।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ ॥370॥

ॐ ह्रीं श्री सुनयतत्त्ववित् नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(पद्धड़ी छंद)

प्रभु 'एकविद्य' हैं ज्ञान युक्त, हैं क्षद्य ज्ञान से पूर्णमुक्त ।
सारे दुःखहर्ता रहे आप, प्रभु नाम जाप से कटें पाप ॥371॥

ॐ ह्रीं श्री एकविद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु 'महाविद्य' जग में महान, पाए विधाएँ विशद ज्ञान ।
सारे दुःखहर्ता रहे आप, प्रभु नाम जाप से कटें पाप ॥372॥

ॐ ह्रीं श्री महाविद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे 'मुनि' आपने मौन धार, जीवों को भव से किया पार ।
सारे दुःखहर्ता रहे आप, प्रभु नाम जाप से कटें पाप ॥373॥

ॐ ह्रीं श्री मुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे 'परिवृढ' तुममें गुण अनेक, पाकर दिखलाया मार्ग नेक ।
सारे दुःखहर्ता रहे आप, प्रभु नाम जाप से कटें पाप ॥374॥

ॐ ह्रीं श्री परिवृढाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे 'पति' ! आप हो जग प्रधान, स्वामी जग में हो ज्ञानवान ।
सारे दुःखहर्ता रहे आप, प्रभु नाम जाप से कटें पाप ॥375॥

ॐ ह्रीं श्री पत्ये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे 'धीश' ! आपकी धी महान, सारे जग में पायी प्रधान ।
सारे दुःखहर्ता रहे आप, प्रभु नाम जाप से कटें पाप ॥376॥

ॐ ह्रीं श्री धीशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु 'विद्यानिधि' हो तुम अनूप, तव चरणों सुर-नर झुकें भूप ।
सारे दुःखहर्ता रहे आप, प्रभु नाम जाप से कटें पाप ॥377॥

ॐ ह्रीं श्री विद्यानिधये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे 'साक्षी' ! कर साक्षात्कार, तव पद में मेरा नमस्कार ।
सारे दुःखहर्ता रहे आप, प्रभु नाम जाप से कटें पाप ॥378॥

ॐ ह्रीं श्री साक्षिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे प्रभु ! 'विनेता' तुम विनीत, जग की सब जाने आप रीत ।
सारे दुःखहर्ता रहे आप, प्रभु नाम जाप से कटें पाप ॥379॥

ॐ ह्रीं श्री विनेत्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे 'विहतान्तक' कर कर्म अन्त, तुम सिद्ध बने पा गुणानन्त ।
सारे दुःखहर्ता रहे आप, प्रभु नाम जाप से कटें पाप ॥380॥

ॐ ह्रीं श्री विहतान्तकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे 'पिता' ! आप रक्षक जिनेश, तुम जनक कहे जग में विशेष ।
सारे दुःखहर्ता रहे आप, प्रभु नाम जाप से कटें पाप ॥381॥

ॐ ह्रीं श्री पित्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु कहे 'पितामह' जग ज्येष्ठ, तुम सम न त्राता कोई श्रेष्ठ ।
सारे दुःखहर्ता रहे आप, प्रभु नाम जाप से कटें पाप ॥382॥

ॐ ह्रीं श्री पितामहाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अब भवदधि 'पाता' करो पार, हम वन्दन करते बार-बार ।
सारे दुःखहर्ता रहे आप, प्रभु नाम जाप से कटें पाप ॥383॥

ॐ ह्रीं श्री पात्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

आतम कीन्ही तुमने 'पवित्र', तुम रहे जगत के श्रेष्ठ मित्र ।
सारे दुःखहर्ता रहे आप, प्रभु नाम जाप से कटें पाप ॥384॥

ॐ ह्रीं श्री पवित्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे 'पावन' ! तव महिमा अपार, न पाये जिसका कोई पार ।
सारे दुःखहर्ता रहे आप, प्रभु नाम जाप से कटें पाप ॥385॥

ॐ ह्रीं श्री पावनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे 'गति' आपकी गति महान, पञ्चम गति पाई जग प्रधान ।
सारे दुःखहर्ता रहे आप, प्रभु नाम जाप से कटें पाप ॥386॥

ॐ ह्रीं श्री गतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे 'त्राता' ! जग रक्षक जिनेश, आश्रय दाता हो तुम विशेष।
सारे दुःखहर्ता रहे आप, प्रभु नाम जाप से कटें पाप ॥387॥

ॐ ह्रीं श्री त्रात्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे वैद्य ! 'भिषग्वर' तुम प्रधान, सब रोग विनाशक हो महान।
सारे दुःखहर्ता रहे आप, प्रभु नाम जाप से कटें पाप ॥388॥

ॐ ह्रीं श्री भिषग्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'वर्य' ! आप हैं महति मान, प्रभु मुक्ति रमा के वर महान्।
सारे दुःखहर्ता रहे आप, प्रभु नाम जाप से कटें पाप ॥389॥

ॐ ह्रीं श्री वर्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे प्रभु ! आपका 'वरद' हस्त, कर देता है जीवन प्रशस्त।
सारे दुःखहर्ता रहे आप, प्रभु नाम जाप से कटें पाप ॥390॥

ॐ ह्रीं श्री वरदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चामर छन्द)

'परम' नाम आपका, जीव सभी जानते, श्रेष्ठतम आपको, लोग सभी मानते।
कर्मनाश हेतु नाथ, नाम कहा मंगलम्, कर्मश्रेष्ठ सौख्यकार, मंत्र रहा मंगलम् ॥391॥

ॐ ह्रीं श्री परमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे जिनेन्द्र देव ! तुम, 'पुमान' हो पवित्र हो, सर्वप्राणियों के आप, इष्ट श्रेष्ठ मित्र हो।
कर्मनाश हेतु नाथ, नाम कहा मंगलम्, कर्मश्रेष्ठ सौख्यकार, मंत्र रहा मंगलम् ॥392॥

ॐ ह्रीं श्री पुंसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'कवि' आप हो, ज्ञान के सनाथ हो, भव्य प्राणियों के लिए, आप साथ-साथ हो।
कर्मनाश हेतु नाथ, नाम कहा मंगलम्, कर्मश्रेष्ठ सौख्यकार, मंत्र रहा मंगलम् ॥393॥

ॐ ह्रीं श्री कवयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुराणपुरुष' आपको, लोग सभी जानते, आदियुक्त हो अनन्त, सत्य यही मानते।
कर्मनाश हेतु नाथ, नाम कहा मंगलम्, कर्मश्रेष्ठ सौख्यकार, मंत्र रहा मंगलम् ॥394॥

ॐ ह्रीं श्री पुराणपुरुषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वर्षीयान्' नाम आप, श्रेष्ठ प्रभु पाए हो, वर्षों की गणना में, आप न समाए हो।
कर्मनाश हेतु नाथ, नाम कहा मंगलम्, कर्मश्रेष्ठ सौख्यकार, मंत्र रहा मंगलम् ॥395॥

ॐ ह्रीं श्री वर्षीयसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ऋषभ' देव आपका, नाम जग प्रसिद्ध है, देव इन्द्र आदि से, पूज्य हो ये सिद्ध है।
कर्मनाश हेतु नाथ, नाम कहा मंगलम्, कर्मश्रेष्ठ सौख्यकार, मंत्र रहा मंगलम् ॥396॥

ॐ ह्रीं श्री ऋषभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुरु' देव आपकी, लोक करें वन्दना, ध्यान किए आप का, होय कभी बन्ध ना।
कर्मनाश हेतु नाथ, नाम कहा मंगलम्, कर्मश्रेष्ठ सौख्यकार, मंत्र रहा मंगलम् ॥397॥

ॐ ह्रीं श्री पुरुवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रतिष्ठाप्रभवादि' सब, लोक तुम्हें जानते, प्रतिष्ठा के योग्य तुम, सर्व यही मानते।
कर्मनाश हेतु नाथ, नाम कहा मंगलम्, कर्मश्रेष्ठ सौख्यकार, मंत्र रहा मंगलम् ॥398॥

ॐ ह्रीं श्री प्रतिष्ठाप्रभवाय¹ नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। (1) प्रतिष्ठाप्रसव भी नाम आता है।

सर्व कार्य सिद्धि के, आप श्रेष्ठ 'हेतु' हो, विशद जिन धर्म के, आप प्रभु केतु हो।
कर्मनाश हेतु नाथ, नाम कहा मंगलम्, कर्मश्रेष्ठ सौख्यकार, मंत्र रहा मंगलम् ॥399॥

ॐ ह्रीं श्री हेतवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भुवनैकपितामह', आपका शुभ नाम है, शीर्ष पर इस लोक के, प्रभु शुभ धाम है।
कर्मनाश हेतु नाथ, नाम कहा मंगलम्, कर्मश्रेष्ठ सौख्य कार, मंत्र रहा मंगलम् ॥400॥

ॐ ह्रीं श्री भुवनैकपितामहाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ्य

महाशोक ध्वज आदि नाम है, भुवनेकपितामह अन्तिम नाम।

सुर-नर इन्द्रों से पूजित जिन, प्रभु के चरणों विशद प्रणाम॥

एक-एक शुभ नाम मंत्र यह, सर्व जहाँ में मंगलकार।

अर्घ्य चढ़ाकर पूजा करते, इन्द्र बोलते जय-जयकार॥4॥

ॐ ह्रीं श्री महाशोकध्वजादिशतनामेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शान्तिधारा (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

पंचम वलयः

दोहा- श्री वृक्ष लक्षण प्रथम, से लेकर सौ नाम ।
पुष्पाञ्जलि करके विशद, ध्याएँ आठों याम ॥

(इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(सखी छन्द)

‘श्रीवृक्षलक्षणा’ भाई, जिन नाम कहा सुखदायी ।

प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें ॥401 ॥

ॐ ह्रीं श्री वृक्षलणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिनप्रभु ‘श्लक्ष्ण’ कहलाए, जो शिव रमणी को पाए ।

प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें ॥402 ॥

ॐ ह्रीं श्री श्लक्ष्णाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘लक्ष्ण्य’ कहे जिन स्वामी, सब लक्षण पाए नामी ।

प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें ॥403 ॥

ॐ ह्रीं श्री लक्ष्णाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘शुभलक्षण’ प्रभु जी पाए, जो सहस्राष्ट कहलाए ।

प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें ॥404 ॥

ॐ ह्रीं श्री शुभलक्षणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिनवर ‘निरक्ष’ कहलाए, प्रभु हीन इन्द्रिय गाए ।

प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें ॥405 ॥

ॐ ह्रीं श्री निरक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिन ‘पुण्डरीकाक्ष’ कहाए, नाशाग्र दृष्टि शुभ पाए ।

प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें ॥406 ॥

ॐ ह्रीं श्री पुण्डरीकाक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘पुष्कल’ कहलाए स्वामी, जग रक्षक अन्तर्यामी ।

प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें ॥407 ॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्कलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिन ‘पुष्करेक्षण’ हैं भाई, शुभ गमन कमल सुखदायी ।

प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें ॥408 ॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्करेक्षणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कहलाए ‘सिद्धिदा’ स्वामी, सिद्धि दायक जग नामी ।

प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें ॥409 ॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धिदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु ‘सिद्धसंकल्प’ कहाए, कर पूर्ण सभी दिखलाए ।

प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें ॥410 ॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धसंकल्पाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु को ‘सिद्धात्मा’ जानो, सब सिद्धि पाए मानो ।

प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें ॥411 ॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिन ‘सिद्धसाधन’ कहलाए, जग को सन्मार्ग दिखाए ।

प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें ॥412 ॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धसाधनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे ‘बुद्धबोध्य’ जगनामी, बोधी तुम पाये स्वामी ।

प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें ॥413 ॥

ॐ ह्रीं श्री बुद्धबोध्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिन ‘महाबोधि’ कहलाये, जो श्रेष्ठ सिद्धियाँ पाये ।

प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें ॥414 ॥

ॐ ह्रीं श्री महाबोधये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे 'वर्धमान' जिन स्वामी, गुण पाये अतिशय नामी ।

प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें ॥415॥

ॐ ह्रीं श्री वर्धमानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिन 'महर्दिक' कहलाए, जो श्रेष्ठ ऋद्धियाँ पाये ।

प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें ॥416॥

ॐ ह्रीं श्री महर्दिकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'वेदांग' नाम अति प्यारा, है सार्थक नाम तुम्हारा ।

प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें ॥417॥

ॐ ह्रीं श्री वेदांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कहलाए 'वेदविद्' स्वामी, ज्ञानी वेदों के नामी ।

प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें ॥418॥

ॐ ह्रीं श्री वेदविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हैं 'वेद' स्वयं संवेदी, आठों कर्मों के भेदी ।

प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें ॥419॥

ॐ ह्रीं श्री वेदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिन 'जातरूप' कहलाए, शुभ भेष दिगम्बर पाए ।

प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें ॥420॥

ॐ ह्रीं श्री जातरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(सृग्विणी छन्द)

प्रभु 'विदाम्बर' कहे पूर्ण ज्ञानी अरे !, भव्य जीव को सदा पूर्ण ज्ञानी करे ।

नाम जाप जो जीव सदा करता रहा, सुख-शांति सौभाग्य सदा पाता अहा ॥421॥

ॐ ह्रीं श्री विदांवराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिन 'वेदवेद्य' कहलाए हैं ज्ञानी महा, नहीं जानने योग्य तुम्हें कुछ भी रहा ।

नाम जाप जो जीव सदा करता रहा, सुख-शांति सौभाग्य सदा पाता अहा ॥422॥

ॐ ह्रीं श्री वेदवेद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'स्वसंवेद्य' नाम प्राप्त कीन्हें प्रभो !, स्व का अनुभव प्राप्त किए हैं जिन विभो !

नाम जाप जो जीव सदा करता रहा, सुख-शांति सौभाग्य सदा पाता अहा ॥423॥

ॐ ह्रीं श्री स्वसंवेद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे 'विवेद' तुम वेद रहित जग में कहे, तीन लोक में पूज्य आप अतिशय रहे ॥

नाम जाप जो जीव सदा करता रहा, सुख-शांति सौभाग्य सदा पाता अहा ॥424॥

ॐ ह्रीं श्री विवेदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'वदताम्बर' कहलाए जग में जिन विभो !, सब भाषामय दिव्य ध्वनि देते प्रभो !

नाम जाप जो जीव सदा करता रहा, सुख-शांति सौभाग्य सदा पाता अहा ॥425॥

ॐ ह्रीं श्री वदताम्बराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

आप 'अनादिनिधन' रहे संसार में, भवि जीवों के लिए सेतु उपकार में ।

नाम जाप जो जीव सदा करता रहा, सुख-शांति सौभाग्य सदा पाता अहा ॥426॥

ॐ ह्रीं श्री अनादिनिधनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'व्यक्त' आपको कहते हैं प्राणी सभी, ज्ञान आपका लुप्त नहीं होवे कभी ।

नाम जाप जो जीव सदा करता रहा, सुख-शांति सौभाग्य सदा पाता अहा ॥427॥

ॐ ह्रीं श्री व्यक्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'व्यक्तवाक्' कहलाए हैं जिनवर प्रभो !, वचन आपके ग्रहण करें प्राणी विभो !

नाम जाप जो जीव सदा करता रहा, सुख-शांति सौभाग्य सदा पाता अहा ॥428॥

ॐ ह्रीं श्री व्यक्तवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कहे 'व्यक्तशासन' प्रभो ! जग में अहा, शासन प्रभु का व्यक्त लोक में शुभ रहा ।

नाम जाप जो जीव सदा करता रहा, सुख-शांति सौभाग्य सदा पाता अहा ॥429॥

ॐ ह्रीं श्री व्यक्तशासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री जिनेन्द्र 'युगादिकृत्' कहलाए हैं, षट् कर्मों की शिक्षा जो बतलाए हैं ।

नाम जाप जो जीव सदा करता रहा, सुख-शांति सौभाग्य सदा पाता अहा ॥430॥

ॐ ह्रीं श्री युगादिकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘युगाधार’ प्रभु को कहता है जग सभी, भूल नहीं पाते प्रभु को कोई कभी ।
नाम जाप जो जीव सदा करता रहा, सुख-शांति सौभाग्य सदा पाता अहा ॥431॥

ॐ ह्रीं श्री युगाधराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु ‘युगादि’ जग के कर्ता जानिए, त्याग किए आरम्भ जगत् का मानिए ॥
नाम जाप जो जीव सदा करता रहा, सुख-शांति सौभाग्य सदा पाता अहा ॥432॥

ॐ ह्रीं श्री युगादये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘जगदादिज’ जिनवर तुम ही कहलाए हो, कर्म भूमि का आदि कर शिव पाए हो ।
नाम जाप जो जीव सदा करता रहा, सुख-शांति सौभाग्य सदा पाता अहा ॥433॥

ॐ ह्रीं श्री जगदादिजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे ‘अतीन्द्र’ तुम रहित इन्द्रियों से रहे, ज्ञानेन्द्रिय के धारी इस युग में कहे ॥
नाम जाप जो जीव सदा करता रहा, सुख-शांति सौभाग्य सदा पाता अहा ॥434॥

ॐ ह्रीं श्री अतीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तुम्हें ‘अतीन्द्रिय’ कहते हैं ज्ञानी सभी, इन्द्रिय सुख की चाह नहीं कीन्हीं कभी ।
नाम जाप जो जीव सदा करता रहा, सुख-शांति सौभाग्य सदा पाता अहा ॥435॥

ॐ ह्रीं श्री अतीन्द्रियाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘धीन्द्र’ आप हो श्रेष्ठ बुद्धि धारी प्रभो !, नहीं आप सम कोई श्रेष्ठ जग में विभो !
नाम जाप जो जीव सदा करता रहा, सुख-शांति सौभाग्य सदा पाता अहा ॥436॥

ॐ ह्रीं श्री धीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे ‘महेन्द्र’ तुम पूज्य हुए शत इन्द्र से, सुर नर पशु आदि जग के अहमिन्द्र से ।
नाम जाप जो जीव सदा करता रहा, सुख-शांति सौभाग्य सदा पाता अहा ॥437॥

ॐ ह्रीं श्री महेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘अतीन्द्रियार्थदृक्’ कहलाए जिनवर अहा, सर्वेन्द्रिय से रहित ज्ञान जिनका रहा ॥
नाम जाप जो जीव सदा करता रहा, सुख-शांति सौभाग्य सदा पाता अहा ॥438॥

ॐ ह्रीं श्री अतीन्द्रियार्थदृशे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कहे ‘अनिन्द्रिय’ हीन इन्द्रियों से प्रभो !, इन्द्रियातीत सौख्य प्राप्त कीन्हीं विभो !
नाम जाप जो जीव सदा करता रहा, सुख-शांति सौभाग्य सदा पाता अहा ॥439॥

ॐ ह्रीं श्री अनिन्द्रियाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘अहमिन्द्रार्च्य’ आप इन्द्रों से पूज्य हैं, ज्ञान हीन संसारी सर्व अपूज्य हैं ।
नाम जाप जो जीव सदा करता रहा, सुख-शांति सौभाग्य सदा पाता अहा ॥440॥

ॐ ह्रीं श्री अहमिन्द्रार्च्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(सोरठा)

‘महेन्द्रमहित’ तव नाम, जैनागम में कहा है ।
करते विशद प्रणाम, इन्द्र नरेन्द्र महेन्द्र सब ॥441॥

ॐ ह्रीं श्री महेन्द्रमहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

त्रिभुवन पूज्य ‘महान्’, आप रहे संसार में ।
करें विशद गुणगान, प्रभु गुण पाने के लिए ॥442॥

ॐ ह्रीं श्री महते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘उद्भव’ जगत् प्रसिद्ध, नाम प्राप्त कीन्हीं प्रभो !
सार्थक है जो सिद्ध, उद्भव कीन्हीं धर्म का ॥443॥

ॐ ह्रीं श्री उद्भवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘कारण’ आप महान्, धर्म सौख्य सौभाग्य के ।
अतिशय रहे प्रधान, कर्म नाश के हेतु तुम ॥444॥

ॐ ह्रीं श्री कारणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘कर्ता’ तुम तीर्थेश, असि मसि आदि कर्म के ।
धार दिगम्बर भेष, मोक्ष मार्ग पर बढ़ चले ॥445॥

ॐ ह्रीं श्री कर्त्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘पारग’ पाए नाम, पार हुए संसार से ।
पद में करें प्रणाम, पाने भव से पार हम ॥446॥

ॐ ह्रीं श्री पारगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तारण तारण जहाज, 'भवतारक' कहलाए हो।

मोक्ष महल का ताज, पाया है प्रभु आपने॥447॥

ॐ ह्रीं श्री भवतारकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है 'अग्राह्य' तव नाम, अवगाहन अति कठिन है।

पाए तुम शिवधाम, गुण अवगाहन प्राप्त कर॥448॥

ॐ ह्रीं श्री अग्राहाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

योगी जन के गम्य, 'गहन' आप अतिशय रहे।

है स्वरूप तव रम्य, सर्व लोक में श्रेष्ठतम॥449॥

ॐ ह्रीं श्री गहनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गुह्य' गुप्त हो आप, पार नहीं पावे कोई।

करें नाम का जाप, योग धारने के लिए॥450॥

ॐ ह्रीं श्री गुह्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में हुए महान, है 'परार्ध्य' तव नाम शुभ।

कैसे करें बखान, महिमा तुमरी अगम है॥451॥

ॐ ह्रीं श्री परार्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ति श्री के नाथ, 'परमेश्वर' कहलाए हैं।

चरण झुकाएँ माथ, तव पद पाने के लिए॥452॥

ॐ ह्रीं श्री परमेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानी आप अनन्त, 'अनन्तर्द्धि' कहलाए हो।

नहीं है जिसका अंत, सर्व ऋद्धियों से सहित॥453॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तर्द्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अमेयर्द्धि' भगवान्, मर्यादा जिसकी नहीं।

पाए ऋद्धि महान्, जो गणना से पार हैं॥454॥

ॐ ह्रीं श्री अमेयर्द्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अचिन्त्यर्द्धि' जिनराज, तुम अचिन्त्य संसार में।

पाए सौख्य समाज, सर्व ऋद्धियाँ प्राप्त कर॥455॥

ॐ ह्रीं श्री अचिन्त्यर्द्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'समग्रधी' नाथ !, ज्ञाता ज्ञेय प्रमाण के।

चरण झुकाएँ माथ, अपने ज्ञान प्रणाम शुभ॥456॥

ॐ ह्रीं श्री समग्रधीये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्राग्रय' हे जिनदेव !, आप लोक में प्रथम हो।

करें चरण की सेव, मुक्ति पाने कर्म से॥457॥

ॐ ह्रीं श्री प्राग्रयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे 'प्राग्रहर' आप, पूज्य सुमंगल कार्य में।

नाशक सारे पाप, परम पूज्य परमात्मा॥458॥

ॐ ह्रीं श्री प्राग्रहराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'अभ्यग्र' जिनेन्द्र, सम्मुख हो लोकाग्र के।

पूजें चरण शतेन्द्र, मन वच तन से आपके॥459॥

ॐ ह्रीं श्री अभ्यग्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'प्रत्यग्र' महान्, आप विलक्षण जगत से।

करें विशद गुणगान, भाव सहित तव पाद में॥460॥

ॐ ह्रीं श्री प्रत्यग्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

'अग्रय' तुम कहलाए स्वामी, अग्रणीय हो अन्तर्यामी।

नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा॥461॥

ॐ ह्रीं श्री अग्रयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अग्रिम' तुमको कहते प्राणी, रहो अग्र जग के कल्याणी।

नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा॥462॥

ॐ ह्रीं श्री अग्रिमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु जी तुम 'अग्रज' कहलाए, ज्येष्ठ लोक में बनकर आए।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा ॥463॥

ॐ ह्रीं श्री अग्रजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'महातपा' तुमने तप धारा, तप में जीवन बीता सारा।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा ॥464॥

ॐ ह्रीं श्री महातपसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'महातेज' प्रभु आप कहाए, आभा शुभ तेजस्वी पाए।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा ॥465॥

ॐ ह्रीं श्री महातेजसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'महोदक' है नाम निराला, भव से मुक्ति देने वाला।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा ॥466॥

ॐ ह्रीं श्री महोदकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ऐश्वर्यदान 'महोदय' जानो, जगतपति प्रभु को पहिचानो।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा ॥467॥

ॐ ह्रीं श्री महोदयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'महायशा' कहलाए स्वामी, यशोपूत हैं जग में नामी।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा ॥468॥

ॐ ह्रीं श्री महायशसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'महाधाम' है नाम तुम्हारा, उसको पाना लक्ष्य हमारा।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा ॥469॥

ॐ ह्रीं श्री महाधाम्ने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'महासत्त्व' तुमको कहते हैं, शाश्वत आप सदा रहते हैं।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा ॥470॥

ॐ ह्रीं श्री महासत्त्वाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'महाधृति' जिनवर कहलाए, जग जीवों को धैर्य दिलाए।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा ॥471॥

ॐ ह्रीं श्री महाधृतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'महाधैर्य' धारी जिन स्वामी, आकुलता त्यागे जग नामी।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा ॥472॥

ॐ ह्रीं श्री महाधैर्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'महावीर्य' धारी हैं भारी, फिर भी कहलाये अविकारी।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा ॥473॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभो 'महासम्पत्' कहलाए, समवशरण में शोभा पाए।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा ॥474॥

ॐ ह्रीं श्री महासंपदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तुम्हें 'महाबल' कहते प्राणी, वीर्यवान हो जग कल्याणी।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा ॥475॥

ॐ ह्रीं श्री महाबलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तुम हो 'महाशक्ति' के धारी, त्रिभुवन पति हे करुणाकारी !
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा ॥476॥

ॐ ह्रीं श्री महाशक्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'महाज्योति' तुमने शुभ पाई, केवलज्ञान की ज्योति जलाई।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा ॥477॥

ॐ ह्रीं श्री महाज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'महाभूति' कहलाए स्वामी, विभव रूप हे अन्तर्यामी।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा ॥478॥

ॐ ह्रीं श्री महाभूतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘महाद्युति’ हैं धुति के धारी, कांतिमान प्रभु अतिशयकारी।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा ॥479॥

ॐ ह्रीं श्री महाद्युतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘महामति’ महाबुद्धि पाए, केवलज्ञानी आप कहाए।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा ॥480॥

ॐ ह्रीं श्री महामतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द-मोतियादाम)

प्रभु तुम ‘महानीति’ जग सिद्ध, नीति के धारी जगत् प्रसिद्ध।
प्रभु तुम पाए नाम महान, करें हम उनका शुभ गुणगान ॥481॥

ॐ ह्रीं श्री महानीतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे ‘महाक्षांतिवान’ विशेष, क्षमा के धारी आप जिनेश।
प्रभु तुम पाए नाम महान, करें हम उनका शुभ गुणगान ॥482॥

ॐ ह्रीं श्री महाक्षान्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘महादय’ कहलाए जिनराज, धर्म का जिन के सिर पर ताज।
प्रभु तुम पाए नाम महान, करें हम उनका शुभ गुणगान ॥483॥

ॐ ह्रीं श्री महादयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रहा है ‘महाप्रज्ञ’ शुभ नाम, करें हम उनको शतत् प्रणाम।
प्रभु तुम पाए नाम महान, करें हम उनका शुभ गुणगान ॥484॥

ॐ ह्रीं श्री महाप्रज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तव ‘महाभाग’ है नाम, तुम्हें हम करते विशद प्रणाम।
प्रभु तुम पाए नाम महान, करें हम उनका शुभ गुणगान ॥485॥

ॐ ह्रीं श्री महाभागाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु जी पाते अति ‘आनन्द’, कहाते अतः प्रभु ‘महानन्द’।
प्रभु तुम पाए नाम महान, करें हम उनका शुभ गुणगान ॥486॥

ॐ ह्रीं श्री महानन्दाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘महाकवि’ कहलाते हैं आप, नशाए तुमने सारे पाप।
प्रभु तुम पाए नाम महान, करें हम उनका शुभ गुणगान ॥487॥

ॐ ह्रीं श्री महाकवये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘महामह’ तुमको कहते लोग, धरा है तुमने अतिशय योग।
प्रभु तुम पाए नाम महान, करें हम उनका शुभ गुणगान ॥488॥

ॐ ह्रीं श्री महामहाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ‘महाकीर्ति’ धारी आप्त, सुयश है सारे जग में व्याप्त।
प्रभु तुम पाए नाम महान, करें हम उनका शुभ गुणगान ॥489॥

ॐ ह्रीं श्री महाकीर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘महाकांति’ तव श्रेष्ठ अपार, छवि है अतिशय अपरम्पार।
प्रभु तुम पाए नाम महान, करें हम उनका शुभ गुणगान ॥490॥

ॐ ह्रीं श्री महाकान्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘महावपु’ कहलाए तुम नाथ !, निभाओ मोक्ष महल में साथ।
प्रभु तुम पाए नाम महान, करें हम उनका शुभ गुणगान ॥491॥

ॐ ह्रीं श्री महावपुषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु का ‘महादान’ है नाम, करें हम चरणों विशद प्रणाम।
प्रभु तुम पाए नाम महान, करें हम उनका शुभ गुणगान ॥492॥

ॐ ह्रीं श्री महादानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहाते ‘महाज्ञान’ हो आप, नशाए तुमने सारे पाप।
प्रभु तुम पाए नाम महान, करें हम उनका शुभ गुणगान ॥493॥

ॐ ह्रीं श्री महाज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु जी कहलाए ‘महायोग’, त्याग कीन्हें हैं सारे भोग।
प्रभु तुम पाए नाम महान, करें हम उनका शुभ गुणगान ॥494॥

ॐ ह्रीं श्री महायोगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘महागुण’ कहलाते जगदीश, गुणों के आप रहे हैं ईश।
प्रभु तुम पाए नाम महान, करें हम उनका शुभ गुणगान ॥495॥

ॐ ह्रीं श्री महागुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘महामहपति’ है प्रभु का नाम, इन्द्र करते हैं चरण प्रणाम।
प्रभु तुम पाए नाम महान, करें हम उनका शुभ गुणगान ॥496॥

ॐ ह्रीं श्री महामहपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘प्राप्तमहाकल्याणपञ्चक’, तुम्ही हो इस जग में व्यापक।
प्रभु तुम पाए नाम महान, करें हम उनका शुभ गुणगान ॥496॥

ॐ ह्रीं श्री प्राप्तमहाकल्याणपञ्चकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘महाप्रभु’ कहलाते जिनराज, चरण में वन्दन करे समाज।
प्रभु तुम पाए नाम महान, करें हम उनका शुभ गुणगान ॥498॥

ॐ ह्रीं श्री महाप्रभवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो ‘महाप्रातिहार्याधीश’, पूजते सुर नर जिन्हें ऋशीष।
प्रभु तुम पाए नाम महान, करें हम उनका शुभ गुणगान ॥499॥

ॐ ह्रीं श्री महाप्रातिहार्याधीशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘महेश्वर’ पाया प्रभु ने नाम, बनाए शिवपुर में जो धाम।
प्रभु तुम पाए नाम महान, करें हम उनका शुभ गुणगान ॥500॥

ॐ ह्रीं श्री महेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ्य

श्री वृक्षलक्षणादि प्रभु के, नाम कहे हैं मंगलकार।

भाव सहित प्रभु नाप जाप कर, प्राणी होते भव से पार॥

विशद योग से तीर्थकर के, ध्याते हैं हम भी यह नाम।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, करते बारम्बार प्रणाम ॥5॥

ॐ ह्रीं श्री वृक्षलक्षणादिशतनामैभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शान्तिधारा (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

षष्ठम वलयः

दोहा- महामुन्यादि नाम सौ का, करते हम ध्यान।

पुष्पाञ्जलि करके यहाँ, करते हैं गुणगान॥

(इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(वेसरी छंद)

‘महामुनि’ प्रभु जी कहलाए, मुनियों में जो श्रेष्ठ कहाए।

नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी ॥501॥

ॐ ह्रीं श्री महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम प्रभु ‘महामौनी’ पाए, दीक्षा लेकर निज को ध्याए।

नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी ॥502॥

ॐ ह्रीं श्री महामौनिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे ‘महाध्यानी’ जिन स्वामी, ध्यान किए जिन अन्तर्यामी।

नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी ॥503॥

ॐ ह्रीं श्री महाध्यानिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो ‘महादम’ आप कहाए, जित इन्द्रिय हो संयम पाए।

नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी ॥504॥

ॐ ह्रीं श्री महादमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम ‘महाक्षम’ प्रभु जी पाए, क्षमा धर्म के ईश कहाए।

नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी ॥505॥

ॐ ह्रीं श्री महाक्षमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टादश शीलों के स्वामी, ‘महाशील’ हो अन्तर्यामी।

नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी ॥506॥

ॐ ह्रीं श्री महाशीलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘महायज्ञ’ है नाम तुम्हारा, कर्मधन को तुमने जारा।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी ॥507॥

ॐ ह्रीं श्री महायज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ‘महामख’ भी कहलाए, लोक पूज्यता अतिशय पाए।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी ॥508॥

ॐ ह्रीं श्री महामखाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे ‘महाव्रतपति’ हे स्वामी !, महाव्रतों को धारे नामी।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी ॥509॥

ॐ ह्रीं श्री महाव्रतपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘मह्य’ आप जगपूज्य कहाए, गणधर साधू भी गुण गाए।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी ॥510॥

ॐ ह्रीं श्री मह्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘महाकांतिधर’ आप कहाए, अतिशय कांति को प्रभु पाए।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी ॥511॥

ॐ ह्रीं श्री महाकांतिधराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘अधिप’ आप कहलाए भाई, तीन लोक की प्रभुता पाई।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी ॥512॥

ॐ ह्रीं श्री अधिपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘महामैत्रीमय’ मैत्री धारें, जीवों को भव पार उतारें।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी ॥513॥

ॐ ह्रीं श्री महामैत्रीमयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे ‘अमेय’ तुमको हम ध्याते, अपरिमेय गुण तुमरे गाते।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी ॥514॥

ॐ ह्रीं श्री अमेयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘महोपाय’ कहलाए स्वामी, बने मोक्ष पथ के अनुगामी।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी ॥515॥

ॐ ह्रीं श्री महोपायाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हें ‘महोमय’ कहते प्राणी, वाणी है प्रभु तव कल्याणी।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी ॥516॥

ॐ ह्रीं श्री महोमयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘महाकारुणिक’ आप कहाए, करुणाकर इस जग में गाए।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी ॥517॥

ॐ ह्रीं श्री महाकारुणिकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘मंता’ आप कहे जिन स्वामी, ज्ञाता हो प्रभु अन्तर्यामी।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी ॥518॥

ॐ ह्रीं श्री मंत्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘महामंत्र’ है नाम तुम्हारा, लगता अतिशय प्यारा-प्यारा।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी ॥519॥

ॐ ह्रीं श्री महामंत्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘महायति’ प्रभु जी कहलाए, सब यतियों में श्रेष्ठ कहाए।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी ॥520॥

ॐ ह्रीं श्री महायतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(तोटक छन्द)

जिनदेव ‘महानाद’ आप कहे, सागर जैसे गंभीर रहे।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा ॥521॥

ॐ ह्रीं श्री महानादाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन ‘महाघोष’ कहलाए हैं, जो दिव्य ध्वनि सुनाए हैं।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा ॥522॥

ॐ ह्रीं श्री महाघोषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनराज 'महेज्य' कहाये हैं, महती पूजा को पाए हैं।

तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा ॥523॥

ॐ ह्रीं श्री महेज्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'महसांपति' कहलाए हैं, जग में अतिशय दिखलाए हैं।

तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा ॥524॥

ॐ ह्रीं श्री महसांपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए 'महाध्वरधर' स्वामी, हैं ज्ञानी मुक्ति पथगामी।

तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा ॥525॥

ॐ ह्रीं श्री महाध्वरधराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'धुर्य' कहे महिमाधारी, अनगार बने हैं अविकारी।

तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा ॥526॥

ॐ ह्रीं श्री धुर्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महौदार्य' प्रभु कहलाए हैं, अतिशय उदारता पाए हैं।

तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा ॥527॥

ॐ ह्रीं श्री महौदार्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर 'महिष्ठ' भी कहलाए, जो आगम जग को बतलाए।

तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा ॥528॥

ॐ ह्रीं श्री महिष्ठवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए 'महात्मा' जिन स्वामी, हर जीव रहा है अनुगामी।

तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा ॥529॥

ॐ ह्रीं श्री महात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'महसांधाम' प्रभाकारी, तव कांति रही जग में न्यारी।

तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा ॥530॥

ॐ ह्रीं श्री महसांधाम्ने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनदेव 'महर्षि' आप कहे, ऋषियों में अतिशय श्रेष्ठ रहे।

तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा ॥531॥

ॐ ह्रीं श्री महर्षये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'महितोदय' कहलाए हो, तीर्थकर पदवी पाए हो।

तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा ॥532॥

ॐ ह्रीं श्री महितोदयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भो 'महाक्लेशअंकुश' धारी, उपसर्ग परीषह जयकारी।

तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा ॥533॥

ॐ ह्रीं श्री महाक्लेशांकुशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'शूर' आप क्षय कर्म किए, तब जगे धर्म के दीप हिए।

तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा ॥534॥

ॐ ह्रीं श्री शूराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'महाभूतपति' आप कहे, गणधर भी प्रभु तव भक्त रहे।

तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा ॥535॥

ॐ ह्रीं श्री महाभूतपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'गुरु' जगत् के कहलाए, न पार कोई महिमा पाए।

तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा ॥536॥

ॐ ह्रीं श्री गुरवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'महापराक्रम' के धारी, हैं मंगलमय मंगलकारी।

तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा ॥537॥

ॐ ह्रीं श्री महापराक्रमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुमने 'अनन्त' गुण प्रगटाए, न महिमा कोई कह पाए।

तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा ॥538॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'महाक्रोधरिपु' के हन्ता, कहलाए अतिशय भगवन्ता ।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा ॥539॥

ॐ ह्रीं श्री महाक्रोधरिपवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे 'वशी' आप अतिशयकारी, वश किए स्वयं को अविकारी ।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा ॥540॥

ॐ ह्रीं श्री वशिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(सोरठा)

'महाभवाब्धिसन्तापि', नाम आपका श्रेष्ठतम ।
चारों गति निवारि, मोक्ष महल में जा बसे ॥541॥

ॐ ह्रीं श्री महाभवाब्धिसन्तारिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मोहारि को नाश, 'महामोहाद्रिसूदन' बने ।
कीन्हे कर्म विनाश, परम सिद्ध पद पा लिए ॥542॥

ॐ ह्रीं श्री महामोहाद्रिसूदनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'महागुणाकर' आप, रत्नत्रय के कोष हो ।
करें नाम का जाप, धर्म निधि हमको मिले ॥543॥

ॐ ह्रीं श्री महागुणाकराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'क्षान्त' आपका नाम, क्षमा आदि गुण धारते ।
चरणों करें प्रणाम, गुण पाने तुम सम विशद ॥544॥

ॐ ह्रीं श्री क्षान्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'महायोगीश्वर' आप, कहलाए परमात्मा ।
नाश किए सब पाप, नाम आपका हम जपें ॥545॥

ॐ ह्रीं श्री महायोगीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'शमी' शांत परिणाम, रहे आपके नित्य ही ।
बारम्बार प्रणाम, शांति पाने के लिए ॥546॥

ॐ ह्रीं श्री शमिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'महाध्यानपति' नाथ !, ध्यान किए हो श्रेष्ठतम ।
चरण झुकाएँ माथ, ध्यान शुभम् हम कर सकें ॥547॥

ॐ ह्रीं श्री महाध्यानपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभो 'ध्यातमहाधर्म', धर्म अहिंसा के धनी ।
करें सदा सत् कर्म, मुक्ति पाने के लिए ॥548॥

ॐ ह्रीं श्री ध्यातमहाधर्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पञ्च 'महाव्रत' श्रेष्ठ, धारण करके अपने ।
पाया धर्म यथेष्ट, पार हुए संसार से ॥549॥

ॐ ह्रीं श्री महाव्रताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कर्म अरि का नाश, 'महाकर्मअरिहा' किए ।
कीन्हें ज्ञान प्रकाश, मुक्त हुए वसु कर्म से ॥550॥

ॐ ह्रीं श्री महाकर्मरिघ्ने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

बने प्रभु 'आत्मज्ञ', निज स्वरूप को जानकर ।
अतिशय हुए गुणज्ञ, गुण अनन्त पाए प्रभो ! ॥551॥

ॐ ह्रीं श्री आत्मज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सब देवों के देव, 'महादेव' हो आप जिन ।
करें चरण की सेव, सब इन्द्रों से पूज्य तुम ॥552॥

ॐ ह्रीं श्री महादेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

है 'महेशिता' नाम, पाये हो ऐश्वर्य सब ।
शत्-शत् करें प्रणाम, कृपा पात्र बनकर रहें ॥553॥

ॐ ह्रीं श्री महेशित्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

नाशे सर्व क्लेश, 'सर्वक्लेशापह' प्रभो ! ।
पूजें तुम्हें जिनेश, मम क्लेश उपशांत हों ॥554॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वक्लेशापहाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘साधु’ आप महान्, किए साधना श्रेष्ठतम।
मिले मुझे यह ज्ञान, संयम का पालन करें॥555॥

ॐ ह्रीं श्री साधवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘सर्वदोषहर’ देव, सर्व गुणों की खान हैं।
बन्दू तुम्हें सदैव, निज गुण पाने के लिए॥556॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वदोषहराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘हर’ पाए प्रभु नाम, हर्ता पापों के प्रभु।
पाया है निज धाम, कर्म नाशकर आपने॥557॥

ॐ ह्रीं श्री हराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए ‘असंख्येय’, गुण असंख्य धारी प्रभु।
मेरा है यह ध्येय, हम भी वह गुण पा सकें॥558॥

ॐ ह्रीं श्री असंख्येयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणना के न योग्य, ‘अप्रमेयात्मा’ हैं प्रभु।
जो भी रहे अयोग्य, वह गुण नाशे आपने॥559॥

ॐ ह्रीं श्री अप्रमेयात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन ‘शमात्मा’ नाथ, शांत स्वरूपी हैं प्रभु।
करता रहूँ प्रणाम, शांत भाव से हर समय॥560॥

ॐ ह्रीं श्री शमात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द-चामर)

‘प्रशमाकर’ तव नाम रहा, अतिशय कारी श्रेष्ठ अहा।
नाममंत्र हम ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥561॥

ॐ ह्रीं श्री प्रशमाकराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘सर्वयोगीश्वर’ आप कहे, सब मुनियों में श्रेष्ठ रहे।
नाममंत्र हम ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥562॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वयोगीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे ‘अचिन्त्य’ महिमाधारी, तुम हो अतिशय गुणकारी।
नाममंत्र हम ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥563॥

ॐ ह्रीं श्री अचिन्त्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ‘श्रुतात्मा’ कहलाए, श्रुत स्वरूपता को पाए।
नाममंत्र हम ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥564॥

ॐ ह्रीं श्री श्रुतात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘विष्टरश्रव’ जिनदेव कहे, सर्व लोक में श्रेष्ठ रहे।
नाममंत्र हम ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥565॥

ॐ ह्रीं श्री विष्टरश्रवसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘दान्तात्मा’ जिन कहलाए, विजय आप निज पर पाए।
नाममंत्र हम ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥566॥

ॐ ह्रीं श्री दान्तात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर ‘दमतीर्थेश’ रहे, सकल परीषहजयी कहे।
नाममंत्र हम ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥567॥

ॐ ह्रीं श्री दमतीर्थेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘योगात्मा’ शुभ नाम अहा, प्रभु आपका श्रेष्ठ रहा।
नाममंत्र हम ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥568॥

ॐ ह्रीं श्री योगात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘ज्ञानसर्वग’ कहे स्वामी, मोक्ष महल के अनुगामी।
नाममंत्र हम ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥569॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानसर्वगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे ‘प्रधान’ अतिशय धारी, महिमा जग से है न्यारी।
नाममंत्र हम ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥570॥

ॐ ह्रीं श्री प्रधानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'आत्मा' कहलाए, निज में निजता को पाए।
नाममंत्र हम ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥571॥

ॐ ह्रीं श्री आत्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रकृति' आप कहाते हो, निज स्वरूपता पाते हो।
नाममंत्र हम ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥572॥

ॐ ह्रीं श्री प्रकृतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परम' प्रभु हैं लोकजयी, सर्व श्रेष्ठ हैं कर्म क्षयी।
नाममंत्र हम ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥573॥

ॐ ह्रीं श्री परमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परमोदय' तुम हो स्वामी, घट-घट के अन्तर्यामी।
नाममंत्र हम ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥574॥

ॐ ह्रीं श्री परमोदयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'प्रक्षीणाबंध' कहे, कर्म बन्ध से हीन रहे।
नाममंत्र हम ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥575॥

ॐ ह्रीं श्री प्रक्षीणबंधाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'कामारी' कहलाए, काम शत्रु पर जय पाये।
नाममंत्र हम ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥576॥

ॐ ह्रीं श्री कामारये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'क्षेमकृत्' हो स्वामी, क्षेम किया करते नामी।
नाममंत्र हम ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥577॥

ॐ ह्रीं श्री क्षेमकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'क्षेमशासन' जिन आप रहे, मंगलमय भगवन्त कहे।
नाममंत्र हम ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥578॥

ॐ ह्रीं श्री क्षेमशासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रणव' आपका नाम अहा, प्राणी मात्र से प्रेम रहा।
नाममंत्र हम ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥579॥

ॐ ह्रीं श्री प्रणवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रणय' आप कहलाते हो, मंत्र रूपता पाते हो।
नाममंत्र हम ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥580॥

ॐ ह्रीं श्री प्रणयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

नाम रहा प्रभु का शुभम्, मंगलकारी 'प्राण'।
दिन बन्धु कहलाए हैं, दिए जगत को त्राण॥581॥

ॐ ह्रीं श्री प्राणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'प्राणद' कहे, रक्षक जग के ईश।
प्राणी चरणों में सभी, झुका रहे हैं शीश॥582॥

ॐ ह्रीं श्री प्राणदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रणतेश्वर' शुभ नाम है, भव्यों के भगवान।
चरण शरण का दास यह, सारा रहा जहान॥583॥

ॐ ह्रीं श्री प्रणतेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'प्रमाण' ज्ञानी प्रभो, पाये सम्यक् ज्ञान।
सर्व लोक में आपका, है ऊँचा स्थान॥584॥

ॐ ह्रीं श्री प्रमाणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रणिधी' निधियों के प्रभो !, स्वामी आप महान।
गुण अनन्त की खान हो, करें विशद गुणगान॥585॥

ॐ ह्रीं श्री प्रणिधये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ग कला में 'दक्ष' प्रभु, अतः 'दक्ष' है नाम।
दक्ष बन्नुं दो दक्षिणा, बारम्बार प्रणाम॥586॥

ॐ ह्रीं श्री दक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवन दाता आप हो, 'दक्षिण' आप जिनेश।
चरण वन्दना हम करें, पाने को निज देश॥587॥

ॐ ह्रीं श्री दक्षिणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'अध्वर्य' जिनेश हो, सर्व गुणों के ईश।
अतः आपके चरण में, झुका रहे हम शीश॥588॥

ॐ ह्रीं श्री अध्वर्यवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिवपथ के राही बने, 'अध्वर' पाया नाम।
चरण वन्दना हम करें, जिन के ऋजु परिणाम॥589॥

ॐ ह्रीं श्री अध्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुख अनन्त के कोष प्रभु, पाए शुभ 'आनन्द'।
राग-द्वेष अरु मोहतज, नाश किए सब द्वन्द॥590॥

ॐ ह्रीं श्री आनन्दाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नन्दन' आप जिनेश हो, तीन लोक के नाथ।
दाता तीनों लोक के, चरण झुकाएँ माथ॥591॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुख-शांति के कोष प्रभु, कहलाते हैं 'नन्द'।
निज स्वभाव में खो गये, मेरे सारे द्वन्द॥592॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वन्दनीय प्रभु लोक में 'वन्द्य' कहाए आप।
विशद शुद्ध आदर्श पा, नाशे सारे पाप॥593॥

ॐ ह्रीं श्री वन्द्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'अनिन्द्य' तुम लोक में, सब दोषों से हीन।
गुण अनन्त के पुञ्ज हो, अतिशय ज्ञान प्रवीण॥594॥

ॐ ह्रीं श्री अनिन्द्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अभिनन्दन' तव नाम है, जग वन्दन के योग्य।
और लोक में देव जो, सारे रहे अयोग्य॥595॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कामह' तुमने कर्म का, क्षण में किया विनाश।
बनें आप जैसे प्रभो !, लगी हमारी आस॥596॥

ॐ ह्रीं श्री कामघ्ने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'कामद' है नाम तव, सारे जग में इष्ट।
नाम जाप से आपके, नशते सर्व अनष्टि॥597॥

ॐ ह्रीं श्री कामदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'काम्य' आप कामनीय हो, मंगलमयी जिनेन्द्र।
तव चरणों में वन्दना, करते इन्द्र नरेन्द्र॥598॥

ॐ ह्रीं श्री काम्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कामधेनु' कहलाए तव, वांछित फल दातार।
इच्छा मम पूरण करो, वन्दन बारम्बार॥599॥

ॐ ह्रीं श्री कामधेनवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम 'अरिञ्जय' आपका, अरि का किया विनाश।
विशद ज्ञान को प्राप्त कर, कीन्हा लोक प्रकाश॥600॥

ॐ ह्रीं श्री अरिञ्जयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ्य

महामुनि शुभ नाम आदि कर, रहा अरिञ्जय अन्तिम नाम।
भाव सहित यह नाम जाप कर, प्राणी पावें मुक्ति धाम॥
नाम जाप की महिमा जग में, कही गई है अपरम्पार।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, करें वन्दना बारम्बार॥6॥

ॐ ह्रीं श्री महामुन्यादिशतनामेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शान्तिधारा (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

सप्तम वलयः

दोहा- आदि का है नाम यह, असंस्कृतसुसंस्कार ।
पुष्पाञ्जलि से पूजते, पाने को भव पार ॥

(इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(छन्द भुजंगी)

‘असंस्कृतसुसंस्कार’ नाम आपका, अन्त किया आपने सर्वपाप का ।
हे प्रभु ! नाममंत्र जाप हम करें, भाव सहित पाद मूल शीश हम धरें ॥601 ॥
ॐ ह्रीं श्री असंस्कृतसुसंस्काराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘अप्राकृत’ तुम्हीं हो स्वाभाविक प्रभो !, ज्ञान के आप स्वामी कहाए विभो !
हे प्रभु ! नाममंत्र जाप हम करें, भाव सहित पाद मूल शीश हम धरें ॥602 ॥
ॐ ह्रीं श्री अप्राकृताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे प्रभो ! ‘वैकृतान्तकृत’ कहाए तुम्ही, मोह अरु विकारादि नशाए तुम्ही ॥
हे प्रभु ! नाममंत्र जाप हम करें, भाव सहित पाद मूल शीश हम धरें ॥603 ॥
ॐ ह्रीं श्री वैकृतांतकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘अंतकृत’ आप हो कर्म नाशिया, जन्म-जरा-मृत्यु का नाश तुम किया ।
हे प्रभु ! नाममंत्र जाप हम करें, भाव सहित पाद मूल शीश हम धरें ॥604 ॥
ॐ ह्रीं श्री अंतकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे प्रभो ! ‘कांतगु’ नाम आपका, दिव्य ध्वनि से हो क्षय पूर्ण पाप का ॥
हे प्रभु ! नाममंत्र जाप हम करें, भाव सहित पाद मूल शीश हम धरें ॥605 ॥
ॐ ह्रीं श्री कांतगवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘कान्त’ हो प्रभु आप महारम्य हो, हे त्रिलोकी प्रभु ज्ञान के गम्य हो ॥
हे प्रभु ! नाममंत्र जाप हम करें, भाव सहित पाद मूल शीश हम धरें ॥606 ॥
ॐ ह्रीं श्री कान्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे नाथ ! आप कहलाए ‘चिंतामणि’, साधु संघ के प्रभु आप हो गणी ॥
हे प्रभु ! नाममंत्र जाप हम करें, भाव सहित पाद मूल शीश हम धरें ॥607 ॥
ॐ ह्रीं श्री चिन्तामणये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘अभीष्टद’ प्रभो लोक में कहे आप हो, नष्ट सभी आप करते संताप हो ॥
हे प्रभु ! नाममंत्र जाप हम करें, भाव सहित पाद मूल शीश हम धरें ॥608 ॥
ॐ ह्रीं श्री अभीष्टदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे ‘अजित’ आप हो कर्म इन्द्रियजयी, अतः कहलाए आप हो कर्म के क्षयी ॥
हे प्रभु ! नाममंत्र जाप हम करें, भाव सहित पाद मूल शीश हम धरें ॥609 ॥
ॐ ह्रीं श्री अजिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘जितकामारि’ आप जीत काम को, अन्त किया आपने सर्वपाप का ।
हे प्रभु ! नाममंत्र जाप हम करें, भाव सहित पाद मूल शीश हम धरें ॥610 ॥
ॐ ह्रीं श्री जितकामारये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(चाल छन्द)

प्रभु ‘अमित’ आप कहलाए, न माप कोई भी पाए ।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई ॥611 ॥
ॐ ह्रीं श्री अमिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिन ‘अमितशासन’ कहलाए, अनुपम पदवी को पाए ।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई ॥612 ॥
ॐ ह्रीं श्री अमितशासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘जितक्रोध’ कहाए स्वामी, जीते कषाय जग नामी ।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई ॥613 ॥
ॐ ह्रीं श्री जितक्रोधाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे ‘जितामित्र’ अविकारी, तुम जीते जगती सारी ।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई ॥614 ॥
ॐ ह्रीं श्री जितामित्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘जितक्लेश’ आप हो स्वामी, तुम हो जिन अन्तर्यामी।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई ॥615॥

ॐ ह्रीं श्री जितक्लेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन कहे ‘जितान्तक’ भाई, मृत्यु जीते दुखदायी।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई ॥616॥

ॐ ह्रीं श्री जितांतकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम हो ‘जिनेन्द्र’ अविकारी, इस जग में मंगलकारी।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई ॥617॥

ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे ‘परमानन्द’ सुखारी, हो जन-जन के हितकारी।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई ॥618॥

ॐ ह्रीं श्री परमानंदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर ‘मुनीन्द्र’ कहलाए, मुनियों के स्वामी गए।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई ॥619॥

ॐ ह्रीं श्री मुनीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘दुन्दुभिस्वन’ हे स्वामी, त्रिभुवन पति अन्तर्यामी।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई ॥620॥

ॐ ह्रीं श्री दुंदुभिस्वनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन ‘महेन्द्रवंद्या’ जानो, जग पूज्य प्रभु पहिचानो।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई ॥621॥

ॐ ह्रीं श्री महेन्द्रवंद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘योगीन्द्र’ हुए अविकारी, इस जग में करुणाकारी।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई ॥622॥

ॐ ह्रीं श्री योगीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर ‘यतीन्द्र’ कहलाए, इस जग में युक्ति पाए।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई ॥623॥

ॐ ह्रीं श्री यतीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे ‘नाभिनन्दन’ स्वामी, हे मोक्ष महापथ गामी।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई ॥624॥

ॐ ह्रीं श्री नाभिनंदनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘नाभेय’ आप कहलाए, आदिम तीर्थकर गए।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई ॥625॥

ॐ ह्रीं श्री नाभेयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘नाभिजा’ कर्म के नाशी, रवि केवलज्ञान प्रकाशी।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई ॥626॥

ॐ ह्रीं श्री नाभिजा नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम हो ‘अजात’ हे स्वामी !, हो जन्म रहित शिवगामी।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई ॥627॥

ॐ ह्रीं श्री अजाताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘सुव्रत’ सुव्रत के धारी, हे महाव्रती ! अनगारी।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई ॥628॥

ॐ ह्रीं श्री सुव्रताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे ‘मनु’ सुपथ के दाता, हे कर्मभूमि ! विज्ञाता।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई ॥629॥

ॐ ह्रीं श्री मनवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘उत्तम’ से उत्तम गए, त्रैलोक्यपति कहलाए।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई ॥630॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(श्री छन्द)

हे जिन ! आप 'अभेद्य' कहाए, तुम्हें भेद कोई न पाए।

नाम जाप तब करते स्वामी, कृपा करो हे अन्तर्यामी ॥631॥

ॐ ह्रीं श्री अभेद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'अनत्यय' आप कहाए, नष्ट नहीं कोई कर पाए।

नाम जाप तब करते स्वामी, कृपा करो हे अन्तर्यामी ॥632॥

ॐ ह्रीं श्री अनत्ययाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु जी श्रेष्ठ 'अनाशवान' गाए, महिमा पार न कोई पाए।

नाम जाप तब करते स्वामी, कृपा करो हे अन्तर्यामी ॥633॥

ॐ ह्रीं श्री अनाश्वते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अधिक' आपको कहते प्राणी, ऐसा मान रही जिनवाणी।

नाम जाप तब करते स्वामी, कृपा करो हे अन्तर्यामी ॥634॥

ॐ ह्रीं श्री अधिकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अधिगुरु' नाम आपने पाया, जन-जन को सद्मार्ग दिखाया।

नाम जाप तब करते स्वामी, कृपा करो हे अन्तर्यामी ॥635॥

ॐ ह्रीं श्री अधिगुरवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुगी' आपकी है शुभ वाणी, प्राणी मात्र की है कल्याणी।

नाम जाप तब करते स्वामी, कृपा करो हे अन्तर्यामी ॥636॥

ॐ ह्रीं श्री सुगिरे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'सुमेधा' बुद्धि के धारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी।

नाम जाप तब करते स्वामी, कृपा करो हे अन्तर्यामी ॥637॥

ॐ ह्रीं श्री सुमेधसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे 'विक्रमी' जग में आले, सर्व लोक में आप निराले।

नाम जाप तब करते स्वामी, कृपा करो हे अन्तर्यामी ॥638॥

ॐ ह्रीं श्री विक्रमिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्वामी' आप प्रभो ! कहलाए, रक्षक सर्व जहाँ में गाए।

नाम जाप तब करते स्वामी, कृपा करो हे अन्तर्यामी ॥639॥

ॐ ह्रीं श्री स्वामिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दुरादिधर्ष' कहाए स्वामी, करुणानिधि हे अन्तर्यामी।

नाम जाप तब करते स्वामी, कृपा करो हे अन्तर्यामी ॥640॥

ॐ ह्रीं श्री दुराधर्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द-मोतियादाम)

'निरुत्सुक' कहलाए जिनराज, सभी प्राणी को तुम पर नाज।

करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप ॥641॥

ॐ ह्रीं श्री निरुत्सुकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप हो सारे जग को इष्ट, अतः कहलाए आप 'विशिष्ट'।

करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप ॥642॥

ॐ ह्रीं श्री विशिष्टाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शिष्टभुक्' कहते हैं कई लोग, शिष्टता का पाये संयोग।

करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप ॥643॥

ॐ ह्रीं श्री शिष्टभुजे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शिष्ट' है प्रभु का अतिशय नाम, शिष्ट हो करते चरण प्रणाम।

करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप ॥644॥

ॐ ह्रीं श्री शिष्टाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्य के 'प्रत्यय' हो हे नाथ !, झुकाते तब चरणों हम माथ।

करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप ॥645॥

ॐ ह्रीं श्री प्रत्ययाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो 'कमनीय' कहाए आप, दर्श कर मिटते हैं अभिशाप।

करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप ॥646॥

ॐ ह्रीं श्री कामनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'अनघा' हो पाप विहीन, पुण्य के फल में रहते लीन।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप॥647॥

ॐ ह्रीं श्री अनघाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'क्षेमि' है प्रभो आपका नाम, करें हम चरणों विशद प्रणाम।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप॥648॥

ॐ ह्रीं श्री क्षेमिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगत के 'क्षेमंकर' जिनराज, चरण में झुकता सकल समाज।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप॥649॥

ॐ ह्रीं श्री क्षेमंकराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो 'अक्षय' हो क्षय से हीन, लोक में रहते हो स्वाधीन।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप॥650॥

ॐ ह्रीं श्री अक्षयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु हो 'क्षेमधर्मपति' आप, नशाने वाले सारे पाप।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप॥651॥

ॐ ह्रीं श्री क्षेमधर्मपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'क्षमी' हो जग में आप विशेष, क्षमा का देते हो संदेश।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप॥652॥

ॐ ह्रीं श्री क्षमिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो तुम हो जग में 'अग्राह्य', जगत में रहते जग से बाह्य।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप॥653॥

ॐ ह्रीं श्री अग्राह्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप का नाम 'ज्ञाननिग्राह्य', नहीं हो अज्ञानी के ग्राह्य।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप॥654॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञाननिग्राह्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहाए 'ज्ञानसुगम्य' जिनेश, जानते ज्ञानी तुम्हें विशेष।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप॥655॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानगम्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निरुत्तर' तुम हो प्रभु विशेष, नहीं तुम सम कोई और जिनेश।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप॥656॥

ॐ ह्रीं श्री निरुत्तराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो 'सुकृति' हो अतिशयकार, श्रेष्ठ हो सुकृति के आधार।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप॥657॥

ॐ ह्रीं श्री सुकृतिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धातु' हो तुम हे जिन भगवन्त, शब्द के ज्ञाता आप अनन्त।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप॥658॥

ॐ ह्रीं श्री धातवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हें 'इज्यार्ह' कहें कई लोग, पूज्य हो तुम पूजा के योग।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप॥659॥

ॐ ह्रीं श्री इज्यार्हाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुनय' तुम नय के हो सापेक्ष, कुनय से पूर्ण रहे निरपेक्ष।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप॥660॥

ॐ ह्रीं श्री सुनयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(श्री छन्द)

नाथ 'श्रीसुनिवास' कहाए, श्री में प्रभु जी धाम बनाए।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी॥661॥

ॐ ह्रीं श्री सुनिवासाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'चतुरानन' ब्रह्मा तुम स्वामी, मोक्ष मार्ग के हो अनुगामी।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी॥662॥

ॐ ह्रीं श्री चतुराननाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘चतुर्वक्त्र’ तुमको सुर देखें, अपना स्वामी प्रभु जी लेखें।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी॥663॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्वक्त्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे ‘चतुरास्य’ करें पद वन्दन, जन्म-जरादिका हो खण्डन।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी॥664॥

ॐ ह्रीं श्री चतुरास्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ ‘चतुर्मुख’ आप कहाए, चऊ दिशि दर्शन सबने पाए।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी॥665॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्मुखाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘सत्यात्मा’ प्रभु सत्य स्वरूपी, आप कहाए हो चिद्रूपी।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी॥666॥

ॐ ह्रीं श्री सत्यात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘सत्यविज्ञान’ आप कहलाए, अतिशय केवलज्ञान जगाए।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी॥667॥

ॐ ह्रीं श्री सत्यविज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘सत्यसुवाक्’ तुम्ही हो स्वामी, वाक् सुधामृत देते नामी।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी॥668॥

ॐ ह्रीं श्री सत्यवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘सत्यसुशासन’ तुमने पाया, भवि जीवों का भाग्य जगाया।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी॥669॥

ॐ ह्रीं श्री सत्यशासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘सत्याशीष’ है नाम तुम्हारा, सर्व जहाँ में अपरम्पारा।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी॥670॥

ॐ ह्रीं श्री सत्याशिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘सत्यसंधान’ आप कहलाए, तीन लोक की प्रभुता पाए।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी॥671॥

ॐ ह्रीं श्री सत्यसंधानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘सत्य’ आप हो सत् पथदर्शी, द्वादशांग जिन वाक्प्रदर्शी।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी॥672॥

ॐ ह्रीं श्री सत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘सत्यपरायण’ आप कहाए, जन-जन को सन्मार्ग दिखाए।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी॥673॥

ॐ ह्रीं श्री सत्यपरायणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘स्थेयान्’ स्थिर हो स्वामी, अविकारी हे अन्तर्यामी !।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी॥674॥

ॐ ह्रीं श्री स्थेयसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘स्थवीयान्’ महिमा के धारी, तीन लोक में करुणाकारी।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी॥675॥

ॐ ह्रीं श्री स्थवीयसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘नेदियान्’ प्रभु आप कहाए, अतिशय महिमा को दिखलाए।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी॥676॥

ॐ ह्रीं श्री नेदीयसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘दवीयान्’ है नाम तुम्हारा, सारे जग का संकटहारा।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी॥677॥

ॐ ह्रीं श्री दवीयसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो ! ‘दूरदर्शन’ कहलाते, दूर से दर्शन प्राणी पाते।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी॥678॥

ॐ ह्रीं श्री दूरदर्शनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'अणोरणीयान' कहाते, नहीं दृष्टिगोचर हो पाते।

नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी॥679॥

ॐ ह्रीं श्री अणोरणीयसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अनणू' कहते तुमको प्राणी, ऐसी है शुभ आगम वाणी।

नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी॥680॥

ॐ ह्रीं श्री अनणवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल छन्द)

'गुरुराद्यगरीयसा' गाए, इस जग के गुरु कहाए।

प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी॥681॥

ॐ ह्रीं श्री गरीयसमाद्यगुरवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'सदायोग' हैं आले, चेतन में रमने वाले।

प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी॥682॥

ॐ ह्रीं श्री सदायोगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'सदाभोग' हैं स्वामी, हैं प्रातिहार्य अनुगामी।

प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी॥683॥

ॐ ह्रीं श्री सदाभोगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'सदातृप्त' कहलाते, तृप्ति भोगों से पाते।

प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी॥684॥

ॐ ह्रीं श्री सदातृप्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है नाम 'सदाशिव' प्यारा, भव्यों का एक सहारा।

प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी॥685॥

ॐ ह्रीं श्री सदाशिवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सदागति' के धारी, पञ्चम गति प्यारी-प्यारी।

प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी॥686॥

ॐ ह्रीं श्री सदागतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'सदासौख्य' शुभ पाया, यह है संयम की माया।

प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी॥687॥

ॐ ह्रीं श्री सदासौख्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं 'सदाविद्य' जिन स्वामी, मुक्ति पथ के अनुगामी।

प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी॥688॥

ॐ ह्रीं श्री सदाविद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन कहे 'सदोदय' भाई, यह है प्रभु की प्रभुताई।

प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी॥689॥

ॐ ह्रीं श्री सदोदयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर 'सुघोष' कहलाए, शुभ दिव्य ध्वनि सुनाए।

प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी॥690॥

ॐ ह्रीं श्री सुघोषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'सुमुख' के धारी, छवि सुन्दर अतिशयकारी।

प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी॥691॥

ॐ ह्रीं श्री सुमुखाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सौम्य' मूर्ति कहलाए, जिन श्रेष्ठ सौम्यता पाए।

प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी॥692॥

ॐ ह्रीं श्री सौम्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'सुखद' सुखों के धारी, सुखदायी हो अनगारी।

प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी॥693॥

ॐ ह्रीं श्री सुखदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सुहित' सु हितकर गाए, जो शास्वत सुख उपजाए।

प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी॥694॥

ॐ ह्रीं श्री सुहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो 'सुहृत्' हितु कहलाए, जग हित करने को आए।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी ॥695॥

ॐ ह्रीं श्री सुहृदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम हो 'सुगुप्त' जिन स्वामी, तव चरणों में प्रणमामी।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी ॥696॥

ॐ ह्रीं श्री सुगुप्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'गुप्तिभृत' गुप्ति धारी, निज आतम ब्रह्म बिहारी।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी ॥697॥

ॐ ह्रीं श्री गुप्तिभृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु नाम 'गोप्ता' पाए, रक्षक जग के कहलाए।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी ॥698॥

ॐ ह्रीं श्री गोप्त्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'लोकाध्यक्ष' कहाते, जो व्याधि उपाधि नशाते।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी ॥699॥

ॐ ह्रीं श्री लोकाध्यक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो कहे 'दमेश्वर' भाई, निज के ऊपर जय पाई।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी ॥700॥

ॐ ह्रीं श्री दमेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ्य

प्रथम असंस्कृत को आदिकर, अन्त दमेश्वर तक सौ नाम।
पूज्य हुए हैं तीन लोक में, उनको बारम्बार प्रणाम ॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, करते हम सम्यक् अर्चन।
तव पद पाने हेतु प्रभु हो, चरणों में शत्-शत् वन्दन ॥7॥

ॐ ह्रीं श्री असंस्कृतसुसंस्कारादिशतनामेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शान्तिधारा (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

अष्टम वलयः

दोहा- वृहद्बृहस्पति आदि शुभ, पढ़कर के शत नाम।

ध्याकर के हम भी विशद, हो जाएँ निष्काम ॥

(इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(सुखमा छन्द)

'वृहद् बृहस्पति' आप कहाए, सुरपति मिलकर शरण में आए।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ ॥701॥

ॐ ह्रीं श्री वृहद्बृहस्पतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'वाग्मी' आप कहाए, श्रेष्ठ वचन सुनने तव आए।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ ॥702॥

ॐ ह्रीं श्री वाग्मिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वाचस्पति' हे अतिशयकारी !, सर्व जहाँ में मंगलकारी।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ ॥703॥

ॐ ह्रीं श्री वाचस्पतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'उदारधी' जग के स्वामी, करुणानिधि हे अन्तर्यामी !।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ ॥704॥

ॐ ह्रीं श्री उदारधिये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ 'मनीषी' प्रभु कहलाए, अतिशय केवल ज्ञान जगाए।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ ॥705॥

ॐ ह्रीं श्री मनीषिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धिषण' आपको कहते भाई, प्रभु सर्वज्ञता तुमने पाई।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ ॥706॥

ॐ ह्रीं श्री धिषणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'धीमान्' कहाए, कौन आपकी महिमा गाए।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ॥707॥

ॐ ह्रीं श्री धीमते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शेमुषीश' हो जग के त्राता, अतिशयकारी भाग्य विधाता।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ॥708॥

ॐ ह्रीं श्री शेमुषीशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गिरांपति' प्रभु जो कहलाए, सब भाषामय ध्वनि सुनाए।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ॥709॥

ॐ ह्रीं श्री गिरांपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नैकरूप' प्रभु आप कहाए, ब्रह्मा विष्णु महेश्वर गाये।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ॥710॥

ॐ ह्रीं श्री नैकरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नयोत्तुंग' तुमको सब जाने, नय के ज्ञाता तुमको माने।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ॥711॥

ॐ ह्रीं श्री नयोत्तुंगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नैकात्मा' त्रिभुवन के स्वामी, गुण पाये तुमने प्रभु नामी।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ॥712॥

ॐ ह्रीं श्री नैकात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नैकधर्मकृत' आप कहाए, धर्म अनेक वस्तु में गाए।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ॥713॥

ॐ ह्रीं श्री नैकधर्मकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अविज्ञेय' जिन प्रभु कहलाए, महिमा कोई जान न पाए।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ॥714॥

ॐ ह्रीं श्री अविज्ञेयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अप्रतर्क्यात्मा' तुम स्वामी, तर्क रहित हो अन्तर्यामी।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ॥715॥

ॐ ह्रीं श्री अप्रतर्क्यात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'कृतज्ञ' तब महिमा न्यारी, जन-जन के हो करुणाकारी।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ॥716॥

ॐ ह्रीं श्री कृतज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कृतलक्षण' है नाम तुम्हारा, लगता सबको प्यारा-प्यारा।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ॥717॥

ॐ ह्रीं श्री कृतलक्षणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ज्ञानगर्भ' स्वामी कहलाए, निज का अतिशय ज्ञान जगाए।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ॥718॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानगर्भाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दयागर्भ' त्रिभुवन में गाए, प्राणी मात्र पर दया दिखाए।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ॥719॥

ॐ ह्रीं श्री दयागर्भाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'रत्नगर्भ' महिमा के धारी, वर्षे रत्न गर्भ में भारी।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ॥720॥

ॐ ह्रीं श्री रत्नगर्भाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पद्मि छन्द)

हे नाथ ! 'प्रभास्वर' कहे आप, त्रैलोक्य प्रकाशी रहित पाप।
तब नाममंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु ! हम मुक्तिराज॥721॥

ॐ ह्रीं श्री प्रभास्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'पद्मगर्भ' तुम हो अनन्त, कीन्हा है गर्भ का पूर्ण अन्त।
तब नाममंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु ! हम मुक्तिराज॥722॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मगर्भाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'जगद्गर्भ' जग में महान्, तुमने पाए थे तीन ज्ञान ।
तव नाममंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु ! हम मुक्तिराज ॥723॥

ॐ ह्रीं श्री जगद्गर्भाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु 'हेमगर्भ' हैं कांतिमान, है वर्ण स्वर्ण सम शोभमान ।
तव नाममंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु ! हम मुक्तिराज ॥724॥

ॐ ह्रीं श्री हेमगर्भाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे देव ! 'सुदर्शन' कहे आप, तव दर्शन से कट जाँय पाप ।
तव नाममंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु ! हम मुक्तिराज ॥725॥

ॐ ह्रीं श्री सुदर्शनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे 'लक्ष्मीवान्' त्रैलोक्य नाथ, सब वन्दन करते जोड़ हाथ ।
तव नाममंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु ! हम मुक्तिराज ॥726॥

ॐ ह्रीं श्री लक्ष्मीवते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु 'त्रिदशाध्यक्ष' जग में महान्, अतिशयकारी गुण के निधान ।
तव नाममंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु ! हम मुक्तिराज ॥727॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिदशाध्यक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे 'दृढीयान' दृढ़ हो अनूप, सुर-नर झुकते तव चरण भूप ।
तव नाममंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु ! हम मुक्तिराज ॥728॥

ॐ ह्रीं श्री दृढीयसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु 'इन' त्रिभुवन के रहे ईश, जग जीव झुकाते चरण शीश ।
तव नाममंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु ! हम मुक्तिराज ॥729॥

ॐ ह्रीं श्री इनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'ईशित' तुम हो जग में जिनेश, सब दोष निवारक हो विशेष ।
तव नाममंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु ! हम मुक्तिराज ॥730॥

ॐ ह्रीं श्री ईशित्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

है श्रेष्ठ 'मनोहर' विशद रूप, अतिशयकारी जग में अनूप ।
तव नाममंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु ! हम मुक्तिराज ॥731॥

ॐ ह्रीं श्री मनोहराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तुम 'मनोज्ञांग' हो सुभग रूप, सुख-शांति प्रदायक शांत रूप ।
तव नाममंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु ! हम मुक्तिराज ॥732॥

ॐ ह्रीं श्री मनोज्ञांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे 'धीर' वीर गुण के निधान, त्रिभुवन के ज्ञाता हो महान ।
तव नाममंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु ! हम मुक्तिराज ॥733॥

ॐ ह्रीं श्री धीराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'गम्भीर' आप जग में विशेष, न तुम सम कोई है जिनेश ।
तव नाममंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु ! हम मुक्तिराज ॥734॥

ॐ ह्रीं श्री गम्भीरशासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे 'धरमयूप' जग में प्रधान, तुम गुण रत्नों के हो निधान ।
तव नाममंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु ! हम मुक्तिराज ॥735॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मयूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे 'दयायाग' सुखप्रद जिनेश, तुम नाश किए सब राग-द्वेष ।
तव नाममंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु ! हम मुक्तिराज ॥736॥

ॐ ह्रीं श्री दयायागाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे 'धरमनेमि' जिनवर महान्, तुम धर्म धुरी हो जग में प्रधान ।
तव नाममंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु ! हम मुक्तिराज ॥737॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनेमये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिनराज 'मुनीश्वर' रहे आप, अविकारी नाशे सर्व पाप ।
तव नाममंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु ! हम मुक्तिराज ॥738॥

ॐ ह्रीं श्री मुनीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे 'धर्मचक्रायुध' धर्म रूप, इस से भी हो तुम प्रथग्रूप ।
तव नाममंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु ! हम मुक्तिराज ॥739॥
ॐ ह्रीं श्री धर्मचक्रायुधाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे 'देव' परम गुण के निधान, तुम जगत पूज्य जग में महान ।
तव नाममंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु ! हम मुक्तिराज ॥740॥
ॐ ह्रीं श्री देवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(रोला छन्द)

'कर्महा' तुम हो नाथ, सब कर्मों के नाशी, अनन्त चतुष्टय प्राप्त, केवलज्ञान प्रकाशी ।
नाम मंत्र तव श्रेष्ठ, जग में पूज्य कहाए, मुक्ति वधु को पाय, जो भी ध्याये गाए ॥741॥
ॐ ह्रीं श्री कर्मघ्ने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'धरमघोषण' है नाम, श्रेष्ठ धर्म के धारी, शिव नगरी के साथ, जग में मंगलकारी ।
नाम मंत्र तव श्रेष्ठ, जग में पूज्य कहाए, मुक्ति वधु को पाय, जो भी ध्याये गाए ॥742॥
ॐ ह्रीं श्री धर्मघोषणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे 'अमोघवच' देव, व्यर्थ वचन न जावें, हृदय धारकर जीव, मुक्ति वधु को पावें ।
नाम मंत्र तव श्रेष्ठ, जग में पूज्य कहाए, मुक्ति वधु को पाय, जो भी ध्याये गाए ॥743॥
ॐ ह्रीं श्री अमोघवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'अमोघाज्ञ' भगवान, आज्ञा सुर सिर धारें, प्राणी आज्ञा पाय, मुक्ति मार्ग सम्हारें ।
नाम मंत्र तव श्रेष्ठ, जग में पूज्य कहाए, मुक्ति वधु को पाय, जो भी ध्याये गाए ॥744॥
ॐ ह्रीं श्री अमोघाज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'निर्मल' मल से हीन, कर्म सभी तुम नाशे, हुए स्वयं में लीन, निज स्वरूप प्रकाशे ।
नाम मंत्र तव श्रेष्ठ, जग में पूज्य कहाए, मुक्ति वधु को पाय, जो भी ध्याये गाए ॥745॥
ॐ ह्रीं श्री निर्मलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'अमोघशासन' सुनाम, जिनवर तुमने पाया, सकल सुखों का धाम, जग को प्रभु बनाया ।
नाम मंत्र तव श्रेष्ठ, जग में पूज्य कहाए, मुक्ति वधु को पाय, जो भी ध्याये गाए ॥746॥
ॐ ह्रीं श्री अमोघशासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे 'सुरूप' सुखकार, जग में आप निराले, नर सुरेन्द्र से पूज्य, शांति करने वाले ।
नाम मंत्र तव श्रेष्ठ, जग में पूज्य कहाए, मुक्ति वधु को पाय, जो भी ध्याये गाए ॥747॥
ॐ ह्रीं श्री सुरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'सुभग' आपको देख, सब आकर्षित होते, राग-द्वेष अरु खेद, प्राणी अपना खोते ।
नाम मंत्र तव श्रेष्ठ, जग में पूज्य कहाए, मुक्ति वधु को पाय, जो भी ध्याये गाए ॥748॥
ॐ ह्रीं श्री सुभगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिनवर तुम हो 'त्यागि', सब कुछ तुमने त्यागा, लगा अनादि राग, क्षण में तुमसे भागा ।
नाम मंत्र तव श्रेष्ठ, जग में पूज्य कहाए, मुक्ति वधु को पाय, जो भी ध्याये गाए ॥749॥
ॐ ह्रीं श्री त्यागिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'ज्ञातृ' तुम हो नाथ, सारे जग के ज्ञाता, जग में श्रेष्ठ जिनेश, विधि के आप विधाता ।
नाम मंत्र तव श्रेष्ठ, जग में पूज्य कहाए, मुक्ति वधु को पाय, जो भी ध्याये गाए ॥750॥
ॐ ह्रीं श्री ज्ञात्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

देव 'समाहित' आप, अतिशय ज्ञानी ध्यानी, ध्वनि आपकी श्रेष्ठ, कही जग में जिनवाणी ।
नाम मंत्र तव श्रेष्ठ, जग में पूज्य कहाए, मुक्ति वधु को पाय, जो भी ध्याये गाए ॥751॥
ॐ ह्रीं श्री समाहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'सुस्थित' सुख में वास, आपने अक्षय पाया, मुक्ति रमा के पास, तुमने धाम बनाया ।
नाम मंत्र तव श्रेष्ठ, जग में पूज्य कहाए, मुक्ति वधु को पाय, जो भी ध्याये गाए ॥752॥
ॐ ह्रीं श्री सुस्थिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'स्वस्थ' कहाए आप, प्रभु सब रोग विनाशी, हुए आप आत्मस्थ, केवल ज्ञान प्रकाशी ।
नाम मंत्र तव श्रेष्ठ, जग में पूज्य कहाए, मुक्ति वधु को पाय, जो भी ध्याये गाए ॥753॥
ॐ ह्रीं श्री स्वस्थाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'स्वास्थ्यभाक्' जिनराज, रोग न होते कोई, शिव नगरी के ताज, आपने बाधा खोई ।
नाम मंत्र तव श्रेष्ठ, जग में पूज्य कहाए, मुक्ति वधु को पाय, जो भी ध्याये गाए ॥754॥
ॐ ह्रीं श्री स्वास्थ्यभाजे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘नीरजस्क’ जिन देव, कर्म रहित कहलाए, रज कर्मों की एव, सारी आप उड़ाए।
नाम मंत्र तव श्रेष्ठ, जग में पूज्य कहाए, मुक्ति वधु को पाय, जो भी ध्याये गाए॥755॥

ॐ ह्रीं श्री नीरजस्काय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप ‘निरुद्धव’ देव, त्रिभुवन स्वामी गाए, गर्भादि पर श्रेष्ठ, उत्सव इन्द्र मनाए।
नाम मंत्र तव श्रेष्ठ, जग में पूज्य कहाए, मुक्ति वधु को पाय, जो भी ध्याये गाए॥756॥

ॐ ह्रीं श्री निरुद्धवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे ‘अलेप’ भगवान, कर्म लेप के नाशी, करें विशद गुणगान, तुम हो शिवपुर वासी।
नाम मंत्र तव श्रेष्ठ, जग में पूज्य कहाए, मुक्ति वधु को पाय, जो भी ध्याये गाए॥757॥

ॐ ह्रीं श्री अलेपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘निष्कलंक’ आत्मान, न कलंक हैं कोई, करलो आप समान, आये चरणों सोई।
नाम मंत्र तव श्रेष्ठ, जग में पूज्य कहाए, मुक्ति वधु को पाय, जो भी ध्याये गाए॥758॥

ॐ ह्रीं श्री निष्कलंकात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘वीतराग’ न राग, रहा आपके तन में, अतः समाए आप, जिनवर मेरे मन में।
नाम मंत्र तव श्रेष्ठ, जग में पूज्य कहाए, मुक्ति वधु को पाय, जो भी ध्याये गाए॥759॥

ॐ ह्रीं श्री वीतरागाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘गतस्पृह’ शुभ नाम, जग में पूजा जाए, मन की सारी चाह, अपनी पूर्ण नशाए।
नाम मंत्र तव श्रेष्ठ, जग में पूज्य कहाए, मुक्ति वधु को पाय, जो भी ध्याये गाए॥760॥

ॐ ह्रीं श्री गतस्पृहाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

इन्द्री वश में कर लिए, ‘वश्येन्द्रिय’ भगवान।

आए दर पे इसलिए, बनने आप समान॥761॥

ॐ ह्रीं श्री वश्येन्द्रियाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘विमुक्तात्मन’ हो प्रभो, हुए कर्म से मुक्त।

अनन्त चतुष्टय पा लिए, गुणानन्त से युक्त॥762॥

ॐ ह्रीं श्री विमुक्तात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘निःसपत्ना’ कहलाए तुम, राग-द्वेष से हीन।

निजानन्द में लीन हो, किया मोह को क्षीण॥763॥

ॐ ह्रीं श्री निःसपत्नाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप ‘जितेन्द्रिय’ हो गये, अविकारी भगवान।

जीते इन्द्रिय के विषय, जग में हुए महान॥764॥

ॐ ह्रीं श्री जितेन्द्रियाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे ‘प्रशान्त’ तुमने किए, कर्म सभी निर्मूल।

मोक्ष मार्ग मेरा करो, हे जिनेन्द्र ! अनुकूल॥765॥

ॐ ह्रीं श्री प्रशांताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ‘अनन्तधामर्षि’ तुम, ऋषियों के सरताज।

चरण कमल में वन्दना, करती सकल समाज॥766॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तधामर्षये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगलमय ‘मंगल’ परम, तीन लोक के ईश।

वन्दन करते भाव से, चरणों में धर शीश॥767॥

ॐ ह्रीं श्री मंगलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘मलहा’ नाशी पाप के, हुए आप भगवान।

कर्म मैल को धो प्रभु, जग में हुए महान॥768॥

ॐ ह्रीं श्री मलघ्ने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘अनघ’ आपने पाप का, कीन्हा पूर्ण विनाश।

चेतन शक्ति प्रकट कर, कीन्हा शिवपुर वास॥769॥

ॐ ह्रीं श्री अनघाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ ‘अनीदृक्’ आप हो, जग में उपमातीत।

श्रेष्ठ गुणों से आपके, रखता है जग प्रीत॥770॥

ॐ ह्रीं श्री अनीदृशे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ आपका नाम शुभ, अतिशय 'उपमाभूत'।

अतः हृदय में आपको, करते हैं आहूत ॥771॥

ॐ ह्रीं श्री उपमाभूताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दिष्ट' आप इस लोक में, अतिशय हुए महान।

नित्य निरंजन श्रेष्ठतम, गुण अनन्त की खान ॥772॥

ॐ ह्रीं श्री दिष्टये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दैव' आपकी जगत में, महिमा अपरम्पार।

शरणागत को शीघ्र ही, कर देते भवपार ॥773॥

ॐ ह्रीं श्री दैवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'अगोचर' आप हो, नभ में किया विहार।

कमल चरण तल सुर रचें, महिमा का नहीं पार ॥774॥

ॐ ह्रीं श्री अगोचराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रूपादि से शून्य तुम, हे 'अमूर्त' जिनराज।

राह दिखाओ नाथ अब, आन सम्हारो काज ॥775॥

ॐ ह्रीं श्री अमूर्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मूर्तिमान' तुम मूर्त हो, जग में अपरम्पार।

परमौदारिक देह का, पाया शुभ आधार ॥776॥

ॐ ह्रीं श्री मूर्तिमते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'एक' अनादि आप हो, रहे जगत में एक।

जग में रहकर के स्वयं, धारे रूप अनेक ॥777॥

ॐ ह्रीं श्री एकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नैक' आपके गुण कई, जो हैं गणनातीत।

गुण पाने प्रभु आपके, रखते चरणों प्रीत ॥778॥

ॐ ह्रीं श्री नैकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए 'नानैक' जिन, गुण अनन्त के कोष।

जिनकी पूजा से विशद, जीवन हो निर्दोष ॥779॥

ॐ ह्रीं श्री नानैकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अध्यात्मगम्या' हो तुम्हीं, आत्म तत्त्व के कोष।

तब स्वरूप पावें वही, जो होते निर्दोष ॥780॥

ॐ ह्रीं श्री अध्यात्मगम्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सुखमा छन्द)

'अगम्यात्मा' प्रभु कहलाए, मिथ्या ज्ञानी जान न पाए।

नामावलि पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए ॥781॥

ॐ ह्रीं श्री अगम्यात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे 'योगविद्' अन्तर्यामी, मोक्ष मार्ग के प्रभु अनुगामी।

नामावलि पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए ॥782॥

ॐ ह्रीं श्री योगविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'योगिवंदित' आप कहाए, मुक्ति वधु के स्वामी गाए।

नामावलि पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए ॥783॥

ॐ ह्रीं श्री योगिवंदिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्वत्रग' हे जग के स्वामी, वन्दनीय हो जग में नामी।

नामावलि पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए ॥784॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वत्रगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'सदाभावी' कहलाए, नित्य रूपता प्रभु जी पाए।

नामावलि पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए ॥785॥

ॐ ह्रीं श्री सदाभावने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'त्रिकालविषयार्थ' कहाए, त्रैकालिक वस्तु प्रगटाए।

नामावलि पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए ॥786॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिकालविषयार्थदृशे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘शंकर’ आप रहे सुखदाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता ।
नामावलि पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए ॥787॥

ॐ ह्रीं श्री शंकराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘शंवद’ हो अतिशय सुखकारी, वन्दनीय हो मंगलकारी ।
नामावलि पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए ॥788॥

ॐ ह्रीं श्री शंवदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘दान्त’ आप इन्द्रिय के जेता, मन मर्कट के रहे विजेता ।
नामावलि पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए ॥789॥

ॐ ह्रीं श्री दांताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘दमी’ इन्द्रियों को तुम दमते, अतः लोग चरणों में नमते ।
नामावलि पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए ॥790॥

ॐ ह्रीं श्री दमिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘क्षान्तिपरायण’ क्षमा के धारी, क्षमा धारते हो अनगारी ।
नामावलि पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए ॥791॥

ॐ ह्रीं श्री क्षान्तिपरायणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘अधिप’ आपको कहते प्राणी, जन-जन के हो तुम कल्याणी ।
नामावलि पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए ॥792॥

ॐ ह्रीं श्री अधिपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘परमानंद’ आपने पाया, निजानंद को तुमने ध्याया ।
नामावलि पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए ॥793॥

ॐ ह्रीं श्री परमानंदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘परमात्मज्ञ’ आप कहलाए, पर को जिन सम आप बनाए ।
नामावलि पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए ॥794॥

ॐ ह्रीं श्री परमात्मज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु ‘परात्पर’ हो अविकारी, श्रेष्ठ जगत में मंगलकारी ।
नामावलि पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए ॥795॥

ॐ ह्रीं श्री परात्पराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘त्रिजगद्वल्लभ’ हो तुम स्वामी, तीन लोक के अन्तर्यामी ।
नामावलि पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए ॥796॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिजगद्वल्लभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिन ‘अभ्यर्च्य’ पूज्यता पाए, सुर नर मुनि से पूज्य कहाए ।
नामावलि पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए ॥797॥

ॐ ह्रीं श्री अभ्यर्च्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘त्रिजगन्मंगलोदय’ अविकारी, तीन लोक में मंगलकारी ।
नामावलि पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए ॥798॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिजगन्मंगलोदयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘त्रिजगत्पतिपूज्याङ्घ्री’ स्वामी, पूज्य शतेन्द्रों से जग नामी ।
नामावलि पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए ॥799॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिजगत्पतिपूज्याङ्घ्रये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘त्रिलोकाग्रशिखामणि’ जिनराज, शिवपुर नगरी के सरताज ।
नामावलि पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए ॥800॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिलोकाग्रशिखामणये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

महार्घ्य

‘वृहद्बृहस्पति’ नाम आदि सौ, पाने वाले जगत महान् ।
सर्व अमंगल हरने वाले, करते हैं जग का कल्याण ।
भवि जीवों के भाग्य विधाता, सर्व जहाँ में अपरम्पार ।
विशद भाव से वन्दन करते, प्रभु चरणों में बारम्बार ॥8॥

ॐ ह्रीं श्री वृहद्बृहस्पत्यादिशतनामेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

नवम वलयः

दोहा- हे त्रिकालदर्शी प्रभु, सौ नामों के साथ ।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, झुका रहे पद माथ ॥

(इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(अनुष्टुप)

हे 'त्रिकालदर्शी' तुम, सब पदार्थ जानते ।
नाम जपें आपका हम, देव तुम्हें मानते ॥801 ॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिकालदर्शिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे प्रभु 'लोकेश' आप, सर्व लोक जानते ।
नाम जपें आपका हम, देव तुम्हें मानते ॥802 ॥

ॐ ह्रीं श्री लोकेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'लोकधाता' आप हो, श्रेष्ठ वृत्त धारते ।
नाम जपें आपका हम, देव तुम्हें मानते ॥803 ॥

ॐ ह्रीं श्री लोकधात्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दृढ़वत हो लोक में, सर्व कर्म हानते ।
नाम जपें आपका हम, देव तुम्हें मानते ॥804 ॥

ॐ ह्रीं श्री दृढ़व्रताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'सर्वलोकातिग', लोग तुम्हें जानते ।
नाम जपें आपका हम, देव तुम्हें मानते ॥805 ॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वलोकातिगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'पूज्य' आप लोक में, सर्व कर्म हानते ।
नाम जपें आपका हम, देव तुम्हें मानते ॥806 ॥

ॐ ह्रीं श्री पूज्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'सर्वलोकैकसारथी', कर रहे हम आरती ।

दिव्य ध्वनि आपकी, पूज्यनीय भारती ॥807 ॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वलोकैकसारथये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे 'पुराण' आपको, ये सृष्टि पुकारती ।

दिव्य ध्वनि आपकी, पूज्यनीय भारती ॥808 ॥

ॐ ह्रीं श्री पुराणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'पुरुष' नाम आत्मा, अनादि से धारती ।

दिव्य ध्वनि आपकी, पूज्यनीय भारती ॥809 ॥

ॐ ह्रीं श्री पुरुषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'पूर्व' नाम आपका, ये जगती पुकारती ।

दिव्य ध्वनि आपकी है, पूज्यनीय भारती ॥810 ॥

ॐ ह्रीं श्री पूर्वाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'कृतपूर्वांगविस्तर', हो अंग पूर्ण धारी ।

पाद पद्म में प्रभु है, वन्दना हमारी ॥811 ॥

ॐ ह्रीं श्री कृतपूर्वांगविस्तराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'आदिदेव' आप हो, जिन धर्म धारी ।

पाद पद्म में प्रभु, है वन्दना हमारी ॥812 ॥

ॐ ह्रीं श्री आदिदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'पुराणाद्य' आप हो, समता के धारी ।

पाद पद्म में प्रभु, है वन्दना हमारी ॥813 ॥

ॐ ह्रीं श्री पुराणाद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'पुरुदेव' आप रहे, हो कल्याणकारी ।

पाद पद्म में प्रभु, है वन्दना हमारी ॥814 ॥

ॐ ह्रीं श्री पुरुदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘अधिदेवता’ की है, महिमा कुछ न्यारी।

पाद पद्म में प्रभु, है वन्दना हमारी ॥815॥

ॐ ह्रीं श्री अधिदेवतायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘युगमुख्य’ आप हो, युग के अवतारी।

पाद पद्म में प्रभु, है वन्दना हमारी ॥816॥

ॐ ह्रीं श्री युगमुख्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘युगज्येष्ठ’ युग के, हो श्रेष्ठ धर्म धारी।

पाद पद्म में प्रभु, है वन्दना हमारी ॥817॥

ॐ ह्रीं श्री युगज्येष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘युगादिस्थितिदेशक’, हे देशना के धारी।

पाद पद्म में प्रभु, है वन्दना हमारी ॥818॥

ॐ ह्रीं श्री युगादिस्थितिदेशकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘कल्याणवर्ण’ हो, जग में कल्याणकारी।

पाद पद्म में प्रभु, है वन्दना हमारी ॥819॥

ॐ ह्रीं श्री कल्याणवर्णाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ ! ‘कल्याण’ करो, आये हैं पुजारी।

पाद पद्म में प्रभु, है वन्दना हमारी ॥820॥

ॐ ह्रीं श्री कल्याणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द-मोतियादाम)

नाथ है ‘कल्य’ आपका नाम, मोक्ष तव अतिशयकारी धाम।

जपें हम नाममंत्र की माल, चरण में वन्दन करें त्रिकाल ॥821॥

ॐ ह्रीं श्री कल्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो ‘कल्याणलक्षणः’ आप, करें हम सदा आपका जाप।

जपें हम नाममंत्र की माल, चरण में वन्दन करें त्रिकाल ॥822॥

ॐ ह्रीं श्री कल्याणलक्षणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे ‘कल्याणप्रकृति’ देव, बने कल्याणी प्रभु सदैव।

जपें हम नाममंत्र की माल, चरण में वन्दन करें त्रिकाल ॥823॥

ॐ ह्रीं श्री कल्याणप्रकृतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘दीप्रकल्याणआतमा’ आप, नशाओ मेरा प्रभु संताप।

जपें हम नाममंत्र की माल, चरण में वन्दन करें त्रिकाल ॥824॥

ॐ ह्रीं श्री दीप्रकल्याणात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘विकल्मष’ कहलाए जिननाथ, चरण में झुका रहे तव माथ।

जपें हम नाममंत्र की माल, चरण में वन्दन करें त्रिकाल ॥825॥

ॐ ह्रीं श्री विकल्मषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ‘विकलंक’ आप हो सिद्ध, जिनेश्वर तुम हो जगत प्रसिद्ध।

जपें हम नाममंत्र की माल, चरण में वन्दन करें त्रिकाल ॥826॥

ॐ ह्रीं श्री विकलंकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु जी आप कहे ‘कलातीत’, कलाएँ सारी किए अतीत।

जपें हम नाममंत्र की माल, चरण में वन्दन करें त्रिकाल ॥827॥

ॐ ह्रीं श्री कलातीताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहाए ‘कलिलघ्न’ जिनदेव, पाप का छालन करें सदैव।

जपें हम नाममंत्र की माल, चरण में वन्दन करें त्रिकाल ॥828॥

ॐ ह्रीं श्री कलिलघ्नाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेश्वर आप रहे ‘कलाधार’, कलाओं के शुभ हो आधार।

जपें हम नाममंत्र की माल, चरण में वन्दन करें त्रिकाल ॥829॥

ॐ ह्रीं श्री कलाधराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूज्य तुम देवों के भी देव, अतः कहलाए हो ‘देवदेव’।

जपें हम नाममंत्र की माल, चरण में वन्दन करें त्रिकाल ॥830॥

ॐ ह्रीं श्री देवदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहाए आप प्रभु 'जगन्नाथ', अतः तव चरण झुकाते माथ ।
जपें हम नाममंत्र की माल, चरण में वन्दन करें त्रिकाल ॥831॥

ॐ ह्रीं श्री जगन्नाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु तव 'जगतबन्धु' है नाम, करें तव चरणों विशद प्रणाम ।
जपें हम नाममंत्र की माल, चरण में वन्दन करें त्रिकाल ॥832॥

ॐ ह्रीं श्री जगद्वन्धवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु तव 'जगतविभु' है नाम, करे यह सारा जगत प्रणाम ।
जपें हम नाममंत्र की माल, चरण में वन्दन करें त्रिकाल ॥833॥

ॐ ह्रीं श्री जगतविभवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कहाते 'जगतहितैषी' नाथ, जगत का हित करते हो साथ ।
जपें हम नाममंत्र की माल, चरण में वन्दन करें त्रिकाल ॥834॥

ॐ ह्रीं श्री जगद्विहितैषिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(चौपाई)

हे 'लोकज्ञ' जगत के ज्ञाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता ।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी ॥835॥

ॐ ह्रीं श्री लोकज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे 'सर्वज्ञ' आप हितकारी, व्याप्त लोक में हो अविकारी ।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी ॥836॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'जगदग्रज' हो अन्तर्यामी, ज्येष्ठ लोक में हो तुम स्वामी ।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी ॥837॥

ॐ ह्रीं श्री जगदग्रजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

आप 'चराचरगुरु' कहाए, इस जग को सन्मार्ग दिखाए ।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी ॥838॥

ॐ ह्रीं श्री चराचरगुरवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'गोप्य' आप गुप्ति के धारी, रक्षक हो तुम विस्मयकारी ।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी ॥839॥

ॐ ह्रीं श्री गोप्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'गूढात्मा' हे नाथ कहाए, इन्द्रिय गोचर न हो पाए ।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी ॥840॥

ॐ ह्रीं श्री गूढात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'गूढसुगोचर' तुम हो स्वामी, ज्ञानी जन हैं तव अनुगामी ।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी ॥841॥

ॐ ह्रीं श्री गूढगोचराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'सद्योजात' आप कहलाए, भेष दिगम्बर प्रभु जी पाए ।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी ॥842॥

ॐ ह्रीं श्री सद्योजाताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हैं 'प्रकाशात्मा' जिनदेवा, सुर नर करे आपकी सेवा ।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी ॥843॥

ॐ ह्रीं श्री प्रकाशात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'ज्वलज्ज्वलनसप्रभ' हे स्वामी !, कांतिमान हे अन्तर्यामी ! ।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी ॥844॥

ॐ ह्रीं श्री ज्वलज्ज्वलनसप्रभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु 'आदित्यवर्ण' कहलाए, सहस्र रश्मि सम कांति पाए ।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी ॥845॥

ॐ ह्रीं श्री आदित्यवर्णाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे 'भर्माभ' श्रेष्ठ छवि धारी, महिमा है इस जग से न्यारी ।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी ॥846॥

ॐ ह्रीं श्री भर्माभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘सुप्रभ’ अतिशय शोभा पाते, सूर्य चन्द्रमा कई लजाते ।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी ॥847॥

ॐ ह्रीं श्री सुप्रभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘कनकप्रभ’ तव दीप्ति निराली, तप्त स्वर्ण समकांती वाली ।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी ॥848॥

ॐ ह्रीं श्री कनकप्रभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘सुवर्णवर्ण’ तव महिमा न्यारी, दीप्तिमान हो जिन अविकारी ।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी ॥849॥

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णवर्णाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे ‘रुक्माभ’ स्वर्ण छविधारी, तीन लोक में मंगलकारी ।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी ॥850॥

ॐ ह्रीं श्री रुक्माभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘सूर्यकोटिसमप्रभ’ तुम स्वामी, दयानिधि हे अन्तर्यामी ! ।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी ॥851॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यकोटिसमप्रभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘तपनीयनिभ’ प्रभु जी कहलाए, तप्त स्वर्ण सम आभा पाए ।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी ॥852॥

ॐ ह्रीं श्री तपनीयनिभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

उच्च देह धर ‘तुंग’ कहाए, पद सर्वोच्च प्रभु जी पाए ।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी ॥853॥

ॐ ह्रीं श्री तुंगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘बालार्काभो’ यह जग जाने, उदित सूर्य सम कांति माने ।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी ॥854॥

ॐ ह्रीं श्री बालार्काभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘अनलप्रभ’ हो अन्तर्यामी, निर्मल कांति है तव नामी ।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी ॥855॥

ॐ ह्रीं श्री अनलप्रभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे ‘संध्याभ्रबभ्रू’ छवि धारी, छवि सांझ के रवि सम प्यारी ।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी ॥856॥

ॐ ह्रीं श्री संध्याभ्रबभ्रवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु ‘हेमाभ’ आप कहलाए, स्वर्ण समान देह प्रभु पाए ।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी ॥857॥

ॐ ह्रीं श्री हेमाभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘तप्ताचामीकरप्रभ’ स्वामी, हेम वर्ण धारी तव नामी ।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी ॥858॥

ॐ ह्रीं श्री तप्तचामीकरप्रभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘निष्टप्तकनकच्छाय’ कहाए, यहाँ दीप्ति धारी कहलाए ।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी ॥859॥

ॐ ह्रीं श्री निष्टप्तकनकच्छायाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘कनत्कांचनासन्निभ’ देही, पाकर भी हो तुम वैदेही ।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी ॥860॥

ॐ ह्रीं श्री कनत्कांचनसन्निभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(भुजंग प्रयात)

‘हिरण्यवर्ण’ शुभ तव है नाम स्वामी, अतुल कांतिधारी जिनेश्वर हो नामी ।
प्रभु नाप जाप कर पूजा रचाएँ, पाके सहस्र नाम मुक्ति को पाएँ ॥861॥

ॐ ह्रीं श्री हिरण्यवर्णाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

स्वर्ण छविधारी ‘स्वर्णाभ’ गाए, सुर नर यति सब पूजा रचाए ।
प्रभु नाप जाप कर पूजा रचाएँ, पाके सहस्र नाम मुक्ति को पाएँ ॥862॥

ॐ ह्रीं श्री स्वर्णाभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘शांतकुंभनिभप्रभ’ हैं शांतिधारी, प्रभु हैं निजातम के ब्रह्माविहारी ।
प्रभु नाप जाप कर पूजा रचाएँ, पाके सहस्र नाम मुक्ति को पाएँ ॥863॥

ॐ ह्रीं श्री शांतकुंभनिभप्रभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘द्युम्नाभ’ तुमको कहते हैं प्राणी, ॐकार मयी श्रेष्ठ है प्रभु की वाणी ।
प्रभु नाप जाप कर पूजा रचाएँ, पाके सहस्र नाम मुक्ति को पाएँ ॥864॥

ॐ ह्रीं श्री द्युम्नाभास नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु ‘जातरूपाभ’ कहलाए स्वामी, करुणानिधि हैं जिन अन्तर्यामी ।
प्रभु नाप जाप कर पूजा रचाएँ, पाके सहस्र नाम मुक्ति को पाएँ ॥865॥

ॐ ह्रीं श्री जातरूपाभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे ‘तप्तजांबूनदद्युति’ के धारी, महिमा तुम्हारी है इस जग से न्यारी ।
प्रभु नाप जाप कर पूजा रचाएँ, पाके सहस्र नाम मुक्ति को पाएँ ॥866॥

ॐ ह्रीं श्री तप्तजांबूनदद्युतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘सधौतकलधौतश्री’ हे जिनेन्द्रा, तुम्हारे चरण पूजते हैं शतेन्द्रा ।
प्रभु नाप जाप कर पूजा रचाएँ, पाके सहस्र नाम मुक्ति को पाएँ ॥867॥

ॐ ह्रीं श्री सुधौतकलधौतश्रिये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे ‘प्रदीप्त’ दीप्ति मान विशद ज्ञानधारी, सर्वलोक में महान श्रेष्ठ अविकारी ।
प्रभु नाप जाप कर पूजा रचाएँ, पाके सहस्र नाम मुक्ति को पाएँ ॥868॥

ॐ ह्रीं श्री प्रदीप्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे जिनेन्द्र ‘हाटकद्युति’ सूर्य को लजाते, दीप्तिमान हेमाम आप जिन कहाते ।
प्रभु नाप जाप कर पूजा रचाएँ, पाके सहस्र नाम मुक्ति को पाएँ ॥869॥

ॐ ह्रीं श्री हाटकद्युतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘शिष्टेष्ट’ आप जिन लोक में कहाते, वन्दना को संत भी भाव सहित आते ।
प्रभु नाप जाप कर पूजा रचाएँ, पाके सहस्र नाम मुक्ति को पाएँ ॥870॥

ॐ ह्रीं श्री शिष्टेष्टाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पुष्टी के कर्ता जिन ‘पुष्टिद’ हो स्वामी, पुष्टि करो नाथ हे अन्तर्यामी ! ।
प्रभु नाप जाप कर पूजा रचाएँ, पाके सहस्र नाम मुक्ति को पाएँ ॥871॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्टिदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पुष्टी करो ‘पुष्ट’ होके हमारी, करुणा करो नाथ करुणा के धारी ॥
प्रभु नाप जाप कर पूजा रचाएँ, पाके सहस्र नाम मुक्ति को पाएँ ॥872॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्टाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु आप ‘स्पष्ट’ सब द्रव्य जानी, भव्यों के कल्याण हेतु बखानी ॥
प्रभु नाप जाप कर पूजा रचाएँ, पाके सहस्र नाम मुक्ति को पाएँ ॥873॥

ॐ ह्रीं श्री स्पष्टाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु ‘स्पष्टाक्षर’ तुम्हें जानते हैं, हितकारी वाणी सभी मानते हैं ॥
प्रभु नाप जाप कर पूजा रचाएँ, पाके सहस्र नाम मुक्ति को पाएँ ॥874॥

ॐ ह्रीं श्री स्पष्टाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तुम्ही ‘क्षम’ हो भव नाश करने में स्वामी, अतएव कहलाए तुम मोक्षगामी ॥
प्रभु नाप जाप कर पूजा रचाएँ, पाके सहस्र नाम मुक्ति को पाएँ ॥875॥

ॐ ह्रीं श्री क्षमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘शत्रुघ्न’ तुमने सर्व शत्रु हराये, कर्मों की सेना भगाने हम आए ॥
प्रभु नाप जाप कर पूजा रचाएँ, पाके सहस्र नाम मुक्ति को पाएँ ॥876॥

ॐ ह्रीं श्री शत्रुघ्नाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु ‘अप्रतिघ’ हो न शत्रु तब कोई, महिमा प्रभु तुमने अतिशय संजोई ॥
प्रभु नाप जाप कर पूजा रचाएँ, पाके सहस्र नाम मुक्ति को पाएँ ॥877॥

ॐ ह्रीं श्री अप्रतिघाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे ‘अमोघ’ तुमने सफलता को पाया, संयम को धारणकर जीवन सजाया ॥
प्रभु नाप जाप कर पूजा रचाएँ, पाके सहस्र नाम मुक्ति को पाएँ ॥878॥

ॐ ह्रीं श्री अमोघाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु तुम 'प्रशास्ता' हो जग में निराले, सर्वोत्तम उपदेश तुम देने वाले ॥
प्रभु नाप जाप कर पूजा रचाएँ, पाके सहस्र नाम मुक्ति को पाएँ ॥879॥
ॐ ह्रीं श्री प्रशास्त्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कहे 'शासिता' आप रक्षा के धारी, भक्तों के हो आप कल्याणकारी ॥
प्रभु नाप जाप कर पूजा रचाएँ, पाके सहस्र नाम मुक्ति को पाएँ ॥880॥
ॐ ह्रीं श्री शासित्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(सोरठा)

'स्वभू' आपको देव, जाने जग के जीव सब ।
वन्दू चरण सदैव, नाम मंत्र को आपके ॥881॥
ॐ ह्रीं श्री स्वभुवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'शांतिनिष्ठ' जिनदेव, शांति के दाता कहे ।
वन्दू चरण सदैव, नाम मंत्र को आपके ॥882॥
ॐ ह्रीं श्री शांतिनिष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'मुनिज्येष्ठ' हे नाथ, सब मुनियों में बड़े हो ।
चरण झुकाकर माथ, नाम मंत्र को पूजते ॥883॥
ॐ ह्रीं श्री मुनिज्येष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'शिवताति' हे नाथ !, शिव के कर्ता आप हो ।
वन्दू चरण सदैव, नाम मंत्र को आपके ॥884॥
ॐ ह्रीं श्री शिवतातये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'शिवपद' हे भगवान ! शिव पद हमको दीजिए ।
करते तव गुणगान, भक्ति भाव से चरण में ॥885॥
ॐ ह्रीं श्री शिवप्रदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'शांतिद' आप सदैव, जग जीवों को दे रहे ।
वन्दू चरण सदैव, नाम मंत्र को आपके ॥886॥
ॐ ह्रीं श्री शांतिदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'शांतिकृत' हे नाथ !, शांति इस जग में करो ।
चरण झुकाकर माथ, नाम मंत्र को पूजते ॥887॥
ॐ ह्रीं श्री शांतिकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'शांति' दाता नाथ, त्रिभुवन में शांति करो ।
चरण झुकाकर माथ, नाम मंत्र को पूजते ॥888॥
ॐ ह्रीं श्री शांतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'कांतिमान' जिनदेव, कांति के धारी अहा ।
वन्दू चरण सदैव, तव चरणों में विनत हो ॥889॥
ॐ ह्रीं श्री कांतिमते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'कांतिप्रद' भगवान, पूर्ण मनोरथ कीजिए ।
करें विशद गुणगान, नाम मंत्र को आपके ॥890॥
ॐ ह्रीं श्री कांतिमते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'श्रेयोनिधि' गुणखान, श्रेय हमें प्रभु दीजिए ।
करें विशद गुणगान, तव चरणों में विनत हो ॥891॥
ॐ ह्रीं श्री श्रेयोनिधये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'अधिष्ठान' जिनदेव, जैन धर्म के मूल हो ।
वन्दू चरण सदैव, नाम मंत्र को आपके ॥892॥
ॐ ह्रीं श्री अधिष्ठानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'अप्रतिष्ठ' हे देव !, पूजित फिर भी लोक में ।
वन्दू चरण सदैव, नाम मंत्र को आपके ॥893॥
ॐ ह्रीं श्री अप्रतिष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

रहे 'प्रतिष्ठित' आप, तीन लोक में हर समय ।
करें नाम का जाप, शिव सुख पाने के लिए ॥894॥
ॐ ह्रीं श्री प्रतिष्ठिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘सुस्थिर’ आप सदैव, रहते निज स्वभाव में ।

वन्दू चरण सदैव, नाम मंत्र को आपके ॥895॥

ॐ ह्रीं श्री सुस्थिराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘स्थावर’ हे जिनराज !, स्थित रहते हर समय ।

यह जग करता नाज, श्री जिनके शुभ नाम पर ॥896॥

ॐ ह्रीं श्री स्थावराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘स्थाणु’ हे जिनदेव !, अचल अटल अविकार हो ।

वन्दू चरण सदैव, नाम मंत्र को आपके ॥897॥

ॐ ह्रीं श्री स्थाणवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘प्रथीयान्’ तव नाम, सर्वलोक में पूज्य हो ।

बारम्बार प्रणाम, विशद गुणों के कोष तुम ॥898॥

ॐ ह्रीं श्री प्रथीयसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘प्रथित’ मिले विश्राम, भव सागर में गमन से ।

बारम्बार प्रणाम, नाम मंत्र तव पूजते ॥899॥

ॐ ह्रीं श्री प्रथिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘पृथु’ आपका धाम, तीन लोक में श्रेष्ठ है ।

बारम्बार प्रणाम, पूजा करते भाव से ॥900॥

ॐ ह्रीं श्री पृथवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

महार्घ्य

प्रभु त्रिकालदर्शी आदिकर, पृथु, नाम तक सौ यह नाम ।

श्रेष्ठ सुसुन्दर विस्मयकारी, शोभनीक अतिशय अभिराम ॥

चिन्तन मनन ध्यान कर प्राणी, कर देते कर्मों का क्षय ।

सहस्रनाम में वर्णित अनुपम, इन नामों की जय-जय-जय ॥9॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिकालदर्श्यादिशतनामेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

दशम वलयः

दोहा- दिग्वासादि नाम सौ का, करते हम गुणगान ।

पुष्पाञ्जलि करते विशद, पाने पद निर्वाण ॥

(इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(छन्द-लोलतरंग)

‘दिग्वासा’ दिश ही अम्बर है, धारें ऐसी मुद्रा स्वामी ।

नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ति पथगामी ॥901॥

ॐ ह्रीं श्री दिग्वाससे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘वातरशन’ तव नाम जिनेश, कहाते हो प्रभु अन्तर्यामी ।

नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ति पथगामी ॥902॥

ॐ ह्रीं श्री वातरशनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘निर्ग्रथेश’ जिनेश अशेष, परिग्रह तुमने छोड़ा स्वामी ।

नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ति पथगामी ॥903॥

ॐ ह्रीं श्री निर्ग्रथेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

आप ‘दिगम्बर’ हो जिनराज, दिशाएँ अम्बर हैं तव नामी ।

नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ति पथगामी ॥904॥

ॐ ह्रीं श्री दिगम्बराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘निष्किंचन’ किञ्चित् परिग्रह से, हीन कहे हैं अन्तर्यामी ।

नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ति पथगामी ॥905॥

ॐ ह्रीं श्री निष्किंचनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘निराशंस’ इच्छा के त्यागी, कहलाए हैं मेरे स्वामी ।

नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ति पथगामी ॥906॥

ॐ ह्रीं श्री निराशंसाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘ज्ञानचक्षु’ हैं केवल ज्ञानी, आप हुए हो शिवपुर गामी ।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ति पथगामी ॥907॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानचक्षुषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

नाथ ‘अमोमुह’ मोह विनाशी, हुए लोक में अन्तर्यामी ।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ति पथगामी ॥908॥

ॐ ह्रीं श्री अमोमुहाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘तेजोराशि’ तेज पुंज के, धारी हो हे जिनवर स्वामी ! ।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ति पथगामी ॥909॥

ॐ ह्रीं श्री तेजोराशये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘अनंतौज’ ओजस्वी अनुपम, आप हुए हो जग में नामी ।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ति पथगामी ॥910॥

ॐ ह्रीं श्री अनंतौजसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘ज्ञानाब्धि’ हे ज्ञान सरोवर, आप कहाए अन्तर्यामी ।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ति पथगामी ॥911॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानाब्ध्ये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु ‘शीलसागर’ हे स्वामी !, आप हुए हो शील के धारी ।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ति पथगामी ॥912॥

ॐ ह्रीं श्री शीलसागराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘तेजोमय’ शुभ तेज पुंज हैं, अतिशय तेज रूप के धारी ।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ति पथगामी ॥913॥

ॐ ह्रीं श्री तेजोमयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘अमितज्योति’ हे ज्योति स्वरूपी, पावन केवल ज्ञान के धारी ।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ति पथगामी ॥914॥

ॐ ह्रीं श्री अमितज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘ज्योतिर्मूर्ति’ ज्योतिर्मय अनुपम, मंगलमय पावन अविकारी ।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ति पथगामी ॥915॥

ॐ ह्रीं श्री ज्योतिर्मूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

नाथ ‘तमोपह’ आप कहाए, मोहारि के नाशनकारी ।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ति पथगामी ॥916॥

ॐ ह्रीं श्री तमोपहाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु ‘जगच्चूडामणि’ अनुपम, तीन लोक में मंगलकारी ।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ति पथगामी ॥917॥

ॐ ह्रीं श्री जगच्चूडामणये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दीप्ति आप ‘दैदीप्यात्मा’ हो, अतिशय प्रभु दीप्ति के धारी ।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ति पथगामी ॥918॥

ॐ ह्रीं श्री दीप्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे ‘शंवान्’ सौख्य शांतिमय, पावन हो समता के धारी ।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ति पथगामी ॥919॥

ॐ ह्रीं श्री शंवते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘विघ्नविनायक’ आप प्रभु हो, इस जग में विघ्नों के नाशी ।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ति पथगामी ॥920॥

ॐ ह्रीं श्री विघ्नविनायकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(चौपाई)

प्रभु ‘कलिघ्न’ आप कहलाए, सब विघ्नों को दूर भगाए ।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते ॥921॥

ॐ ह्रीं श्री कलिघ्नाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘कर्मशत्रुघ्न’ नाम के धारी, चऊ कर्मों के नाशनकारी ।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते ॥922॥

ॐ ह्रीं श्री कर्मशत्रुघ्नाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘लोकालोकप्रकाशक’ ज्ञानी, वाणी तव जग की कल्याणी ।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते ॥923॥

ॐ ह्रीं श्री लोकालोकप्रकाशकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कहे ‘अनिद्रालु’ जिन स्वामी, मोहक्षयी मुक्ति पथगामी ।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते ॥924॥

ॐ ह्रीं श्री अनिद्रालवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु ‘अतन्द्रालु’ कहलाए, आलस तद्रा पर जय पाए ।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते ॥925॥

ॐ ह्रीं श्री अतन्द्रालवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘जागरूक’ तुम जाग्रत रहते, हर उपसर्ग परीषह सहते ।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते ॥926॥

ॐ ह्रीं श्री जागरूकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु ‘प्रमामय’ ज्ञान के धारी, गुण अनन्त के हो अधिकारी ।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते ॥927॥

ॐ ह्रीं श्री प्रमामयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘लक्ष्मीपति’ आप हो स्वामी, अनन्त चतुष्टय पाये नामी ।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते ॥928॥

ॐ ह्रीं श्री लक्ष्मीपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘जगज्ज्योति’ हो मंगलकारी, अतिशय ज्ञान ज्योति के धारी ।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते ॥929॥

ॐ ह्रीं श्री जगज्ज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘धर्मराज’ है नाम तुम्हारा, भवि जीवों को तारण हारा ।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते ॥930॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मराजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

नाथ ‘प्रजाहित’ करने वाले, जग जीवों के हो रखवाले ।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते ॥931॥

ॐ ह्रीं श्री प्रजाहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

आप ‘मुमुक्षु’ भी कहलाए, मोक्ष की इच्छा भी न पाए ।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते ॥932॥

ॐ ह्रीं श्री मुमुक्षवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘बन्धमोक्षज्ञा’ प्रभु कहलाए, बन्ध मोक्ष की विधि बताए ।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते ॥933॥

ॐ ह्रीं श्री बन्धमोक्षज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे ‘जिताक्ष’ इन्द्रिय मन जेता, मोहादि वसु कर्म विजेता ।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते ॥934॥

ॐ ह्रीं श्री जिताक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘जितमन्मथ’ हे नाथ कहाए, काम अरि को मार भगाए ।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते ॥935॥

ॐ ह्रीं श्री जितमन्मथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे ‘प्रशान्तरसशैलुष’ स्वामी, शांति मार्ग के हे अनुगामी ! ।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते ॥936॥

ॐ ह्रीं श्री प्रशान्तरसशैलूषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘भव्यपेटकनायक’ तुम स्वामी, करुणानिधि हे अन्तर्यामी ! ।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते ॥937॥

ॐ ह्रीं श्री भव्यपेटकनायकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

आप ‘मूलकर्ता’ कहलाए, आदि धर्म प्रवर्तक गाए ।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते ॥938॥

ॐ ह्रीं श्री मूलकर्त्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

‘अखिलज्योति’ तुमने प्रगटाई, निधिज्ञान की तुमने पाई।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते ॥939॥
ॐ ह्रीं श्री अखिलज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे ‘मलघ्न’ मलके हो नाशी, धवल अमल आतम के वासी।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते ॥940॥
ॐ ह्रीं श्री मलघ्नाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(तर्ज- हे दीन बन्धु..)

हे नाथ ‘मूलसुकारण’ प्रभु आप कहाए, मुक्ति का मार्ग जग को प्रभु आप दिखाए।
तव नाम मंत्र जाप प्रभु कर्म नशाए, भव सिन्धु पार करने में साथ निभाए ॥941॥
ॐ ह्रीं श्री मूलकारणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे ‘आप्त’ हो सर्वज्ञ वीतराग हितैषी, प्रभु दर्श करे आपका हो भावना वैसी।
तव नाम मंत्र जाप प्रभु कर्म नशाए, भव सिन्धु पार करने में साथ निभाए ॥942॥
ॐ ह्रीं श्री आप्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! आप ‘वागीश्वर’ श्रेष्ठ कहाए, शुभ दिव्य ध्वनि आपकी शिव मार्ग दिखाए।
तव नाम मंत्र जाप प्रभु कर्म नशाए, भव सिन्धु पार करने में साथ निभाए ॥943॥
ॐ ह्रीं श्री वागीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेयान् आप अनुपम ही ‘श्रेय’ जगाए, हम श्रेय पाने हेतु तव द्वार पे आए।
तव नाम मंत्र जाप प्रभु कर्म नशाए, भव सिन्धु पार करने में साथ निभाए ॥944॥
ॐ ह्रीं श्री श्रेयसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे ‘श्रायसोक्तये’ वाणी है श्रेष्ठ आपकी, नाशक रही है लोक में सारे ही पाप की।
तव नाम मंत्र जाप प्रभु कर्म नशाए, भव सिन्धु पार करने में साथ निभाए ॥945॥
ॐ ह्रीं श्री श्रायसोक्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे ‘निरुक्तवाक्’ आपकी वाणी महान है, अनुपम है लोक में जो अतिशय प्रधान है।
तव नाम मंत्र जाप प्रभु कर्म नशाए, भव सिन्धु पार करने में साथ निभाए ॥946॥
ॐ ह्रीं श्री निरुक्तवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! ‘प्रवक्ता’ जिनेश आप कहाए, शुभ देशना जिनेन्द्र आप श्रेष्ठ सुनाए ॥
तव नाम मंत्र जाप प्रभु कर्म नशाए, भव सिन्धु पार करने में साथ निभाए ॥947॥
ॐ ह्रीं श्री प्रवक्त्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! श्रेष्ठ ‘वचसामिश’ आप कहाए, प्रभु दिव्य ध्वनि की अनुपम गंग बहाए ॥
तव नाम मंत्र जाप प्रभु कर्म नशाए, भव सिन्धु पार करने में साथ निभाए ॥948॥
ॐ ह्रीं श्री वचसामीशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! आप ‘मारजिता’ मोह जयी हो, इस लोक में जिनेन्द्र आप कर्म क्षयी हो ॥
तव नाम मंत्र जाप प्रभु कर्म नशाए, भव सिन्धु पार करने में साथ निभाए ॥949॥
ॐ ह्रीं श्री मारजिते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे ‘विश्वभाववित्’ प्रभु श्रेष्ठ कहाए, चरणों में भक्त भक्ति को भाव से आए ॥
तव नाम मंत्र जाप प्रभु कर्म नशाए, भव सिन्धु पार करने में साथ निभाए ॥950॥
ॐ ह्रीं श्री विश्वभावविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सखी छन्द)

हे ‘सुतनु’ श्रेष्ठ तनधारी, व्याधि के नाशन हारी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरु कर्म निर्जरा पायें ॥951॥
ॐ ह्रीं श्री सुतनवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ‘तनुनिर्मुक्त’ कहाए, इस भव से मुक्ति पाए।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरु कर्म निर्जरा पायें ॥952॥
ॐ ह्रीं श्री तनुनिर्मुक्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ‘सुगत’ आप हो स्वामी, हो मुक्ति के अनुगामी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरु कर्म निर्जरा पायें ॥953॥
ॐ ह्रीं श्री सुगताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘हतदुर्नय’ आप कहाए, नय मिथ्या सभी नशाए।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरु कर्म निर्जरा पायें ॥954॥

ॐ ह्रीं श्री हतदुर्नयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे 'श्रीश' आप जिन स्वामी, श्री पति हो अन्तर्यामी ।
तव नाम मंत्र को ध्यायेँ, अरु कर्म निर्जरा पायें ॥955॥

ॐ ह्रीं श्री श्रीशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'श्रीश्रितपादाब्ज' कहाते, सुर चरण आपके ध्याते ।
तव नाम मंत्र को ध्यायेँ, अरु कर्म निर्जरा पायें ॥956॥

ॐ ह्रीं श्री श्रितपादाब्जाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे 'वीतभी' आप निराले, प्रभु अभय दिलाने वाले ।
तव नाम मंत्र को ध्यायेँ, अरु कर्म निर्जरा पायें ॥957॥

ॐ ह्रीं श्री वीतभिये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे 'अभयंकर' हितकारी, प्रभु जन-जन के उपकारी ।
तव नाम मंत्र को ध्यायेँ, अरु कर्म निर्जरा पायें ॥958॥

ॐ ह्रीं श्री अभयंकराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'उत्सन्नदोष' तुम स्वामी, बन गये मोक्ष पथ गामी ।
तव नाम मंत्र को ध्यायेँ, अरु कर्म निर्जरा पायें ॥959॥

ॐ ह्रीं श्री उत्सन्नदोषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'निर्विघ्न' आप कहलाते, प्रभु सारे विघ्न नशाते ।
तव नाम मंत्र को ध्यायेँ, अरु कर्म निर्जरा पायें ॥960॥

ॐ ह्रीं श्री निर्विघ्नाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे 'निश्चल' जिन अविकारी, प्रभु आतम ब्रह्म विहारी ।
तव नाम मंत्र को ध्यायेँ, अरु कर्म निर्जरा पायें ॥961॥

ॐ ह्रीं श्री निश्चलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे 'लोकसुवत्सल' ज्ञानी, हे वीतराग विज्ञानी ।
तव नाम मंत्र को ध्यायेँ, अरु कर्म निर्जरा पायें ॥962॥

ॐ ह्रीं श्री लोकवत्सलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु 'लोकोत्तर' अविनाशी, हे लोक शिखर के वासी ।
तव नाम मंत्र को ध्यायेँ, अरु कर्म निर्जरा पायें ॥963॥

ॐ ह्रीं श्री लोकोत्तराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु 'लोकपति' जिन स्वामी, हे शिवपुर के पथगामी ।
तव नाम मंत्र को ध्यायेँ, अरु कर्म निर्जरा पायें ॥964॥

ॐ ह्रीं श्री लोकपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु 'लोकचक्षु' कहलाए, मुक्ति का मार्ग दिखाए ।
तव नाम मंत्र को ध्यायेँ, अरु कर्म निर्जरा पायें ॥965॥

ॐ ह्रीं श्री लोकचक्षुषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तुम हो 'अपारधी' स्वामी, धी है तव अतिशय नामी ।
तव नाम मंत्र को ध्यायेँ, अरु कर्म निर्जरा पायें ॥966॥

ॐ ह्रीं श्री अपारधिये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु रहे 'धीरधी' ज्ञानी, हैं वीतराग विज्ञानी ।
तव नाम मंत्र को ध्यायेँ, अरु कर्म निर्जरा पायें ॥967॥

ॐ ह्रीं श्री धीरधिये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे 'बुद्धसन्मार्ग' प्रदाता, हे त्रिभुवन के सुखदाता ।
तव नाम मंत्र को ध्यायेँ, अरु कर्म निर्जरा पायें ॥968॥

ॐ ह्रीं श्री बुद्धसन्मार्गाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु 'शुद्ध' बुद्ध अविनाशी, हो निज स्वभाव के नासी ।
तव नाम मंत्र को ध्यायेँ, अरु कर्म निर्जरा पायें ॥969॥

ॐ ह्रीं श्री शुद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(सोरठा)

हे 'सत्यासूनृतवाक्', सत्य वचन धारी प्रभो ।
पाने कर्म विपाक, नाम मंत्र ध्याएँ विशद ॥१७०॥

ॐ ह्रीं श्री सत्यसूनृतवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चरम बुद्धि को प्राप्त, होके 'प्रज्ञापारमित' ।
बने श्रेष्ठ हो आप, नाम मंत्र ध्याऊँ विशद ॥१७१॥

ॐ ह्रीं श्री प्रज्ञापारमिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'प्राज्ञ' कहाए नाथ, सुर गण करते वन्दना ।
चरण झुकाएँ माथ, प्रज्ञा पाने के लिए ॥१७२॥

ॐ ह्रीं श्री प्राज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'यति' विषय विषहीन, स्वात्म निरत रहते सदा ।
रहते निज में लीन, ध्यायें तव हम नाम को ॥१७३॥

ॐ ह्रीं श्री यतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'नियमितेन्द्रिय' हे देव !, जीते इन्द्रियों के विषय ।
ध्याएँ तुम्हें सदैव, मन वच तन तिय योग से ॥१७४॥

ॐ ह्रीं श्री नियमितेन्द्रियाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे 'भदंत' यतिराज, सुर नर यति से पूज्य हो ।
तुम पर जग को नाज, नाम मंत्र ध्याते अहा ॥१७५॥

ॐ ह्रीं श्री भदंताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

रहे 'भद्रकृत' आप, श्रेष्ठ भद्रता धारते ।
करें नाम तव जाप, तव पद पाने के लिए ॥१७६॥

ॐ ह्रीं श्री भद्रकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'भद्र' आपका नाम, है प्रसिद्ध इस लोक में ।
शत्-शत् करें प्रणाम, नाम मंत्र ध्याते सदा ॥१७७॥

ॐ ह्रीं श्री भद्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'कल्पवृक्ष' भगवान, वाञ्छित फल देते सदा ।
करें विशद गुणगान, ध्याते हम तव नाम को ॥१७८॥

ॐ ह्रीं श्री कल्पवृक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'वरप्रद' कहे जिनेश, देते हैं वरदान शुभ ।
ध्याते तुम्हें विशेष, तव पद पाने के लिए ॥१७९॥

ॐ ह्रीं श्री वरप्रदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'समुन्मूलिकर्मरि', कर्मों के नाशी प्रभो !
करके श्रेष्ठ विचार, ध्याते हैं हम आपको ॥१८०॥

ॐ ह्रीं श्री समुन्मूलिकर्मरये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

किए कर्म का नाश, 'कर्मकाष्ठाशुशुक्षणी' ।
करके ज्ञान प्रकाश, शिव पद के धारी बने ॥१८१॥

ॐ ह्रीं श्री कर्मकाष्ठाशुशुक्षणये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे 'कर्मण्य' महान्, सब कर्मों में निपुण तुम ।
करते हम गुणगान, सहस्र नाम का भाव से ॥१८२॥

ॐ ह्रीं श्री कर्मण्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'कर्मठ' आप जिनेन्द्र, सब कार्यों में दक्ष हो ।
पूजें तुम्हें शतेन्द्र, सहस्र नाम के रूप में ॥१८३॥

ॐ ह्रीं श्री कर्मठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'प्रांशु' पाया नाम, सर्व सौख्य दाता कहे ।
करते सभी प्रणाम, नाम मंत्र का ध्यान कर ॥१८४॥

ॐ ह्रीं श्री प्रांशवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पाए हिताहित ज्ञान, 'हेयआदेयवीचक्षणः' ।
जग में रहे प्रधान, विशद ध्यान करते सभी ॥१८५॥

ॐ ह्रीं श्री हेयादेयविचक्षणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पाए शक्ति विशेष, हे 'अनन्तशक्ति' तुम्ही ।

तुमको हे तीर्थेश, ध्याते हैं हम भाव से ॥986॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तशक्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे 'अच्छेद्य' प्रधान, आप स्वयंभू श्रेष्ठतम् ।

वीतराग विज्ञान, तुमको ध्याते हम अहा ॥987॥

ॐ ह्रीं श्री अच्छेद्या नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'त्रिपुरारि' हे नाथ, ज्ञाता तीनों लोक में ।

नाम मंत्र का जाप, करते तीनों योग से ॥988॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिपुरारये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु 'त्रिलोचन' आप, तीन नेत्रधारी रहे ।

नाश किए सब पाप, विशद ज्ञान को प्राप्त कर ॥989॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिलोचनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे 'त्रिनेत्र' भगवान, तीन ज्ञान जन्मत हुए ।

पाए केवल ज्ञान, तुमको ध्याते हम अहा ॥ 990 ॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिनेत्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(पद्धती छन्द)

जिनराज 'त्र्यंबक' कहे आप, प्रभु नाश किए त्रय विधि पाप ।

तव नाम मंत्र हम जपे नाथ, दो मोक्ष मार्ग में प्रभु साथ ॥991॥

ॐ ह्रीं श्री त्र्यंबकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तुम हो 'त्रयक्ष' अतिशय महान्, पाए हो तुम प्रभु ज्ञान भान ।

तव नाम मंत्र हम जपे नाथ, दो मोक्ष मार्ग में प्रभु साथ ॥992॥

ॐ ह्रीं श्री त्रयक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

है 'केवलज्ञानवीक्षण' सुनाम, करता यह जग तुमको प्रणाम ।

तव नाम मंत्र हम जपे नाथ, दो मोक्ष मार्ग में प्रभु साथ ॥993॥

ॐ ह्रीं श्री केवलज्ञानवीक्षणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे 'समंतभद्र' तुम हो महान्, मंगलमय तुम जग में प्रधान ।

तव नाम मंत्र हम जपे नाथ, दो मोक्ष मार्ग में प्रभु साथ ॥994॥

ॐ ह्रीं श्री समंतभद्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे 'शांतारि' हो शांत रूप, तुम शांतिकर जग में अनूप ।

तव नाम मंत्र हम जपे नाथ, दो मोक्ष मार्ग में प्रभु साथ ॥995॥

ॐ ह्रीं श्री 'शांतारये' नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु 'धर्माचार्य' हो धर्मवान, तुम प्रकट किया अतिशय महान् ।

तव नाम मंत्र हम जपे नाथ, दो मोक्ष मार्ग में प्रभु साथ ॥996॥

ॐ ह्रीं श्री धर्माचार्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे 'दयानिधि' हो दयावान, दो नाथ भक्त को दया दान ।

तव नाम मंत्र हम जपे नाथ, दो मोक्ष मार्ग में प्रभु साथ ॥997॥

ॐ ह्रीं श्री दयानिधये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हो प्रभु 'सूक्ष्मदर्शी' विशेष, तुम सूक्ष्म द्रव्य लखते जिनेश ।

तव नाम मंत्र हम जपे नाथ, दो मोक्ष मार्ग में प्रभु साथ ॥998॥

ॐ ह्रीं श्री सूक्ष्मदर्शिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे 'जितानंग' कर्मारि जीत, तुम हुए जगत में श्रेष्ठ मीत ।

तव नाम मंत्र हम जपे नाथ, दो मोक्ष मार्ग में प्रभु साथ ॥999॥

ॐ ह्रीं श्री जितानंगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिनराज 'कृपालु' रहे आप, नाशे हैं जग के सर्व पाप ।

तव नाम मंत्र हम जपे नाथ, दो मोक्ष मार्ग में प्रभु साथ ॥1000॥

ॐ ह्रीं श्री कृपालवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिनदेव 'धर्मदेशक' महान्, जन-जन को देते भेद ज्ञान ।
तव नाम मंत्र हम जपे नाथ, दो मोक्ष मार्ग में प्रभु साथ ॥1001॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मदेशकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे प्रभु 'शुभंयु' आप नाम, पाकर के पाए मोक्ष धाम ।
तव नाम मंत्र हम जपे नाथ, दो मोक्ष मार्ग में प्रभु साथ ॥1002॥

ॐ ह्रीं श्री शुभंयवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'सुखसाद्भुत' हो सुखाधीन, रहते हो निज में ध्यान लीन ।
तव नाम मंत्र हम जपे नाथ, दो मोक्ष मार्ग में प्रभु साथ ॥1003॥

ॐ ह्रीं श्री सुखसाद्भूताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे 'पुण्यराशि' तुम पुण्यवान, होकर पदवी पाई महान् ।
तव नाम मंत्र हम जपे नाथ, दो मोक्ष मार्ग में प्रभु साथ ॥1004॥

ॐ ह्रीं श्री पुण्यराशये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिनराज 'अनामय' हो महान्, हे व्याधि रहित जग में प्रधान ।
तव नाम मंत्र हम जपे नाथ, दो मोक्ष मार्ग में प्रभु साथ ॥1005॥

ॐ ह्रीं श्री अनामयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे धर्मरक्ष प्रभु 'धर्मपाल', नाशा है क्षण में कर्म जाल ।
तव नाम मंत्र हम जपे नाथ, दो मोक्ष मार्ग में प्रभु साथ ॥1006॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मपालाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिनदेव आप हो 'जगत्पाल', हम झुका रहे तव चरण भाल ।
तव नाम मंत्र हम जपे नाथ, दो मोक्ष मार्ग में प्रभु साथ ॥1007॥

ॐ ह्रीं श्री जगत्पालाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा- 'धर्मसाम्राज्यनायक' प्रभो, जग में हुए महान् ।

विशद नाम तव जाप कर, करते हैं गुणगान ॥1008॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मसाम्राज्यनायकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

महार्घ्य

दिग्वासादि को आदिकर, नाम एक सौ आठ महान् ।

नाम मंत्र यह जाप करे कोइ, कोई करता है गुणगान ॥

विशद भाव से अर्चा करके, ध्याता हूँ मैं यह शुभ नाम ।

मोक्ष मार्ग पर बढ़ने हेतु, करता बारम्बार प्रणाम ॥10॥

ॐ ह्रीं श्री दिग्वासादिअष्टोत्तरशतनामैभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

जाप्यह्रद ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐम् अहं श्री जिन सहस्रनामैभ्यो नमः ।

जयमाला

दोहा- जिन गुण पावे सहस्र वसु, मंगलमयी त्रिकाल ।

सहस्रनाम की हम विशद, गाते हैं जयमाल ॥

(चौपाई छन्द)

प्रभु ने कर्म घातिया नाशे, अतिशय केवल ज्ञान प्रकाशे ।

अनन्त चतुष्टय पाये स्वामी, बने मोक्षपथ के अनुगामी ॥

देव वन्दना करने आये, सुन्दर समवशरण बनवाए ।

सहस्र नाम की पूजा कीन्हे, अतिशय ढोक चरण में दीन्हें ॥

गुणानन्त के धारी स्वामी, आप कहाए अन्तर्यामी ।

एक आप हो जगत प्रकाशी, मोह महातम के प्रभु नाशी ॥

ज्ञानादर्श गुणों के धारी, उभय लोक में जिन उपकारी ।

रत्नत्रय को तुमने पाया, तीन रूपता को अपनाया ॥

अनन्त चतुष्टय भी प्रगटाए, चार रूप जिनवर कहलाए ।

बने आप शिवपुर के वासी, पंचम गति के हुए प्रवासी ॥

छह द्रव्यों के हो तुम ज्ञाता, जन-जन के हो प्रभु जी त्राता ।

सप्त नयों को तुमने जाना, सप्त रूप तुमको भी माना ॥

सम्यक्त्वादि गुण वसु गार्ये, प्रभु तुमने वे गुण प्रगटाए।
नव केवल लब्धि के धारी, नव स्वरूप के प्रभु अधिकारी॥
प्रभु की महिमा को हम गाते, पद में सादर शीश झुकाते।
विविध नाम तुमने यह पाये, सार्थक नाम सभी कहलाए॥
इन नामों का अतिशयकारी, है स्तोत्र जगत हितकारी।
भाव सहित इसको जो ध्याते, हृदय कमल में इसे सजाते॥
अक्षय निधियाँ वे पा जाते, स्वयं उसी पदवी को पाते।
मन वच तन हो मंगलकारी, सहस्र नाम की है बलिहारी॥
नित्य पाठ करके शुभकारी, वाणी होती मंगलकारी।
बुद्धिमान वैभव के धारी, प्राणी बनते जग हितकारी॥
मन में उठे भाव यह मेरे, नशें जन्म मरणादि फेरे।
अतः शरण में हम भी आये, भाव पुष्प उर में हम लाए॥
बुद्धिहीन हम हैं अज्ञानी, फिर भी मन में हमने ठानी।
जब तक जीवन रहे हमारा, तब चरणों का रहे सहारा॥
भव-भव तुमको हृदय सजाएँ, जब तक शिव पदवी न पाएँ।
विशद ज्ञान पाकर हे स्वामी !, बने मोक्षपद के अनुगामी॥
अष्ट कर्म मेरे नश जाएँ, अष्ट गुणों की सिद्धि पाएँ।
अर्घ्य चढ़ाते मंगलकारी, होय भावना पूर्ण हमारी॥

दोहा- सहस्र नाम का पाठ कर, अर्घ्य चढ़ाकर साथ।

हृदय सजाकर भाव से, बने श्री के नाथ॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूहेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- सहस्र नाम के पाठ की, महिमा अगम अपार।

अर्चा पूजन ध्यान कर, होवे भव से पार॥

॥ इत्याशीर्वादः ॥ शान्तये शान्तिधारा (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

चालीसा-सहस्रनाम

दोहा- अर्हत्सिद्धाचार्य पद, उपाध्याय जिन संत।
सहस्रनाम जिनराज के, नमूँ अनन्तानन्त॥

(चौपाई छन्द)

है आकाश अनन्तानन्त, जिसका नहीं है कोई अंत।
जिसके मध्य है लोकाकाश, भरा है छह द्रव्यों से खास॥
ऊर्ध्व अधो अरु मध्य प्रधान, तीन लोक कहते भगवान।
मध्य लोक में जम्बू द्वीप, मेरु जम्बू वृक्ष समीप॥
जम्बू द्वीप घातकी खण्ड, पुष्करार्द्ध भी रहा अखण्ड।
भरतैरावत और विदेह, क्षेत्र कर्म भूमि ऐह।
आर्य खण्ड में रहते आर्य, ऐसा कहते जैनाचार्य॥
उत्सर्पण अवसर्पण काल, भरतैरावत रहें त्रिकाल।
दुषमा सुषमा काल विशेष, जिसमें चौबीस बने जिनेश।
जिन विदेह में रहे त्रिकाल, विद्यमान रहते हर हाल॥
जो भी पुण्य कमाय अतीव, उसका फल वह पावे जीव।
भव्य भावना सोलह भाय, जीव वही यह पदवी पाय॥
तीर्थंकर प्रकृति का बंध, जो कषाय करते हैं मंद।
सम्यक् दृष्टि जीव महान, केवली द्विक के पद में आन॥
मिलता है जब कोई निमित्त, भोगों से उठ जाता चित्त।
भव भोगों से होय विरक्त, शुभ भोगों में हो अनुरक्त॥
सत् संयम पाते शुभकार, लेते महाव्रतों को धार।
कर्म निर्जरा करें महान, निज आत्म का करके ध्यान॥
क्षायक श्रेणी को फिर पाय, अपना केवलज्ञान जगाय।
त्रिभुवन चूड़ामणि बन जाय, तीर्थंकर के गुण प्रगटाय॥
क्षायिक नव लब्धि कर प्राप्त, बनते जिन तीर्थंकर आस।

चिन्तित चिंतामणि कहलाय, कल्पतरू फल वांछित दाय॥
 बनते समवशरण के ईश, इन्द्र झुकाते पद में शीश॥
 अनन्त चतुष्टय पाते नाथ, पञ्च कल्याणक भी हों साथ॥
 तीन गति से आते जीव, पुण्य कमाते वहा अतीव॥
 दिव्य देशना सुनके लोग, मुक्ति पथ का पाते योग॥
 भक्ति को आते शत्रु इन्द्र, सुर-नर-पशु आते अहमिन्द्र॥
 परम पिता जगती पति ईश, ऋद्धिधर हे नाथ ! ऋक्षीष॥
 युग दृष्टा प्रभु रहे महान, तीर्थोन्नायक हैं भगवान॥
 वाणी में जैनागम सार, अमृत रस की बहती धार॥
 भक्त आपके आते द्वार, करते हैं निशदिन जयकार॥
 करने से प्रभु का गुणगान, होती है कर्मों की हान॥
 महिमा गाकर के सब देव, हर्षित होते सभी सदैव॥
 हम भी महिमा गाते नाथ, चरणों झुका रहे हैं माथ॥
 विविध नाम से है गुणगान, सहस्रनाम स्रोत महान॥
 सार्थक नाम मयी स्रोत, श्रेष्ठ धर्म का है जो स्रोत॥
 सुख-शांति का है आधार, प्राणी पाते जग उद्धार॥
 सहस्रनाम कहलाए स्रोत, विशद धर्म का है जो स्रोत॥
 श्रीमान् आदि सहस्र नाम, को करते हम सतत् प्रणाम॥
 पाठ किए हो ज्ञान प्रकाश, विशद गुणों का होय विकास॥
 वन्दन करते हम शत्रु बार, पाने भवोदधि से पार॥
 मेरा हो आतम कल्याण, पावें हम भी पद निर्वाण॥

दोहा- चालीसा चालीस दिन, सहस्रनाम का पाठ।
 पढ़ते हैं जो भाव से, होते ऊँचे ठाठ॥
 ऋद्धि-सिद्धि आनन्द हो, शांति मिले अपार॥
 'विशद' ज्ञान पाके मिले, मुक्ति वधू का पार॥

सहस्रनाम की आरती

आज करें हम सहस्रनाम की, आरती मंगलकारी।
 दीप जलाकर लाए घृत के, जिनवर के दरबार.. हो जिनवर ...
 हम सब उतारे मंगल आरती..

सहस्रनाम के धारी जिनवर, सहस्र गुणों को पाते।
 एक हजार आठ गुणधारी, तीर्थकर कहलाते॥
 हो जिनवर... ॥1॥

श्री जिनेन्द्र के तन में नौ सौ, व्यंजन विस्मयकारी।
 सुगुण एक सौ आठ जिनेश्वर, पाते अतिशयकारी॥
 हो जिनवर... ॥2॥

भूत भविष्यत वर्तमान के, जिन इसके अधिकारी।
 अनन्त चतुष्टय के धारी जिन, होते मंगलकारी॥
 हो जिनवर... ॥3॥

सार्थक नाम प्राप्त करते हैं, तीर्थकर अविकारी।
 अनुक्रम से बन जाते हैं जो, शिवपद के अधिकारी॥
 हो जिनवर... ॥4॥

सहस्रनाम की पूजा अर्चा, करने को हम आए।
 विशद जगे सौभाग्य हमारे, चरण-शरण को पाए॥
 हो जिनवर... ॥5॥

प्रशस्ति

लोकालोक अनंत है, नहीं है जिसका अन्त ।
चिन्तन करते जीव सब, जो ज्ञानी गुणवन्त ॥
ऊर्ध्व अधो अरु मध्य, यह लोक बताए तीन ।
मध्यलोक में नर-पशु, पृथ्वी के आधीन ॥
मध्यलोक के मध्य में, जम्बूद्वीप महान ।
मध्य सुमेरु श्रेष्ठ है, अनुपम स्वर्ण समान ॥
भरत क्षेत्र दक्षिण दिशा, में जानो शुभकार ।
छः खण्डों में बटा शुभ, जो है धनुषाकार ॥
ऐरावत उत्तर दिशा, भरत देश समान ।
पूरब पश्चिम दिशा में, हैं विदेह स्थान ॥
कर्म भूमियाँ तीन यह, जानो मंगलकार ।
द्वीप घातकी खण्ड अरु, पुष्कर में मनहार ॥
तीर्थकर होते हैं जहाँ, पन्द्रह ये स्थान ।
कर्म भूमियों के रहे, मंगलमयी महान ॥
सहस्र आठ प्रभु के रहे, पावन यह शुभ नाम ।
पढ़कर अर्चा कर सभी, करते विशद प्रणाम ॥
दो हजार नौ का रहा, पावन वर्षा योग ।
जिला भीलवाड़ा नगर, में पाया संयोग ॥
सहस्रनाम का यह लिखा, लघुत्तम श्रेष्ठ विधान ।
इसी बहाने जिन प्रभु, का कीन्हा गुणगान ॥
लघु धी से विशद लिखा, आगम के अनुसार ।
क्षमा करो 'धी' मान सब, क्षमा का दो उपहार ॥

प.पू. 108 आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की पूजन

पुण्य उदय से हे ! गुरुवर, दर्शन तेरे मिल पाते हैं ।
श्री गुरुवर के दर्शन करके, हृदय कमल खिल जाते हैं ॥
गुरु आराध्य हम आराधक, करते उर से अभिवादन ।
मम हृदय कमल में आ तिष्ठो, गुरु करते हैं हम आह्वान ॥

ॐ ह्रीं १८ आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवैष्ट इति आह्वानन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः
ठः स्थापनम् अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम् ॥

सांसारिक भोगों में फँसकर, ये जीवन वृथा गंवाया है ।
रागद्वेष की वैतरणी से, अब तक पार न पाया है ॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, निर्मल जल हम लाए हैं ।
भव तापों का नाश करो, भव बंध काटने आये हैं ॥

ॐ ह्रीं १८ आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

क्रोध रूप अग्नि से अब तक, कष्ट बहुत ही पाये हैं ।
कष्टों से छुटकारा पाने, गुरु चरणों में आये हैं ॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, चंदन घिसकर लाये हैं ।
संसार ताप का नाश करो, भव बंध नशाने आये हैं ॥

ॐ ह्रीं १८ आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विध्वंशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

चारों गतियों में अनादि से, बार-बार भटकाये हैं ।
अक्षय निधि को भूल रहे थे, उसको पाने आये हैं ॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अक्षय अक्षत लाये हैं ।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम गुरु चरणों में आये हैं ॥

ॐ ह्रीं १८ आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

काम बाण की महावेदना, सबको बहुत सताती है ।
तृष्णा जितनी शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती है ॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, पुष्प सुगंधित लाये हैं ।
काम बाण विध्वंश होय गुरु, पुष्प चढ़ाने आये हैं ॥

ॐ ह्रीं १८ आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

काल अनादि से हे गुरुवर ! क्षुधा से बहुत सताये हैं।
खाये बहु मिष्ठान जरा भी, तृप्त नहीं हो पाये हैं।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, नैवेद्य सुसुन्दर लाये हैं।
क्षुधा शांत कर दो गुरु भव की ! क्षुधा मेटने आये हैं।

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह तिमिर में फंसकर हमने, निज स्वरूप न पहिचाना।
विषय कषायों में रत रहकर, अंत रहा बस पछताना।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, दीप जलाकर लाये हैं।
मोह अंध का नाश करो, मम दीप जलाने आये हैं।

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अशुभ कर्म ने घेरा हमको, अब तक ऐसा माना था।
पाप कर्म तज पुण्य कर्म को, चाह रहा अपनाना था।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, धूप जलाने आये हैं।
आठों कर्म नशाने हेतु, गुरु चरणों में आये हैं।

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पिस्ता अरु बादाम सुपाड़ी, इत्यादि फल लाये हैं।
पूजन का फल प्राप्त हमें हो, तुमसा बनने आये हैं।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, भाँति-भाँति फल लाये हैं।
मुक्ति वधु की इच्छा करके, गुरु चरणों में आये हैं।

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर ! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैं।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ्य समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैं।

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- विशद सिंधु गुरुवर मेरे, वंदन करूँ त्रिकाल।
मन-वन-तन से गुरु की, करते हैं जयमालङ्क

गुरुवर के गुण गाने को, अर्पित है जीवन के क्षण-क्षण।
श्रद्धा सुमन समर्पित हैं, हर्षायें धरती के कण-कण।
छतरपुर के कुपी नगर में, गूँज उठी शहनाई थी।
श्री नाथूराम के घर में अनुपम, बजने लगी बधाई थी।
बचपन में चंचल बालक के, शुभादर्श यूँ उमड़ पड़े।
ब्रह्मचर्य व्रत पाने हेतु, अपने घर से निकल पड़े।
आठ फरवरी सन् छियानवे को, गुरुवर से संयम पाया।
मोक्ष ज्ञान अन्तर में जागा, मन मयूर अति हर्षाया।
पद आचार्य प्रतिष्ठा का शुभ, दो हजार सन् पाँच रहा।
तेरह फरवरी बंसत पंचमी, बने गुरु आचार्य अहा।
तुम हो कुंद-कुंद के कुन्दन, सारा जग कुन्दन करते।
निकल पड़े बस इसलिए, भवि जीवों की जड़ता हरेते।
मंद मधुर मुस्कान तुम्हारे, चेहरे पर बिखरी रहती।
तव वाणी अनुपम न्यारी है, करुणा की शुभ धारा बहती है।
तुममें कोई मोहक मंत्र भरा, या कोई जादू टोना है।
है वेश दिगम्बर मनमोहक अरु, अतिशय रूप सलौना है।
हैं शब्द नहीं गुण गाने को, गाना भी मेरा अन्जाना।
हम पूजन स्तुति क्या जाने, बस गुरु भक्ति में रम जाना।
गुरु तुम्हें छोड़ न जाएँ कहीं, मन में ये फिर-फिरकर आता।
हम रें चरण की शरण यहीं, मिल जाये इस जग की साता।
सुख साता को पाकर समता से, सारी ममता का त्याग करें।
श्री देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, मन-वच-तन अनुराग करें।
गुरु गुण गाएँ गुण को पाने, औ सर्वदोष का नाश करें।
हम विशद ज्ञान को प्राप्त करें, औ सिद्ध शिला पर वास करें।

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु की महिमा अगम है, कौन करे गुणगान।
मंद बुद्धि के बाल हम, कैसे करें बखान।

इत्याशीर्वादः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज:- माई री माई मुंडेर पर तेरे बोल रहा कागा.....)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारे, आरति मंगल गावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे ॥

गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता ॥
सत्य अहिंसा महाव्रती की.....2, महिमा कहीं न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे ॥

गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया ॥
जग की माया को लखकर के.....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे ॥

गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धार।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा ॥
गुरु की भक्ति करने वाला.....2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे ॥

गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे ॥
आशीर्वाद हमें दो स्वामी.....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे ॥

गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के... जय...जय ॥

रचयिता : श्रीमती इन्दुमती गुप्ता, श्योपुर

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज द्वारा रचित साहित्य एवं विधान सूची

- | | |
|---------------------------------------|---|
| 1. पंच जाप्य | 31. चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभु विधान |
| 2. जिन गुरु भक्ति संग्रह | 32. ऋद्धि-सिद्धी प्रदायक श्री पद्मप्रभु विधान |
| 3. धर्म की दस लहरें | 33. सर्व मंगलदायक श्री नेमिनाथ पूजन विधान |
| 4. विराग बंदन | 34. विघ्न विनाशक श्री महावीर विधान |
| 5. बिन खिले मुरझा गये | 35. शनि अरिष्ट ग्रह निवारक |
| 6. जिंदगी क्या है ? | श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान |
| 7. धर्म प्रवाह | 36. कर्मजयी 1008 श्री पंचबालयति विधान |
| 8. भक्ति के फूल | 37. सर्व सिद्धी प्रदायक श्री भक्तामर महामण्डल |
| 9. विशद श्रमणचर्या (संकलित) | विधान |
| 10. विशद पंचागम संग्रह-संकलित | 38. श्री पंचपरमेष्ठी विधान |
| 11. रत्नकरण्ड श्रावकाचार चौपाई अनुवाद | 39. श्री तीर्थकर निर्वाण सम्पेदशिवर विधान |
| 12. इष्टोपदेश चौपाई अनुवाद | 40. श्री श्रुत स्कंध विधान |
| 13. द्रव्य संग्रह चौपाई अनुवाद | 41. श्री तत्त्वार्थ सूत्र मण्डल विधान |
| 14. लघु द्रव्य संग्रह चौपाई अनुवाद | 42. श्री परम शांति प्रदायक शान्तिनाथ विधान |
| 15. समाधि तंत्र चौपाई अनुवाद | 43. परम पुण्डरीक श्री पुष्पदन्त विधान |
| 16. सुभाषित रत्नावली पद्यानुवाद | 44. वाग्ज्योति स्वरूप वासुपूज्य विधान |
| 17. संस्कार विज्ञान | 45. श्री याग मण्डल विधान |
| 18. विशद स्तोत्र संग्रह | 46. श्री जिनबिम्ब पञ्च कल्याणक विधान |
| 19. भगवती आराधना, संकलित | 47. श्री त्रिकालवर्ती तीर्थकर विधान |
| 20. जरा सोचो तो ! | 48. विशद पञ्च विधान संग्रह |
| 21. विशद भक्ति पीयूष पद्यानुवाद | 49. कल्याणकारी कल्याण मंदिर विधान |
| 22. चिंतन सरोवर भाग-1, 2 | 50. विशद ज्ञान ज्योति (पत्रिका) |
| 23. जीवन की मनः स्थितियाँ | 51. विशद सुमतिनाथ विधान |
| 24. आराध्य अर्चना, संकलित | 52. विशद संभवनाथ विधान |
| 25. मूक उपदेश कहानी संग्रह | 53. विशद प्रवचन पर्व |
| 26. विशद मुक्तावली (मुक्तक) | 54. विशद लघु समवशरण विधान |
| 27. संगीत प्रसून भाग-1, 2 | 55. विशद सहस्रनाम विधान |
| 28. श्री विशद नवदेवता विधान | 56. विशद नंदीश्वर विधान |
| 29. श्री वृहद् नवग्रह शांति विधान | 57. विशद महामृत्युञ्जय विधान |
| 30. श्री विघ्नहरण पार्श्वनाथ विधान | 58. विशद सर्वदोष प्रायश्चित्त विधान |